प्राप्त स्थान— विश्व मंगल प्रकाशन महिद्र

मानद मन्यो , श्री रतिलाल ग्रमृतलाल (वकील) श्री जयन्तीलाल मिगालाल णाह

C/o शाह रितलाल पुनमचन्द

हि. बाजार में हि. वाजार में मु पो वाटण (व गु) ह्हामा म्हेमाना 👫 र

मृज्य : दो रुपये

त्रयमा वृत्ति ६००० ति स २०२५ भिराम २४२५ પ્ પાઠ સુપ્રસિદ્ધ વક્તા, પ્રશાંતમૃર્તિ, પંન્યાગજ મહાગજ શ્રી કનકવિજયજ ગણિવર



करमा कि. मी. प्रकार के जीवा कि से प्रवेश जीवृत्रकारमा कि. से उत्तर

पुरो वचन

विस्व मगल प्रकाशन मन्दिर की ओर ने प्रगत्त प्रमाक को प्रशासिन करन हुए हुमें अस्तान हुएं को अनुमृति हो रही है पूरवराद स्वसिद्ध बाता, ब्रह्मान्त मृति पन्छासत्ती म श्री कनकविजयकी गणिवर भी अपने विषय समुदाय सहित जब रतजाम में चातुमीन स्थित चे तद प्रशीवराज भी पर्वण पद की भागधना के परित्र उद्देश्य से एकतिन रण् भीतावनी है गमधा भी पन्यासभी मा ने सारग्वित प्रवत्तर दिवे थे। पर्वेगण पर्व की भाराधना करने के इन्ह्र हम्म ग्रासपान पा भी मार्गदर्शन मिल तक इस हेतु ने उन मननीय पदलनी पा गारभूत जबतरण एयम् मामान्य प्रिचन श्री वनवीत्राचना मत्रवामा 'स्वामनार्थ' में तिया है। बिन्डतली ने निष्ठाउपीर मृत्यस्ति। मे सम्भावत क्या है। पंतासनी म धी के पति े उनका चरित-भाषमा, निष्ण मुप्तं समस्यो स्ता प्रणसनीय है। पुरवपाद पुरवातन्ते म के भाषी को दश गुरुदर राज में प्रस्तुत म रन क रामात प्रधान के लिए हम प्राप्तकारी जो हाता समुदेर कुर सम्बद्धिक जार्ग प्राप्त कर्म है ।

[4]

'मपत्त्रता ना सोपान' मगत माय्री अत्रीत सङकायमाला, दर्गनभवित मुखा, दर्गन माधुरी, दर्गन स्वाध्याय मुखा अदि ना प्रकाशन हो रहा है। इन प्रयत्ननों में बिंद प्रयत्ननवार के ष्ट्राध्य के विरुद्ध या जैन सिद्धांत क विरुद्ध कोई बान हो तो नगरा रिपे हम मिन्छामि द्वारूटम् देते हैं।

इन ५यंत्रण पर्वे के प्रक्षत्रनो का बालन मनन परिलीतन कर सभी मुम्ध धर्मरां । भव्यतीव सारापना क अप पर पन फर जारम मन्याण के रिष् उद्या हो एकी मगल सामजा कारम है।

41774 খানিবা সূ मा ५०%

(1/2r र्रतिलाल असुतालाल चकील चाह नयहितलाल मणिलाल

पानद म औ

वित्र मनल प्रमाणन महिला

परम प्रधानन प्रभावक व्याग्यान-वाद्यावि जानाये देव श्री विजय रामचन्द्र मूरीप्रवरको म. के लिख रत्नो में पूर पत्यामणो म. या जवना विशिष्ट स्थान है । जयनी विद्वार, रेल्यन एवं प्रवृत्य की विल्लाण प्रतिमा और प्रथमन भाव में जान-वर्णन-यारिय की जारायना प्रारा आप जन-जन के मन नग जाम-कागरण का नदेश पहुँचा रहे है।

रालाम नग क प्रत्यार घाष्ट्र भरे चतुन्य का रदिशार गार प्रदात मन्द्रादिशित क्षानामेंदेव अंग्मेट दिवस प्रम सूरोधनरण म की आजा में पत्यामना महाराह मा का स २०२२ या नतुमीत रतलाम नगर में हुआ। वर्षी तम की सदस्या चालू होते के बादपूर पीटमणां की भीवन गर्भी की सदस्य वासी पूल्, सर्वाम २०० मीत का चया बिहार वनके रियासण म जा रक्षाम सगर म आणाल प्रस ३ की प्राप प्रधानण मूआ। श्री गण रयनाम ने मायका भाग रामाण स्वान नेहर रिया। चीत संवत्त की मायका प्रमाणना हुई।

पुत्रम प्रांसरी महाराज के स्वायपन न बहासम स्वा में राभूतपुत्रं के तस और उत्पाह ना बालादरण निवित्र हुए। र प्रांत स्वरूप सामुम्बा के स्वरूप निवित्र प्रशाप में तियों। स्वर्ति में स्वार्थक रामृति का स्वरूप हुन ।

पूर्व मनाराज हो की जीतिकार वार्त्त के रक्ताम समय की राष्ट्रितित जनता तारही यह हा, यस पहेंच्य से प्रति स्वताह महारह र पान न सहस्ताहर यसवाहर संध्यात्रक किया गया। पू पन्यामजा म की वाणी को बहुजन हितारी और मर्वोगयोगी बनाने हेन्द्र उमे निषिबद्ध और मम्मादित करवाया गया। प्रवचनों को निषिबद्ध करने और सम्मादित करने का काम इन पिन्नयों के लेखक को ही मीपा गया या। वे सम्पादित प्रवचन श्री विश्व मगल प्रकारान मन्दिर पटण द्वारा 'प्रगति क प्रव पर' नामक पुम्तक के रूप में प्रकाशित किय जा चक है।

पूज्य पत्यामजी महाराज श्री ने वर्ध्यणपर्व के प्रारंभिक तीन दिन में इस महा मगलमय पत्र को सफल आराधना के गम्बन्ध में विस्तार पूर्वक प्रकाश उन्छा था। उन प्रस्क प्रवचनी को मैंने जिनबाद निया और प्रवचनकार के मूलभावों को सुरक्षित रखते हुए उनका सम्पादन किया। विषय का प्रति-पादन एवं दी गई सामग्रा प्रवचनकार का हो है। मैंने तो विषय मा पमवाद करन और भाषा का सवारने का ही कार्य धीर रात्रि के मध्यपार को प्रकास में परिणत करतें है अनम्ब यह प्रकास का पर्व कहा जाता है। इसी तरह पर्वत्य पर्व म मन में जमे हुए थिकारी वा गन्दर्ग का साथ सूपरा करना होता है, आत्मा क दुर्गुणो को चुन उन गर अन्य परना हीता है, हदस का स्पद्य करना होता है, आत्मा को परक स्वामाधिक मुल्हों में अत्रवृत्त गरना होता है। मानव गामाजिन प्राणी हाने से एक दूसरे व सम्पर्ध में तम काना प्रथा है। इस सम्पर्ध क कारण पारस्यस्थित मनस्टाय या चैर विरोध का असम का वाना स्वामाजिस है। ऐस अबोद्धताय प्रदर्गी के सिए परस्पर म धामा का चादण-प्रदार पर हुउस का विज्ञ दनाने याना यह महान विद्यास का एवं है। महमयों की दीपन लाओ द्वारा चाहता को अन्धेवित बार प्राप्त यह या नुवित्र प्रस्ता पूर्व है। इस जारवारिमण यह सान्ये को सम्मतिक जाराधन किस मकार हा सम्बी है इसका बदा हो पुन्दर कराइन उन षप्रवास रिकासमा है। अन्देश जन उसार कृति य धवनन प्रशासका स्थेत मानेस्था 🤼 ।

गरमीरकार्ताः भगवती गण्य वर्षे मा नरकारण कि लिव पास सरकोऽले ज्या कराव्या कादिन जानी का निकास दिया है। प्रवस्तवार ने काले जीव प्रवस्ता में देशो परिस्कारीत भीर प्राप्त प्राप्ति लाही मा विस्तानगर्दर स्वर्भाष सर्वति है।

अवस्य प्रकार के भारतीय प्रकेष प्रकेष प्रकार के विकास सम्बद्धित है। जाता के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्व

और (अष्टम) तप का हृदय म्पर्शी विवेचन किया है। तीमरे प्रवचन में चैत्य परिपाटी और एकादश वापिक कृत्यों की प्रभावपूर्ण गौली में व्याख्या की गई है। उदाहरणों और कथानकों के द्वारा विषय को म्यष्ट और हृदयग्राही वना दिया गया है।

पूज्य पन्यामजो महाराज के इन प्रवननो में जन सस्कृति की भव्यना का पद-पद पर परिचय प्राप्त होता है। आज के युग की नई पीछी अपनी सम्कृति के प्रति आम्था-हिन होती जा रही है उसका पुरय कारण यह है कि इस पीछी की अपनी सम्कृति की भव्यता का ठो ह हंग में जान ही नहीं है। अपन्य उम युग की यह मूनभून आवश्यकता है कि उदीयमान पीछो को अपनी सम्कृति की भव्यता का परिचय कराया जाय नाकि वह पब अन्द न हो और अपनी अद्धा के दीप की सुरक्षित रूग मक । पत्यागजी म क उन प्रवचनों में यह मूनभ्य जनक मनिहित है। उन प्रयचनों में जैन सम्कृति की भव्यता और जैन इतिहान है। उन प्रयचनों में जैन सम्कृति की भव्यता और जैन इतिहान है। उन प्रयचनों में जैन सम्कृति की भव्यता और जैन इतिहान है। उन प्रयचनों में जैन सम्कृति की भव्यता और जैन इतिहान है। उन प्रयचनों में जैन सम्कृति की भव्यता और जैन इतिहान है। उन प्रयचनों में जैन सम्कृति की भव्यता और जैन इतिहान है। उन प्रयचनों में जैन सम्कृति की भव्यता और जैन इतिहान है। उन प्रयचनों में जैन सम्कृति की भव्यता और जैन इतिहान है। इन प्रयचनों में जैन सम्कृति की भव्यता आगी साम्या दा गई है

1 29]

किय गये हैं। उनमें यदि कही स्तलना हा तो मसादक के नाने मैं उत्तरदायों हूँ।

इस पृत्तक का स्ट्रण को मेरे ही पेस में रिया गया है। यथा मस्य जुट और मुन्दर मुद्रण का प्रयन्त विया गया है सदिव वहीं हुई वृद्धियों के नियं में धानामार्थी हैं।

सिद्यं मध्य प्रशासन मन्दिर पाटन की और से इन प्रवसनों का प्रशासन किया जा का है अनुस्य प्रह चन्यपाद का पाल है।

'पर्युषण प्रकारका प्रकार सम्बंधि प्रेरणा अकर सम स्थारक शान-प्रशेन पार्टिकी अध्यापना में उपना नरे एनी समार समना के साथ क

रतल

पित्रय मसन्तीनाल ननशंगा

प्रवचनकार की जीवन रेखा

MM.

सुरम्य उप वन के आचल में मृदूल टहिनयों पर पूर्ण न कोर के प्रस्फुटित होते हैं । फूल की कोमलता सुन्दरता ब्रोर पुगन्य से उपवन का कण्-कण् सीरभ से सुवासित हो उन्ता हैं। दर्शक का मन-मयूर नान उठता है । वह उत्लास और माह्नाद से भर जाता है ठीक इभी तरह सत-नन विषय-वाटिमा के रमणीय सुमन है। वे स्वय जीवन की सुवास से सुवासित हाते है और अपने स्नासपास के वातावरण को भी सुवी सित और सुरम्य बनाते हैं। ऐसे सतजनो मे प्रस्तुत प्रवचना है प्रवचनकार, शान्तम्ति प्रसिद्ध वता, समर्थ साहित्यकार पत्यामजी महाराजश्री कनकविजयजी गिर्मावर का प्रमुख स्था है। जीवन के उपागान में ही ऐश-प्राराम और सांसारि प्रलोभनो में कपर उठकर मोक्षमार्ग को आरापना हेतु तर पू पार समनिन्द जीवन श्रमीकार करना आपके जीवन की प्रमु विश्वपना है। साधारण प्राणी एश-अराम की लोर झुकता प्रस्त विभिन्न व्यक्ति सिश्ट प्रकार की सापना सरके जन-वत्याम क तिय सामानित मुनापभोग का दूसरा कर ताव और वर्ताण के अपना अदिश अस्थित सकता है। पत्रमानजी महाराज त्यान हा अपना अदिश अस्थित सकता है। पत्रमानजी महाराज त्यान राज्यात भी तना है। साथ अन्य है। सहा उन्हें महान पा ११ वर्षा मात्र प्रस्तु हरो का प्रयन्त हिया प्रा त्रापत की प्राप्ती मात्र प्रस्तु हरो को प्रयन्त हिया प्रा



वाल्यावस्था और प्रवच्या ग्रहणः

श्री वत्यासभाठी बचपन साठी सुसम्कारी थे । पूर्वकालीत उत्कट काटि के धमसन्यारा के बारण तथा पिता श्री गारवित भाई का प्ररगान व चार पाच वप का उम्र से ही वर्म के प्रति अनुराग रपन व विभिन्न विजन्मना से ती शृगार वेन अपने लाइन पुत्र का 💤 वर्ष का छोड़ कर स्वर्गनाणी हो गई थी। मार्ता की ममतागय छाया छिन गरी। परान में रहने वाते उपत्याभारी जबरी को धमपत्ना था नदलबन न ग्रामे पुत्र के समान ही इनका तालन-पालन किया । कत्यानभाई स्राने पिताश्री क सा<mark>र्</mark> निरस्तर जिनालय म अप्टाकारी पूजा करते थे। पब दिनों में प्रातक्रमण करन हत्यम । का त्याग गावि-भावन-त्याग का वन वचपन सती था। ४० वप का हाना वग में हा चार पकरण पच प्रतिक्रमण, नवसम्बरम उत्यादि ग्रंथ सहित कठस्य से । पटमदाताद में प्रथमाद सक्षणानम्यहम्यतः। प्राचार्यदस श्रीमद् विजयज्ञान सरीष्वरता मधारात आ ६ वहुन नावक पूज्यपाद आचा रहेर आगद रिजयन मस्रीष्यर न महाराजश्री के सम्पक्त में ग्राने ने तथा उत्तर पद्रप्रमात्तर हिमारमात व्यक्त के करणाहित पो संस्थान सम्यान तृत्रा । इसी प्रकार स्वास्त्रास्त्र ही भी कि व १६.४ पर सूत्र सूत्र सूत्र । व दिस प्राम्यम स नार्थ्यो विका (ह्यां प्राप्त कर रहे दिस प्राम्यम स नार्थ्यो विका (ह्यां प्राप्त कर रहे दिस प्राम्य एति तो सूत्र एक स्वाप्त कर रहा स्वाप्त हो स्वाप्त कर स

अक्षात एवं गंज्यार पन ग्राधित

ववतृत्व एवं साहित्य मृजन :

पुज्य पन्यासजी म जहाँ एक और सफल बक्ता है वहाँ दूसरी और उच्न कोटि के कवक भी है। एवनक्यार होने के सार्व हो साथ माहित्या र हाता एक अनावा संगतारम है। ताव शी मुसुबर और शान्त शला स प्रवचन करते हे सार धाराप्रवाह हो मे ब्रापत्ती लेगनी साहित्य सजन करता है। जन नमाज मे माहित्य सजन को पर्वाच के लिये प्रसिद्ध 'कत्याण' माहिक आपकी धेरगा का ती मुफन है। उसन अनेकविध अपनाम से स्राप नानाविध सामगी पाठका को परामते है। स्रापने १५-६० प्रकाशनो का स गदन तथा सजन किया है। सस्कारदीप, दीप माल, मगलदो । जैन लीया का इतिहास रामागरा के विवेचन, श्री बजुञ्जम महात्म्म उत्मादि ग्रापरा विति त्या सम्पादित प्रसिद्ध साहित्य-प्रतिया है। जानारे प्रवान-पत्ति अहतीय है। नारा सुनुर तथा रमा भीतो से आप किसो भो विषय पर धण्डो तक प्रवसन कर को तक आक्रा कन महिस्स हो कर श्रवण करपे १ । अपने कारणात्र पा प्रक्राणन होता है । हिन्दी में विकेटिक के पास , जनकातिक को किया स्था है।

१ अपूर्व नेत-चेत्र ता एक बर्गानप ज्यास ने जन वर्षी तरः नेति-के में ना भौगारी, के तह मासी, एक कर्म ने ति को मासी मैं पाय परास्तर हरदास जाल सिद्ध-चनकी का वर्ष-नेकाः वीस रशानक की आला वर्षेमान तर का क्रांस्त्रा सकावती या पालन कानी इन्यादि ए के क्यार का नप्यन्तर्भ मान क

रिक्षार-माँ विर

विस्तृत मार्थ्याः ।

 आपकी विहन प्रशान्त विदुषी साध्वी श्री दर्शन श्री जी म का स्रभी सभी स्वगंवाम हुआ है। ग्रापका विशाल माद्वी-समुदाय है।

उपसंहार:

इस प्रकार प्रस्तुत प्रवचनों के प्रवचनकार पत्यामजों श्री कतकविजयकी गणितर अपने लेखों और प्रवचना द्वारा संगाज में जागृति का अभियान चार रहे हैं। अपने तक पूत संयमी जीवन और ऑजन्यों स्थाप्यानों के द्वारा जिन-भासन की प्रभावना पर रहे हैं। शासनदेव में के मना है कि आप दीर्घकाल तक जिनगासन को सेवा करते रह

• सम्पादक

BESTELL BAFFLANG GIVANGALAKERING

अनुक्रम

| | | 770 |
|----------------|-------|-----|
| पगा ग्राचन | •• | * |
| र्द्धांत गर्चन | 4*** | ηc |
| पृतीय प्रवचन | 374 % | 225 |

पर्वाधिराज श्री पर्दुपण महा-पर्व की आराधना

१. प्रधम दिवस का प्रवचन :

राष्ट्रान्डिकाः परेबीकाः स्यादाटामगरीचर्मः। वतु स्वस्तं समावस्तं धामेन्या परमाहर्तः ॥

शाम का यह मनात्मय प्रभाव एक सनीया हैं। प्रकाश-पुत्र रियर शाम है। वैस ता प्रतित्न पूर्वोद्ध होता है और अवनी मुन्हरों दिरये शिव में अन्याद की पूर कर जाये और प्रयाद ही प्रकास विवेद हैं। हैं। पान्यू अन्त का प्रभाव, प्रतिदिन से प्रभाव की अवेदा एक नर्गत का मो दर कर काम हैं। यह अनीक स्वित के प्रने अन्याद सामा दर कर ही पुत्रा है, परन्य साम ही साथ स्वयंके और प्रमारे स्वयंत ने व्याद प्रमाद सिक्त्याद्ध की किंद्रनेक्षण कर अव्याद की स्वादि की क्रमायांत्र सा पुत्रकराय और वार्ष्ट्य की स्वीद स्वयंत्र हैं।

करण पर्योक्षण १८ का सामाणण प्रशास है । या बारादों और सम्मो सुधिन भर करा है हैंग, र वि स्थापन भा खुरों हैं, सन्तामार कर सामाज्य कि रहेंग्रांच का खुरा है, किस हैं सार्वाम के अस्थान मुंह है, हेंग्रा क्षीर स्वृत्ति प्रसाप करने वाली वायु की मन्द-मन्द लहिंग्याँ नवजीवन का सवार कर रही है, हे भद्र । उठो, निद्रा छोडो, पुरुपार्य करो और इट्ट साध्य को प्राप्त करो । भाव-जागरण का यह सुनहरा अवसर है। मोह की रात्र दूर हुई, ग्रज्ञान का अँबेरा हुट गया, सम्यक्तव का सूर्योदय हुग्रा, आत्मा की गुण-लहिर्यो में स्पन्दन हुआ, यो वातावरण अनुकृल है, ग्रव प्रमाद की नीद को छोडकर जागृत बनो, मोक्ष तुम्हारे नजदोक है। यही आज के मगलभ्य पर्युपण पर्व के प्रभात का भव्य प्रेरणास्पद सदेश है।

पर्वाधिराज पर्युपण:

जिस प्रकार तीयों मे शत्रुजय तीयं, मत्रो मे नवकार मत्र पर्वतो मे मुमेरु पर्वत, समुद्रो मे स्वय भू-रमण समुद्र प्रचान और महान् है उसी तरह सब पर्वो में पर्व-मृकुट-मणि पर्वाधिराज पर्युपण पर्व प्रधान और महान् है।

मामान्य दिनों को अपेक्षा पर्य-दिनों में विशेष उत्साह परिलक्षित होना है। जीवन से दैनदिन कार्य-कलापों में नवीन उपाम का मचार करने हेतु पर्यों की आयोजना हुई है। पर्य-दिनों में नर्य-तिता, उपाम और स्कृति का अनुमय होता है। वैने तो विभिन्न देश-काठ की अपेक्षा से नाना प्रकार वे पर्य है परन्तु मामान्य तथा हम परे हो यमी में विभा-जित कर माने हैं, वे हैं लोकिक पर्य और सोगोनिक पर्य। मौनारिक आमोद-प्रमोद की वृद्धि करने वात पर्य होत्क पर्व हैं और अस्मा को ग्रम्यूट्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा करने अने मोत्तोत्तर पर्व हैं। पर्वाधिराज पर्यू पण पर्व महान् सोक्षोत्तर पर्व हैं। यह ग्रान्स के ग्रम्युयान ना सापान है।

जिस प्रशास कीई महानु स्विम्त मोई गड़ा या कोई विनिग्टर (मत्रा) आपके घर आने याला हा तो उसके रहतार-मन्मान और स्वागत के लिय ज प कितने उल्लाम के माध नैवाश्यी कारी है, आमपान की गढ़कों दूर कर स्वच्छता काने हैं, माना प्रकार को सजाबट करते हैं, विवय प्रकार के द्वार बनाते हैं और सोरण-यन्दनदारी से उन्हें सजाते हैं, विवित्र ११९-उपराग आदि समितिम कन्ते है और न जाने में सी-बेमा सैवर्गण्यों यह उत्माह के मान मन्त्रन करने हैं ? उस स्यापत के पाने के पूर्व की जन्माह बहुना है, वह बाता है यब भी उत्पाह गाता है। इसी तरह पर्वाधियन पर्यापण का रोवन के अनिन में पदार्पण हुता है। हमें भावमें ने हुदय से कारा स्थापन गरना है। हुदय के आंपन की, मन के मन्दिर भी, गाण सुबंध करना है अला बंध्य में छिपे हुए मीत की एतावना वे सामागर की दूर कर विवेश-तान की उदीति अगामा है, बारम की विकाय-विव्यक्तियों की हटाकर स्था-काषिक गृह-राज राशि में प्रारमा की मदामा है।

पूर्व पारवारों के कारण अववा विकास की सन्त्रमण व कारण भाग करणाव की विभिन्न मेहिएयों है। कीई प्राणी एमे हैं, की स्वरापण सुध कायी के प्रति आर्थित स्थाई अीर सदा जुम अनुष्ठानों में लगे रहते हैं; कोई प्राणी एमें हैं जो थोड़ी सी प्ररणा पाकर शुम कार्यों में लग जाते हैं और कोई ऐसे प्राणी हैं, जिन्हें तीन्न प्रेंग्णा की आवश्यकता होती हैं। कोई एसे मो हैं जिन्हें वार—बार प्रेंग्णा मिलते रहते पर मी धमें कार्यों के मन्मुख नहीं होते हैं। जो प्राणी स्वमावत धमें के प्रति अनुरागी होते हैं वे प्रतिदित धमिनुष्ठान में लगे रहते हं उनके लिये वारह माम पर्व दित

''मदा दिवाली संत के बारह माम वमन्त'

जो व्यक्ति थोड़ी सी प्रेरणा से धर्म के प्रति सावधित हो जाते है वे अष्टमी, चतुदशी, पाक्षिक ग्रादि तिथियो प धर्म की ग्राराधना करते हैं। जिन्हें विशेष प्रेरणा व आवश्यकता होतो है वे घोमासी पक्सी, पर्युषण आदि प क दिनों में धर्म की ग्राराधना करने में प्रवृत्ति करते हैं। इस पर्व दिनों म भी धर्म की सावना करने से बचित रहते वे अत्यन्त निम्न कोटि के समझ जाते हैं। उसी बात को इतरह भी कहा जाना है—जो सदैव धर्म की जाराधना करने वे सद्देया जो कभी २ श्राटमी, चतुर्देशी को धर्म की आराध करने हैं वे बदया, और जो वेवन माद्रपद मान में श्रय पर्युषण पर्व में धर्माराधन करने हैं वे भदीया महे जाते हैं।

उत्तन बात का फिलिताये यह होता है कि इस पर्य का निमित्त पाकर अनेक प्राणी आत्म-भत्याण के पथ पर अग्रसर होत है हम जैते कृत में जत्में हैं, पर्युषण हमारा पश्चित्र पर्व है, इन दिनों में धर्मा एपन करना तमारा मुनाचार है, द्रम दिनों में मदि धर्मेग्यानों में, महिदर उपध्या में करी लाउँगे तो ग्रन्छ। नहीं अगेगा हत्यादि छारणायी है। यसोपूर होत्तर भी गाउँ ध्वतित गर्भ की व्यासमाग केनु प्रवृत्त तीत है। जहाँ यर इस प्रशार में सर्व की दाने हैं तब तर सा सन्याय का द्वार गुक्त हुआ है। जब यह कर्म भी नाजे जामी है सब मान्याण के द्वार काक दा वाल है। बहुन का साम्बरं यह है कि पर्वे का निवित्त पाएर सबेह जान प्रानी आहमा ना व यम करत में प्रश्नाति तक है। अल्प्याय प करने या यही मार्जी पत्री जार हम छवर्ष समग्र उबेश्यन है। प्राधिमक पर्वयण, गर्ने की कोषम है। प्रायानी स्नीत मासिम व दिनों से परिश्व पारक प्रयासकेत कर मेल है और किर वर्ष भर मृत पूर्वत क्षेत्रता विश्वति करत है. ठके पनन योष-धोम को निजय निन्म नहीं करने नहती । त्री भ्यापास गणरून में पहनार मौनित का समय यो तो होता देश है यह वर्ष भर परायाल है। इसी मनद का कारायह पर्यमा पर का वार्तिक भी तम का क्योंगर है जान लाम कि विश्व है यह स्वयस्थायक का मुख्य प्रकार कर केया 🚶 और जा प्रमाद के कारण दी या हा गीवा देखा है वह अपम कर्राश्व गा स्वत्री भूभे ब्यू-विक्त सन्ति प्राप्त ह्यू-न्यू 246 E 1

पट साराधिक :

की है:— (१) चैत्र माम की (२) अपाढ माम की (३)
पर्यु पण पर्य की (४) आमोज मास की (५) कार्तिक
माम को और (६) फाटगुन माम की । उन छह अप्टान्हिकाओ
का भाव पूर्वक समाराधन करना चाहिये । उन्न छह अट्टाइयो
में मे आमाज और चैन माम की दो अटठाइयो द्यापवन कही
गई हैं । उत्तराध्यमन सूत्र की वृहद्वृत्ति में ऐमा उल्लेख

हा दी णापान धट्ठाहयो से दिनो में भुवनपति,
नान ज्ञान, ज्यों निद्धा और वैमानिक चारो प्रकार के देव
तोर देनियों नया निधानर आदि नन्दीएवर हाप में जाकर
जिनदार ज्ञान की नद्गान पूचक भिना करने हैं और भव्य
ग्रहारमा मना कर जान दिव्य जन्म की सफनता समझते
हैं। हमी प्रकार मनुष्य भी उन बादना अण्डान्हिकाओं में
आयित्य की नपदनर्मा पूचक नापद का भनिन्नाब पूर्वक
ग्रामाधन करने हैं। तीपाल राजा और मयणामुन्दरी की
तरह नवपद ओला का भीताना। पूक्क समाराधन करना
हम भव में भी य याणकार होना है और परभा में भी
पहान् शुन फल का प्रदेश होता है। इन दो बादवत
अल्डान्हिकाओं हा विश्वनिक के कि समा

एरवत और पांच महाविदेह-यो १५ वर्ष भूमियाँ मानी गई है नहीं धर्म-कर्म सादि की प्रयुक्तियों है। जस्ट्रेंडाप में १ भरत, रे एरयत और १ महाविदेह है। गानको यह भेँ २ भरत, र एरवा और र महाविदेह हैं। अर्थ पुष्पर वर ईलाम भी र भग्त, २ एरथा और २ महाविदेह है। इस प्रशास उदाई दीप प्रमाण मनुष्य क्षेत्र मे ५ गरत, ४ एग्वत दौर ५ महा यिरेट हैं। ५ महाविदेह क्षेत्र में महा धर्ण की प्रवृत्ति है। यहाँ हमेबा संबिद्ध रहेव विजयमन रहते हैं। वहीं मधाराल बनुधिय में प्रियमान रहता है। यहाँ का क्षेत्रानभाव हा ऐना ह पि मा भरा राप्त के चौने जारे मरोची रचना मदागाल रहभे हैं। यहाँ के स्त्रीम स्ट्रियाश है। अनम्ब यहाँ के सासू गांधियों का आचार भी यहाँ से किल है वे जब पाव सगका है गय प्रतिज्ञमण बारी है जय जाय नहीं सगता है तो प्रतिष्ट मेंग नहीं भरते हैं। हमारे यह जिसा धेवसी, संद, पालिस, पंतृपंतिर या म(प्रतारिक प्रतिक्रमण रा छनिकार्य विधान यहीं मही है। इसनियं महाविदेत क्षेत्र में बार संदानिकाली को धारामाम नहीं है। ५ भरत और ५ मृत्यत सब में छा। मार क्षान्यस्थित्वाओं माँ भाषावरा गरी गर्द है ।

भरत और एसमन क्षत्र में ग्या मान शुर सामाय नहीं होटे हे महाँ हाल तीर साम का स्वामान के उत्पाद गार है । दर्श मानियों होंदे धवर शिमोत्ताम के स्वाह का माने मिने हैं । अवतिक्ष्ण में कार भीर पात्त गार में गी से स्वाहण्य हैं। मेंच कारों हैं । इसियों क्षेण और साम हो प्रीक्ष्ण हैं। मेंच कारों से गाँउ हैं । इसियों क्षेण और साम हो प्रीक्ष्ण में को सा, जा हुए, मानाइ जीर नचूंगण, की सह दर्श के मानवास सह, महीर ।



भग्म विया। (३) उत्तम आहण है। पर, माधू पुर्णी पर, नंपट पाने पर उनकी रक्षा के निकित्त देव मनुष्य कोण में प्राप्ते हैं और (४) तीर्थं पर देवों के नायाणकों से प्रवपर पर, महसका नवित्रयों को मित्र के निवे, मुहत्य दान धादि के गम्म गुत्रचं-पृष्टि पुष्प पृष्टि शांदि है क्ये नमा की न समें न समाव में हेनु देव यहां क्ये हैं।

यलात में चंत्र श्रीर मात्र भागत में त्रिये देव यही हैं, स्थान मन श्रीय हरते हैं, मात्राण हमाई रह त्या भिन्नाय पूर्वत पर्टे ह परन्त्र परित का परितास उन्हें मही तेना है व स्थाय, महात और भाग प्रमें तै परन्तु मान विस्ति नहीं है। इस प्रभाव देव और में बियुत्त मुक्तिन है परन्तु भागिया में सार्थित समूचित ने-मार्थित सं-प्रपाद नहीं हो है।

विश्व स्थानिक से सुन्य त्यास ता अध्यक्ष स्थान है सस्य स्थानिक से देव स्थानिक है स्थानिक से स्थानिक से प्राप्त है स्थानिक से स्थानिक से प्राप्त से स्थानिक स्थानिक से स्थानिक स्थानिक से स्थानिक से स्थानिक से स्थानिक से स्थानिक स्थानिक से स्थानिक स्थानिक

श्री जीवाभिगम सूत्र मे कहा गया है कि-"श्री नदी-रवर द्वीप में भुवनपति, वानन्यन्तर, ज्योतिषी और वंमानिक देव देवियाँ तीनो चौमासी और पर्युपण की अट्ठाइयो की अत्यन्त जल्लास और भिवत बहुमान पूर्वक महा मिहिमाशाली महोत्सव मनाते हैं।" इस पर से समभा जा सकता है कि इन पर्युपण पर्व की आराधना का कितना श्रिधक महत्त्व है।

मानव भवः एक अपूर्व अवसर

घमं की आराधना ही पर्व की आराधना है। धमं की आराधना का अपूर्व अवभर हम सब की प्राप्त हुआ है। इस महा दुर्लभ मानव भव में हो धमं की आराधना सम्भव हैं— अन्यत्र कही नहीं। देवयोनि में भोगों की ही प्रश्नानता है। स्वाग प्रत्याच्यान नहीं हैं, न सामायिक न प्रतिक्रमण, विरित्त का नामनिशान तक नहीं हैं। तोथंकर देवाधिदेव के समवपरण में देव व्यार्यान श्रवण हेतु आते ह तब भी वैक्तिय शरंरधारी होत हैं, तप त्याग सयम का आराधना औदारिक शरीर से ही सम्भव है।

डाम्य में कहा गया है कि चार काराएं। से देव मनुष्य लोक में आने हैं -(१) राग के कारण -पूर्व भव के राग-सम्कारों की प्रवलना टीन में देव मनुष्य लाक में आन है; प्या गामद्र मेठ का जाव देवलोंक से आनिमद्र से लिखें मृहोपनींग वा मामया भेजा ता । (२) देव व कारण में -प्या हैपादन कृति के जीव न पूर्वत्न निदान में डारिका का भनम निया। (३) जलम आह्याओं पर, माधु पृत्यों पर,
मंग्रह आने पर उनकी रक्षा के निनित्त देव मनुष्य सोक मे
प ने हैं और (४) तीर्धंकर देवों न वाद्याणकों के ध्रवसर पर,
महात्का नार्वित्यों को भनित के निया, सुराज दान चादि के
मनय सुद्रां-वृष्टि पुल्य दृष्टि लादि । जिस नारा काम में
म प्रनाव के हनु देव परा छाने है।

मधीय सार्वेश्वर और नाथ भिष्ठि रे िय देव साते हैं, ध्यामान स्वाम नन्ते हैं, बावामन सादि भा नाय भिंद साद पूर्वेत नन्ते हु परन्तु दिन्दि का परिमाम उन्हें नहीं होता है । ध्यस्य, नम्दा और स्था प्रतन है परस्तु स्वम दिन्दि नहीं है। इस प्रश्रद दक्ताम में विद्या मुख्यान में परस्तु महिन्द को सामाजिक सन्दर्भत के स्थापनीयकार म-स्वस्थ सही हों।

निर्धेष गरि म शुन प्रांग त प्राप्त गर्म ने नाम प्रश्नित्र में भी प्रमानित्र में अपूर्व में अपूर्व में अपूर्व प्रमानित्र में अपूर्व मिल्लिय में मिल्लिय में अपूर्व मिल्लिय में मिल्लिय में मिल्लिय में मिल्लिय मिल्लि

प्रवर्त में भी देश के देशकार्त के काशक है र निर्मार है साहर राज्य के हैंगल और मार्च कार्य में स्वीति के स्वार्थ संस्कृति हो है साहन है जो सहित र केवल मनुष्य-शरीर ही ऐसा सुअवसर है जहाँ वर्म की आराधना के स्वर्ण अवमर मूलक है। मानवता, पवेन्द्रियो की परिपूर्णता, आयंक्षेत्र, उत्तम कुल-जाति, धर्म अवण की अनुक्लता, विवेक शक्ति (समक्त), त्याग प्रत्याख्यान करने की श्रावत और रत्नत्रय की आराधना-ज्ञान, दशंन, चारित्र की परिपूर्णता और निर्वाण प्राप्ति की योग्यता केवल मनुष्य में ही है। इतनी सारी अनुकूलताएँ आप सबको मिली हुई हे। यह कितना वडा सौभाग्य है आपका। इतनी अधिक अनुकूलताएँ होने के कारण मोक्ष आपके नजदीक ही है। आवश्यकता है केवल अपमत्त भाव से त्याग और संयम आराधना की।

आदिनाथ भगवान् ऋपभदेव स्वामी ने अपने ह८ पुत्री को सम्बोधित करते हुए कितना मामिक उपदेश दिया है –

संबुद्भह किन बुद्भह, सम्बोही खलु पेच दुल्लहा। मो ह्वग्ममन्ति राईश्रो नो सुलहं पुणरावि जीवियं ॥

— स्त्रकृतांगस्त्र

"हं भव्यों! समझों! वयो नहीं समभते हो ? मनूष्य भव के अतिरिक्त दूसरी जगह अन्य गतियों में ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती है। तुम्हें आत्मिकाम की बहुत प्रधिक अनुकूल सामग्रियाँ मिली हुई हैं। स्वर्ण-अवसर तुम्हारे हाथों में है। जो समय चता जा रहा है, वह वापम लौड़ने वाला नहीं है। ऐसा मुन्दर अवसर बार-वार मिलने वाता नहीं है। ऐसा मुन्दर अवसर बार-वार मिलने वाता नहीं है। हमलिये इस प्राप्त मुखवतर से साम लगातों। भारम-विकास

के दथ पर अग्रमर हो। जात्री । मोधा तुम्हारे नजदीर हैं। समार-माग्र से गिनारे से नजदीर आ गर्मे हा। सब मी जरा-मा पृष्याय जोर नर ना यम जेटा दार है।

इस मानव देह से सबसे की साधना बारे रे आल-बागन लास्त्रिको परिपूर्वे धारावना मण्ये जनन्त ग्रीम पूर्वे म मीछ ना प्राप्त कर भुष हैं। बर्ड डीची ने स्थादी निक्कि विमान में र्गरीन मागरोस्य को उहारण स्थित के दिया गुलों को प्राप्त किया है। एक बाना जाता है कि यदि इत जीदों की एक जों में संग की निर्देश और साम संग की आयू और जीवक लाका साथे मोस में बाँग गार । साउल इनसी मी वसी का अने के कारण से मील में न फ़र्जार सर्वार्थिक विमान मे प्राच्या हुत है। क्षेत्रे माधी खुक प्रार्थ है ता स्ट्रान वर प्रदा कारा पर भारत रे जा गान की जिंकड नहीं विवर्त है की वहीं रह काना पतवा है से ? दिर भा रवादार व व वीप त्रभवारकाम महाराष्ट्रीय व न्यामी लीति । यह अपन्य स्थिति भी मानवासमीर है ही प्राप्त होता है। सियती कारत है सारायान की ने इस प्रदान कर ने कर ना पान माना है स कार्य देविको अपर्वेद र कार्यः ह । स्रोत्यं व क्रमेर्येश्व हुद्र प्र mrnigi b -

ि अध्ये स्थाप । स्थाप प्रस्थाप

いわれないのいなか

医野女子 医皮皮 被 女 五十岁 使知言 中央主

इस बहुमूल्य नर-भव को प्राप्त कर मोक्ष को प्राप्त करने के लिये पुरुषार्थ करना चाहिये। इसमें ही नर-भव की सार्थकता है। तप सयम की साधना के लिए यह स्वर्ण-अवसर है। खाने-पीने या भोग में रस लेने के लिये मानव-अरीर नहीं है। ऐश-आराम में मानव जीवन को विता देना मीने की यानी में लोहे की मेख लगाने के समान है अयवा सोने के पात्र में मदिरा भरने क ममान मूखंतापूर्ण है। अतएव मानव-तन को पाकर दान-शोल-तर मावना हर धर्म को आराधना करनी चाहिये।

यह आराबना प्रतिदिन हो ता बहुत ही अच्छी वात है परन्तु यदि प्रमाद वश हमेशा न वन सके तो पर्व-दिवसो म तो अवश्य ही धर्म की ऋाराबना का जानी चाहिय।

किश्तो का वुकारा :

ित्सी कुलीन व्यक्ति ने किसी साहकार से कर्णे लिया स्थिति ऐसी हो गई कि गर्ज का एक मुद्दत चुकारा करने की पालित उस व्यक्ति में नहीं रहीं। व्यवहार की सचाई के खातिर कर्ज का लुकारा होगा हा नाहिये। स्था- किमानी और जुलीन व्यक्ति प्राप्त निरुपर निर्मा का कार्यना पसद नहीं बरना। यह कर्ज का चाप्त समझता है और जमें हाला करने का प्रभाग करण है। सुविधा के सातिर जुनने स्थान स बहा कि मैं ए मुद्दा तो कर्ज पुराने की स्थित के ल⁵ ह परन्तु कर्ज का धारा निरुपर स्थान भी में

तिही नाहता अतः आप पीटे-पीटे गमय के अन्तर की किन्नें पर सो ताकि में थीहे-पीटे और घीरे-धीरे देवर घर्ण मुक्त हो गण । साहकार ने यह मात निया । विश्वों के द्वारा कर्जं का पूजिया मृतिया से हो गया ।

हम मन धर्म ग्यो मानुष्य र गार्जयात है। हम प्रति-ति धर्म की आराधना नरके उमका का चुराना भारित उन्तु एमा सामध्ये न होने पर त्याहार की मार्जा के सातिर पर्य दिनों में धर्म-भाराधन करने ही किरनी के द्वारत हम पूछे हा सराना चारिये पर्य दिश विश्वी के दिन है। धर्म नात के हम महानिषय प्रदान ही है कि धर्म के हम प्रति मान् स्था मेरा के ते न पूछा बनी सा पर्य-पर्य के सन्तर-प्रत्य म म धर्मात्रधन पर पर्य में हम्बे बना। साहिने म मार्गिशक प्रकार का धर्मात्रधन पर पर्य में प्रवाद के हमार है।

पर्व दिनों में प्रशास के लालुनंत की संभाव छ :

प्रशासकाको को संभव है हैंग राष्ट्र- वन गी प्राप्ट्र की सेंग्र स्वयं ने प्राप्ट्र की केंग्र की साम्यु की सेंग्र स्वयं ने प्राप्ट्र की के प्रशास के प्राप्ट्र की सेंग्र की की प्राप्ट्र की सेंग्र की सें

है। आयु का वद्य पहते समय जिम प्रकार की भावना और जंसे शुभागुभ अध्यवमाय होते है उन्हीं के अनुसार शुभ या अशुभ आयु का वद्य पहता है। श्रत भवभी रु मुमुक्ष ग्रात्माओं को पर्व के दिनों में विशय रूप से धमं की ग्राराधना के प्रति सावधानो रखनी चाहिये ताकि अशुभ आयु के वद्य की सभीवना को टाल मके।

जिस प्रकार वापिक परीक्षा के समय छात्र सावधानी रखता है तो उत्तीर्ण हो जाता है और असावधानी करता है, गफलत करता है तो वर्ष बकार चला जाता है इमी प्रकार आयुष्य कमं के बद्य के प्रति पूरी २ साववानो रखी जानी चाहिये । ग्रगुभ आयुका बच टाला जा सके इसके लिये पर्व तिथियो पर शुभ ग्रध्यवसाय रखते हए धर्म को ग्राराधना करना चाहिय। पर्वे तिथियो मे आरम्भ समारम्भ के कार्य नहीं करने चाहिये; पर्व तिथियो मे हरे शाक-सिंट यो और फल-फूलो का सेवन नहीं करना चाहिये ज्ञित अनुसार तप करना चाहिये। अठारह देशो के राजा कुमारपाल ने वर्पा-चातुर्माम के चारो महीनों के लिये हरे शाको का त्याग कर दिया था, वह एवामना तप करना था. उसने केवल १ विगय रखी थी रोप का प्रत्यास्थान कर दिया या । विज्ञाल राज्य का स्वामी होते हुए भी युवारपात राजा ने अपना जीवन िहतना धर्ममय बना रासा था यर उत्त बातो से विदित होता है।

के क्षयोपशम के अनुमार होती हैं। पुण्य की प्राप्ति धर्मा-राधन से होतो है। धर्म की आगधना के बिना पुण्य की राधि सचिन नहीं हो मकती और पुण्य के विना धन की प्राप्त नहीं हो सकती । आप लोगों को अपने प्राप पर, ग्रान धर्म पर, अपने पुण्य पर विश्वास नहीं है, श्रद्धा नहीं हैं। महा-पुरुषों ने कहा है कि 'धर्मिट अवा सिद्धि' अर्थात् धर्म की साधना करने स अवश्य ही सफलता प्राप्त होती हैं। इम वचन पर आपकी श्रद्धानही है। पग्न्तुयह ध्रुव सत्य ^{है।} कूप में जल होगा वही क्यारे में आवेगा, टकी में जैसा होगा वही नलो में आवेगा। इसी तरह धर्म और पु^{ण्य की} राशि सचित होगी तो ही व्यापार आदि में लाभ प्राप्त होगा। अतएव 'धर्ममिद्धे ध्रुवामिद्धि' की बात पर विश्वास रसक्^र इन पर्य दिनो में अपने व्यापार-प्रधो को वन्द रसकर, मावध ग्रारम्म समारभो को छोडकर, तप-त्याग और ऋहिसा धर्म की आराधना में मलग्न रहना चाहिय । ज्ञान दर्शन-चारित्र की क्राराधना अन्त करण पूर्वक करते हुए पर्व को सफल बनाना चारियः

'रयाद्यादाभयदोत्तमे':

प्रारम में जो बतोक कहा गया है उसमें नीशेंद्वर देव के निर्वे 'स्य द्वारानयदोनमें ' निर्णयण दिया गया है। तीर्येद्वरदेव स्पाद्वर शिदान के महान प्रवंत हैं और अस-दान के सर्वे आड जपदेल्टा हैं। न व व उपदेल्स ही है असिक् दान के सर्वे आड जपदेल्टा हैं। न व व उपदेल्स ही है असिक् िर्मि डॉयम में अहिए। और स्याहण्ड का चामरण कर जगम् ने पोंडों में सम्प्र उन्होंने अभगदान और समस्या का स्यादा हारिक आदमें उपस्थित किया है।

मगयान मह योग धेव की न्युनि ककी हुन गुड़ालाम प्रति में कहा गया हैं--

उर्दू शहरां तिरियं दिसास, तमा य जे घानर जे य घटा र ते फिर्चाएकं हि समिक्स्यपन दीने व धरमं समिनमुदाह ।।

केंगी, मीनी और निर्की दिलादी में ना भी तम और ^{क्यावर} प्राची है, से राज निकास र है। इ.जानिक कस की परिवा त्रीय-वरणा विषय है। सभी पीत ३१व. वर निराह निर्मित हमिन्दि वह दिस है। पर ए जनकी नायकारी-प्यिंचिन्धदलको कहती है, क्या सर देव पर्योग का जाना है, कभी मन्त्र पर्याच म ताली दिवेचन पर्याध में और नाम भागक प्रयोक से । इत प्रयोशी के भेट शालत है दि से । है । he desired the experience of the property of the high section of t धीरा बार्युप्त के रक्षत की जानवर प्रदर्भ रूप रा प्रदर्भ निया है। इस्ति निकारिन्दरभश रणहारा च स्पूर्व और me findu fatte get til dig nå me nave natt matt m किर हुन व्यक्तिक के दिस कारणपुत्र है एकता जह ससे हर्जन all than providing milk by the seas when high providing a

जनत गाया में प्रमु महावीर ग्वाभी को स्याद्वाद कें थीर अहिं भावमें के महान् प्रवत्तंक और जपदेग्टा के रूप मिल्लिपत किया है। वस्तृत तीर्थं द्वारी प्ररूपित जंन धर्म के ये दो मौलिक सिद्धान्त है। आचार में अहिंमा और विचार में स्याद्वाद (अनेकान्तवाद) जैन धर्म की मौलिक विशेषता है। इन्ही दो विश्वपताओं को सूचित करने क लिय 'स्याद्वादा- भयदोतमें." विशेषण प्रयुक्त किया गया है।

स्याब्दाद का महत्त्व:

अनन्त ज्ञानियों ने बस्तु का स्वहर अनन्त धर्मात्मिक वताया है। प्रत्यक पदाथ में अनन्त धर्म हैं। पदायं की इम विभिन्न धर्मा मकता के कारण हो उसका ज्ञान भी विविध हेंगों में होता है। विभिन्न दृष्टिकोणों में एक हो वस्तु विविभ हेंगों में दृष्टिगों नर होती है। यही सब मतभेदों का मूल होता है। मभी धर्मों, पत्थों, दर्शनों और मतों में जो अन्तर पाया जाता है उसका कारण भी दृष्टिकोण का अन्तर ही है। कोई दर्शन आत्मा को मानते हैं, योई धर्म-दर्शन आत्मा को नहीं मानते, कोई प्रत्मा मों नित्य मानते हैं, योई अकर्ता मानते हैं। बोई आत्मा को बवापक मानते हैं, योई अकर्ता मानते हैं। कोई गातमा को बवापक मानते हैं, योई बहु-पहिमाल। इस प्रकार विभिन्न मान्यवाओं ने बारण सब इतर-पर्म-दर्शन बार परस्पर में विवाद करते हैं सब अवने-जाने पत्र का बार परस्पर में विवाद करते हैं सब अवने-जाने पत्र का बार परस्पर में विवाद करते हैं सब अवने-जाने पत्र का बार परस्पर में विवाद करते हैं सब अवने-जाने पत्र का

विष्ठे बाद-विकास और जिल्हाबाद सहना है। एमद्रमात भाग है और बनह का युवभक होता है। यास्तिक द्वि में अब दम देगते हैं ना विदित तोता है कि प्रायक पत बन्द ण एं ही जग की समग्र राज परास तेने की भूग पारता है। यह मन्त्र में एक इस को ही मन्द्री समय कर इद इस का ला निस्कारकस्ता है। भार यह तम को चम कर मानकर हैंगरे नेतरे का विकास के कर का गई कही पास है पहली "य प्राप्टे त्यों का प्राप्तार करता है की प्राप्त विध्या की भिष्य है। हो मुसान पाट व बाहते हैं वे बन्तन्तर स्वाह ^{में} यदुमार तानी के एक तर स्व, चार पेर, एक करीर का हीं हिंदी समता दि है क्यांकि हुन गम्छ सबया। नर गयुहाद ही हाथों है। एडप्रकारी बीच, नारव सीमातर, संसादिक, वैगीयक प्राथाक वर्तन स्कान्य क्रीक प्राथी विकास प्राथ अंदित करेंद्र करेंद्र के किया है समझ के हीते करेंद्र रहेंद्र भी हैं। है। इस के संस्था के में के मार्थ के मार्थ के मार्थ के किए हैं। my unter made beit beit befagtet da bei mit mit man bem PLOSES NO NOTICE NO CONTROL NO MANUAL NO SE SENSION NO SENSION NO SENSION NO SENSION NO SENSION NO SENSION NO 가류로 꼭느겁게 됐습니요. 나는 면서 반석도 그어면서 건가 되고

をできる can a mature a cat いっか できる はなる and take and take

कर उनमे सम्मिलन करा देता है। इसी को जैन परिमापा में विभिन्न मतो का समवसरण कहा जाता है।

विचार भेद होते हुए भी, मत भेद होने के वावजूर भी मन-भेद न हो यह स्याद्वाद का हमारे दैनिक जीवन भे सदुपयोग है। स्याद्वाद का सिद्धान्त हमे आपस में प्रेम भाव से रहने की प्रेरणा देता है। विरोधियो के साथ भी सह-अस्तित्व की शिक्षा देता है।

आज का युग सगठन और एकता का युग है। सगठिन होकर हम शिवतशाली हा सकते है। विभवत रह कर हम क्षीण होते हैं। अत आवश्यकता है कि हम स्याद्वाद के गमें को समझे और परस्पर प्रेम का विस्तार करके जैनआसन को शिवत सम्पन्न बनावें। स्याद्वाद का ग्रामीघ कवन हमें मब विरोधों के प्रहार से बनावेगा। इस महान् रसायन से पुट हो हर आप विषय में जैन-शासन की बैजयन्ती फहरी सकेंगे।

आत्मवाद और कर्मवाद :

आतम-करयाण के अभिनापी मुमुक्षुओं को आहमा और कमें के स्वस्प को भलोभानि समझ तेना चाहिये। जैन द्यांन में आत्म तत्व की गहरों विचारणा की गई है। आहमा का स्वस्य बनाते हुए कहा गया है - यः यक्ती कर्मेश्वानां गीका क्रमंप्रतम्य च । मंगकी परिनिर्वाता महात्मा नात्म सक्ष्यः । श्री श्रीमक्ष्मगीकी म (शास्त्र पातां समुख्यम)

जैन शास्त्रानुसार जणका हमी का कार्य है और करे-यात का भोषता भी है। यह भवनतर में श्वस कार्ने कार्य और कार्यनस्य से सुरुष शाने कार्य भी है।

मारव दर्श अपना की गुमान बहुम्य मिला कान्य है। में मुक्त विकास साहित अमें दिया का लाज की ल है धारत्य वह प्राध्या का पर र्या गापा है र प्याप मिद्धानानभाष व्यवस्ति हार्षा है और आवा भाषा है । यन्त्र मील भी धर्मी वह रूप है स्थान का मार्थ है पन अस्पून 可使 化甲基亚磺胺 数据的 医鳞 电人电路 斯特奇 形层性的 करहेबत हुन के के के के के के के के कि मान के कि के के कि के के कि के कि होता है। साम्य प्रधा देश करते हैं और हाम का अफा क की यह अनेवह दिन्द अपनेव प्रविक्त भी दिन्द है । सन्दर्भ हैं गाह राष्ट्रव्य संदर्भ तक साथ कार्य कार्य के ये जायाँ के रेश्व ही अवस्थ है और ने बोलरान र इंगी, पाल "सरी यह से लगान है 사실도 및 확인하는 도둑하는 3월 등은 음반 외복 경우 되는 는 중까요 나는 작년을 व्यक्तिक प्रदेश के सेन जवारित केन के क्रिकेट के जाती की कार नु हैं। १९७०, क्रांक्लप्रसम्बद्ध और प्रतिह समय जात है। पह ल द K to a x of the motion for a month of the repetition on 铅好更多

बीद्ध दर्शन एकान्त अनित्यवादी-क्षणक्ष्यवादी दर्शन हैं। उसके मत से प्रत्येक पदार्थ क्षण क्षण में सर्वया नष्ट होता रहता है और नया नया उत्पन्न होता रहता है। यह अनात्म-वादी दर्शन है। यह मान्यता भी विचार की कसीटी पर सही नहीं उतरती है। ऐसा मानने पर स्वर्ग-नरक, वध-मोक्ष की और लेन देन की ज्यावहारिक ज्यवस्था भी नहीं बनती है। क्योकि यदि प्रथम क्षण म हो पदार्थ नष्ट हो जाता है तो जिस पदार्थ ने किया की वह उसका फल भोगे विना ही नष्ट हो गया और जिसने फल मोगा उमने वह कर्न किया ही नहीं । जिमने दिया और जिसने लिया वे दोनो यदि क्षण में सर्वया नप्ट हो जाते है तो देने लेने वाले दूपरे ही हो जाते हैं । जिमने लिया नहीं उमे देना पड़ता है और जिसने लिया वह उसी क्षण नष्ट हा गया ' यह सारी अव्यवस्था हो जाती है अत कृतकर्म का प्रणाश और अकृतकर्म का भोग दोप होने के कारण क्षणमगव.द मानना ठीक नही है।

जैन दर्गन दोनो एकान्तवादो का निराकरण कर सम्यक् सभावान वर देना है कि आत्मा द्रव्य की अपेक्षा नित्य है और पर्याय की अपेक्षा सिन्य है अनिएव वह परिणामी नित्य है। ऐसा मानने में हो लोग-परनाक, वर मोक्षा, लेन देन जादि की सारी ब्यबस्या मुचार कर में समन होती है।

जैन दर्गन का नमेंबाद की प्रमाणागेत और नकी समात है। वह कहना है कि समार के विविध्या का कारण कमें हा है। सामानी राज्या हिये कारे करे छन या करन नर्म त मेमार प्रभूत -देश के का छाउँ। जान राज अपर काम जा सिर्भाति । यह स्वयं प्रभी ए यन्त्रम से पट प्रमाणकारि मिसिंगे के काला है और प्रमां ता मन्दर का करने प्रकल प्रयार्थ में बोहुबन भक्त की यन जाता है। कोई द्वार दाहिए थ त्या को मुन्ती पर दत्या गर्ना उत्तर महत्व । किमा क जाव मे क्षा भीर किया का करदान में सुधी नहीं हुए सर एए। छहा की बिद्धा न जाता हो नागाव करते हैं। प्रता प्रान करण हैं । ब्रह्मसं कर परमुप्तिपेदरी, परपन्न, पीन्दरीप संगानित एत् मधे सम्भु सहित्रसम्बे नाम स्वा है। नाम रहा रह वह सम्भ व्याप इत् में स्थाप साम साम स्थाप में वह प्राप्त मार्की की विषय नाम देश हैं, जन्म पहल्ला कर प्राप्तन सुनाह, रेक्षण होर संस्कृति देश छ गा है। इत्ते रेक्क्सण लंब जात्राह प्रथात भीत भीत भगाता है । इस मान में हैं है । यह प्रश्ना है and is tagen time ein Grand ber mane in einelle im nable Enter the Man Law of the 19 and the to talk the talk we about him had now by male as the rate . There to be my begin to 如此者 我自 外外 節 好其 生之事 5 1 mm 如其 4mm 如此 4mm 如果一一种一种大型的 一种好 · 1267 我下上一部門 不無人 在代本 不要 多为 سه مومدي و ايند د ته موجه ، چ ي شواد څ مدواد، وي بردرودي پرهو و څ A THE POLICE AND A CANGE PARTY AND A STATE OF A REST OF A

इन तोनो को सम्यग् विचारणा और सम्यक परिणित ही सर्वोदय है।

श्रातमा का स्वरूप जानकर मुम्क्षु श्रात्माओं को सब प्रकार की हिंसा और कर्मबन्धनों से विरत होना चाहिये। ससार के सब प्राणियों को आत्मवत् समझ कर किसी की मनमा, वाचा, कर्मणा दुख न देना अहिमा है। हमें सुख प्रिय हैं, दुख अप्रिय हैं, जीवन प्रिय हैं मरण श्रप्रिय हैं। इसी तरह सब प्राणियों को सुख और जीवन प्रिय हैं, दुख और मरण अप्रिय हैं; ऐसा जानकर हिंसा में निवृत्त होना चाहिये। सब जीवों को आत्म-तुला पर तोलो। यही परम धर्म हैं। यहीं तीर्थंद्धर देवों के उपदेश का सार हैं। कहा गया हैं —

एवं खु गागिगो मार जं न हिंसइ किंचण। ग्रहिंसा समयं चेव एयावंतं विजागिया॥

ज्ञानी के ज्ञान की सार्थकता इसी मे हैं कि वह किसी प्राणी की हिमा न करे। अहिमा ही सब सिद्रान्तों का सार है।

सार है .

अहिना और स्याद्वाद ने उपदेप्टा तीर्थ पुर देवो ने

पट् आटान्हिका कही है। पहित्र कहा जा चुका है कि आसीज
और चैत्र माग की अप्टान्हिका कापवती है। उनमें देव श्री

नन्दीकार द्वीप में जाकर भव्य और दिव्य महोत्यव की

आयोजना करने जिनेस्बर देव की बहुमान एवं मिल पूर्वक

पूजा-जाराजना करने है। मनुष्य दोक म श्रावक-शाविकाल

मार्सित सप् करने सिद्ध चण की गृथ नव १४दी की समार-राधना कामों है।

द्यवपत् निरुपणः

कर-त, निद्ध, त्यावार्य ज्यापाय तीर नामु म पत-पर्काण्या बर्जाते हैं। ज्ञान, दशन, व्यान्ति और तय-व व्यान मोग के प्रचान जम होने के कारण दशम उपादय है। केंगा विकास महा है-

सामं च दममं सेव चित्रं च नवी नहा। एम मम्मो चि पम्लमो जिल्हेरि चर्चेमिटि ॥

प्रकार काची प्रवेश-सर्वेदार्थि क्रिकेटक देवी के ज्ञान-प्रवेश कारिक कीर सप्त्री मोध्यसमें कर है। प्रकार प्रकार भीर बार सोधा के अगा यो सम्बद्ध कीते हैं कार कर्याट प्रका साम्बिक हैं (इनकी सामायण सें बार करणणणाहिल्ला है)

त्रस प्रशेषाणे ह्यारे प्रस्य आवश्या है व सार्व श्रम मणाय हेन प्राप्त साम है के पा सन ज्यारण रणीन प्रस्त साम है के पा सन ज्यारण रणीन प्रस्त साम है जिया है सार्व साम है के पा सन स्थारण रणीन प्रस्त है जिया है सार्व साम है जिया है सार्व साम है जिया है के साम है साम है साम है साम है है साम

अन्तर्गत है। आचार्य श्री हिन्मद्रमूरि ने इमीलिये कहा है-

भववीजांकुर-जनना रागाद्याः चयमुरागता यस्य। ब्रह्मा वा विष्णु वी हरी जिना वा नमः तस्म ॥

अर्थात्-भव रूपो वीज के अहर उत्पन्न करने वाहे राग-द्वेप आदि जिनके क्षय हो चुके हैं उन्हें मेरा नमस्कार है फिर भले ही वह ब्रह्मा, विष्णु, शकर या जिन हो।

कितनी उदारता है इस पच परमेप्ठी-पद में

उनत पाच पदो मे अरिहन्त और मिद्ध अनन्त केवली ज्ञान के स्वामी होने से ज्ञान के प्रतीक है। आचार्य चारियान चार के धनी होने से चारिय के प्रतीक हैं। उपाध्याय सूयन मिद्धान्त के पाठक होने मे तथा धमं से डिगते हुए प्राणियों को स्थिर करने के कारण दर्गन के प्रतीक है और साधु भगवन्त तपाचार में निष्णात होने से तप के प्रतीक है।

अन्य विवक्षा में इन नय पदों का देव, गुरु, धर्म में समावेश किया जाता है। अरिहन्त और सिद्ध पद का देव में, आवार्य, उपाध्याय और साधु को गुरु में और जान-दर्शन चारित्र-तप का धर्म में समावेश हो जाता है। प्रिन्हित्त मुक्ति के मार्ग दर्शक हैं, सिद्ध मुक्ति मार्ग पर नक्तर मजिल पर पहुंच चुरे हैं, आवार्य मुक्तिमार्ग ने पियकों के नेता है, उपाध्यायती मुक्तिमार्ग के शिक्षादाता है और साधु-मुक्तिगत्र हाथ पर ह कर मित मार्ग पर अथगर नरने ता है। हन परम उपाननं, महा शामाणाशा पन परनेष्ठो भगपता हो माराधना यो श्रापन हाटान्द्रिया में में मिन्द्रभगपता हो माराधना यो श्रापन हाटान्द्रिया में मिन्द्रभाष प्रदेश मा लाही है नाशि लगश्ये भारम प्रदेश मारा गह्य भा
निल्हों पर स्वयन अपने परम और जन्म मारा गह्य भा
निल्हा सह सह ।

सद प्रस्मृत नाम्या प्रतिशिक्ष से कार्य परिया परिवास प्राप्ति का कार्य के सार प्राप्ति कार्य कार

पांच राजक्षा है

्रे र प्रेस पर प्रकारित है। ये प्रकारित है। का कार्य है। ये प्रकार विकार के प्रकार कार्य में, में प्रकार कार्य में कार्य कार्य के कार्य किया के प्रकार के प्रकार के कार्य के कार्य विकार कार्य कार्य के कार्य के प्रकार कार्य क

इ.क.र. १९५१ हुए जिल

t , I provide muse a

S . MINY THE BOW WHI

مين پاهند پير سي واچ ي

अब फमरा इन पाच कर्त्तव्यों के विषय में विस्तार से प्रकाश डाला जाता है ताकि इनके सम्बन्ध में विशेष जान-कारी हो सके और इनके आचरण का मार्ग प्रशस्त वन जाय। अमारि – प्रवर्तन:

विशव में सर्वाधिक त्रिय वस्तु अपना प्राण है और सर्वाधिक अप्रिय वस्तु मीत है। ससार के सब प्राणी—चाहे वे वस हो या स्थावर—जीवित रहना चाहते है, मरना कोई नहीं चाहता। प्राण सबको प्रिय है, मौत सबको अनिष्ट है। इम वास्ते प्राणरक्षा रूप अहिंसा सबमें बड़ा धमं है और प्राणाति—पात—हिंसा सबसे बड़ा पाप है। इमलिये ग्राचाराम सूत्र में तीर्थं द्वु,र भगरान् ने फरमाया है,

"से वीम जे छाईपा, जे य पहुपन्ना, जे य छागमिस्सा छरहता भगवंतो, ते सन्वे एवमाइक्खंति, एव
भासति, एवं परणाविति, एवं परुविति-सन्वे पाणा. सन्वे
भूया, मन्वे जीवा सन्वे सत्ता, न हंतन्या, न छन्ना—
वेयन्या, न परिधित्तन्या, न परियावेयन्या, न छद्वेयन्या।
एस धम्मे, सुद्धे, निइए, मामए, मिम्न लायं स्वेयन्नेहिं
प्रोह्में।

पन्ता अर्थात्-मृतकात में जो अनन्त तीर्यक्रर हो चुके हैं, वर्तमान में बीम विहरमान तार्यक्रर है और जागामीकाल म अनन्त तीर्यक्रर होग वे सब ऐसा बहते हैं, ऐसा बालों है, ऐसा बतुत्राते हैं, एसी प्रमाणा गरते हैं कि डान्ट्रिय अपन्य सन्तर प्राणियों को, यनस्वतिकास कार भूषी को, प्रेमिस्स जीको का जीव पृथ्योकास कादि सम्पर्ध को सावना नहीं चार्विस, इन पर आगा नहीं चारामी (यक्षण नहीं गाम्पादा) चार्विस, इन्हें देश की उन्हें नहीं रम्सना चाहिये, उन्हें पश्चिम नहीं देश चार्विस, और जनका कम नहीं करना चार्विस । सर्ग मुस् हैं निष्य , है, साइसर है। नान् के प्राथा का दशा जानकर क्षीप भगवानु में यह चार्तिसामय सर्वे प्रकृतिन किया है।

. आतिकत रहता है। दूमरों की हत्या करन वाला स्वयं किसी का शिकार होता है, वैर से वैर की परम्परा बढ़ती है और भय से भय की वृद्धि होतो चली जाती है। अभय से अभय की परम्परा बढ़ती है। अन् एवं स्वयं की म्रक्षा और निर्भयता के लिये भी दूमरों की रक्षा और अभयदान देना हिताबह है।

श्रभयदान को महिमा बताते हुए कहा गया है -

दाणाग सेट्ठं अभयप्ययागं सच्चेतु वा अग्रवन्नं वयति । तवेसु वा उत्तम वंभचेरं, लोगुत्तमे समग्रे ग्रायपुते ॥

मब दानों में अमयदान प्रवान है मत्यों में निरवद्य ववन प्रधान है तप में प्रह्मचर्य उत्तम ह और लोक मृश्रमण भगवान् महावीर देव सर्वोत्तम है।

धनदान, अनदान, पानदान, औपधदान, जानदान, मृपाय-दान आदि समस्त दानों की अपेक्षा अभयदान सर्वश्रेष्ठ है अप्रय-दान मूल है और भेपदान उसकी रक्षा के लिय वाड के समान है। अनदान, पानदान आदि दान का अभाव वाणिक होता है। कालान्तर में वह क्षीण हा जाता है। ज्ञान दान की साथकता अभयदान में हो है। '०य रमु गाणिना सारं जंन हिंसई कंचगां' जात की साथकता अस्यदान के नारण है। सुगाय दान का महत्त्व भी अभयदान में ही है। अभयदान के दाता पद्गाय क रक्ष माधुहा ता सुगाय है। अभयदान के सामने कोडि-स्वण का अस्यदान की नाएप है। मारे जो हुल जाणी का स्वण का अस्यदान भी नाएप है। मारे जो हुल जाणी का स्वण का अस्यदान में जीवनदान में काड एक की ज निरंदी नहां नाम हा यह बराग रागी गुणाएं राष्ट्रण नापन्यान ही तिना प्रमुखन्या १ इपन अमप्रधान के, मरेश्र निर्माणी जाना ति ।

परमार्थत कुमारपाठ राजा का अरच कार्यन :

समानि, समाप्रशंस किंद्रा की स्था, नवला, किंद्र्या, समाप्रभाव की सम्बद्धि स्थान ने स्थान के का का का का किंद्र की साम भागवान है से का का किंद्र की साम भागवान है से का किंद्र की साम का का किंद्र की को साम का भागि के स्थान की साम का भागि के स्थान की साम का भागि के स्थान की साम का भागि की साम की साम का साम की सा

See to the time and the section of t

होते जा रहे है। पानी छानने का वस्य कज्मी से या उपेक्षा के कारण चाहिये वैसा गाढा और छेद रहित नहीं हें^{गता।} गलने में छेद पड जाते है तो भी उमी से काम निकाला जाता है। उसे बदलने को तरफ ध्यान नही जाता । इमी तग्ह घर की सफाई के लिय रखो जाने वालो वहारी मुलायम हो^{ना} चाहिये ताकि उससे ज वो की विराधना न हो। परन्तु आज-कल शावक-शाविकाएँ खोडे की बुआरी प्रयोग में लाते हैं. यह भयकर भूल है। खोड़े की बुहारी वापरना घर को कत्ल-खाना बनाने के समान है। आजकल : श्रापलोग अपने गरीर को पौछने के लिये तो टिकिश टुवाल जसा नरम और मुलायम वस्त्र का प्रयोग करते हैं, टेरेलीन के मुलायम वस्त्र पहनते हैं और दूसरी तरफ लोडे की बुहारी का प्रयाग करते है यह कितनी अविवेकता है। घर की मकाई के लिये मुलायम मुज की बुआरी, सन की याऊन की पूजनी से काम लियाजा सकता है।

शास्त्रकारों ने फरमाया है कि यदि श्रावक-श्राविकाएँ उग्रोग, विवेक और यतना से काम ल तो वे बहुत से पाप में वच सकते हैं। विवेक और उपयोग के श्रमाव में गृहस्य का घर जीवों का वध-स्थान बन जाता है। पहले अमावधानी गदगी या प्रमाद के कारण जीवों की उत्पत्ति के प्रति ध्यान नहीं दिया जाता है और उत्पत्ति के बाद छों छो छो। विवेद या अप गरम औपधियों का प्रयोग कर उनकी विवेद में अप गरम औपधियों का प्रयोग कर उनकी हिमा की जारी है। यह किनना अधिक के प्रविक्त

मिलिक्स निर्देश करवार प्रायम का क्षर अवस्थार करता जीत रिता पाल दिला करवा प्रायम का प्रायम है। घीटा करते रित्त भूगत काल्या आधिक पाले एवं के ग्रीम करवा, मध्ये का मिलिक्स के प्रायम निर्देश के प्रायम निर्देश का कर्मा कि प्रायम निर्देश का प्रायम निर्म निर्म का प्रायम निर्म का प

स्था प्रकार के भारत कराया में प्रकार के प्रकार के स्थान के स्थान

का भी वन देवन प्रमान्याम को अपूर्ण का अपना देवन प्रमान्याम को अपूर्ण का अपनाम देवन प्रमान्याम को अपूर्ण का अपनाम देव व व प्रमान भी वार्ष्ण मुन्ति, स्वत्र करी स्व व प्रमान भी वार्ष्ण मुन्ति, स्वत्र करी स्व व प्रमान भी वार्ष्ण मुन्ति, स्वत्र करी स्व व प्रमान भी वार्ष्ण मुन्ति का स्वत्र क्षेत्र का स्वाप्त का

ইংলাফ্সিটা হাস হাঁনি গোলুদি। শিক্ষা সংগণ প্রাধান্ত ইংলি গোলাগোলানাম্ভ নে লোক অফালা ওও বন আলি ও কিন্দিন স্কুলি সংগ্ৰিষ্টা

超级条件性的特殊者的 经收益

 जीवन प्रदान किया, राज्य भर मे करुणा का विस्तार किया और जैन-शासन को महान् प्रभावना की। सूरि-सम्राट और मुगल मम्राट् के सम्पक्तं मे निमित्त बनी हुई सुश्राविका चम्पा विहन का शुभ नाम भी इन पवित्र दिवसो में स्मरण आये विना नहीं रहता, जियने अपनी छह मास की कठोर तपश्चर्या और विचक्षणता से श्रकवर बादशाह को अत्यि धिक प्रभावित किया इसी चम्पा विहन के द्वारा गुरुव्यं श्री हीर सूरिजी महाराज का गुणगान सुनकर अकवर बादशाह ने उन्हें आदर पूर्वक आमित्रत किया और उनके दर्शन एवं धर्मश्रवण से प्रभावित होकर अभयदान का प्रवत्तंन किया। वह घटना इस प्रकार है —

सुश्राविका चम्पा बहिन महा तपम्बी थी। बहै तपिस्वनी होने के साथ ही साथ मार्ग की ज्ञाता भी थी। उसने छह मास के लगातार उपवास की महा तपदवर्षा की थी। इतनी लम्बा तपश्चर्या इसके बाद किसी और ने की ही यह मुनने में नहीं श्राया।

एक बार चम्पावित दर्शन के लिये जा रही बी तब मब भी महोत्सव पूर्वक साथ में जा रहा था। वरघोड़े का द्रयं वड़ा मनोहर और भव्य था। सफल श्री सन, बह बड़े अगगण्य किता और विद्याल निसमूह का चल-गमारीट (जुलूम) के त्रव में एक वित्त को घमप्राम के साथ सल्मान पूर्वक ने जाते हुए देन कर सहज हो प्रत्येक यो उसके पति खाल्येंग टा जाता था। महा द्र प्रत्येक ने भी यह नुग्न देता और उसका ल्यान था।

विधि-विधान की समुचित व्यवस्था कर दी गई। वादशाह को विश्वम्त व्यक्ति उसकी दिनचर्या का सावधानी पूर्वक अव-लोकन करते थे और वादशाह को खबर पहुँचाते थे। अपने विश्वस्त व्यक्तियो द्वारा जाँच करा लेने पर वादशाह की ग्रका का निवारण हो गया। एसी कठिन तपश्चर्या को देखकर वादशाह का हृदय हिल गया। एक दिन मूखा रहना कठिन होता है वहा लगातार छह मास तक गरम जल के मिवाय कुछ भी न खाना न पाना कितना वडा कमाल है। कितना अदमुत पराकम है। वादशाह के हृदय मे चम्पा वहिन के प्रति बहुत बहुमान पैदा हुआ। उसने बहुत सन्मान पूर्वक उसे बुलाकर पूछा कि-'इतना कठिन तप तुम किस के प्रभाव से कर सकती हो?'

चम्पा बहिन ने उत्तर दिया—'यह महिमा मेरी नहीं परन्तु मेरे देव और गुरु की कृपा का परिणाम है।' हमारे सब में देव और गुरु का स्वरूप रस प्रकार कहा गया है। देव गुरु का स्वरूप बताने क परनात् उसने कहा कि ऐसे गुरु वर्तमान में श्राचार्य मगवत श्रीमद् विजय हीर सूरीस्वरजी महाराज है।'

यह मुनतर बादशाह क मन में ऐसा विचार हुमा वि-भीतन गृर के नाम-स्मरण मात्र से यह बाई इतना कहिन तर धैर्ष पूर्वक प्रमानवदन रहकर कर सकती है, उन गृर के दर्शन मृते अनस्य करना चाहिये। भागार ने प्रत्या दाव के नामा दिता का सीने का मुंग के किया ने मान मान के मान कामा मुद्रा प्रत्य गर्म प्रत्य के किया ने मान मान के मान कामान प्रत्य की नीत सुद्रिकी में के प्रत्य के मान के मान सुद्रिकी में के मान के मान में कामा के मान के मान के मान मान किया के मान के म

प्राचित के प्रत्य के प्रत

महाराज को हैरान-परेशान किया था। उसे मान हुआ हि मिने उम समय कितना वडा अपराध विया था। उसने उम प्रसग की स्मृति दिलाते हुए ग्राचार्य महाराज मे क्षमा मागते हुए कहा कि-'मैंने तो आपके प्रति पूर्व मे वहुन ही अमद स्यवहार किया है किन्तु आप उसका ध्यान न करते हुए मुझ क्षमा करे और मेरा कत्याण हो एमा कीजिये।'

आचार्य हीर सूरी ज्वरजी महाराज ने कहा — 'इस समय तो क्या, उस समय भी हमारे हृदय मे तुम्हारे प्रति जरा भी असदभाव नहीं आया है हम सब जीवों का कल्याण बाहते हैं, भले ही वह हमारे प्रति श्रद्धा रागे या असद्भाव रखें। हमारे मन मे किसी के प्रति विद्वेष श्राता ही नहीं। हमने उस नमय भी तुम्हारा कल्याण चाहा और इस ममय भी कल्याण चाहते हैं। जैन साधु मारने वाले और पूजने वाले—दोनो पर समभाव रहते हैं।

े इस उत्तर को मुनकर सूवा बहुत ही प्रभावित हुप्री और उसने बादशाह श्रुक्वर को लिसा कि-'फकीर तो बहुत देखें है परन्तु अवतक इनवे जैसा फकीर देसने मेनही आया।

ययात्रम विटार करते हुए आचार्य भगवत फतहपुर पद्मारे जहाँ बादशाह या । वटों के सब ने भन्य स्वागत विया। वहां जाता है कि स्वागत का जुन्म छठ मील तस्वा धा। मझाट् अवचर ने सूरि मझ ट्या शानदार राजकीय स्वापत विया। अमीर-उमराव मामने गय। बटा ही जान-दार क्षेत्र था वह ! साम की बीत मुनियों मानुष्या पान तम में पान नाम नाम नी विकास में पान नाम नी किया में पान नाम निया में पान ने मान नाम निया में पान ने मान ने मान नाम निया में पान ने मान ने मान ने पान ने

を対象を表を とう とうとう こうない 動を を対象をもの から という でんかった かっぱん を かっぱ こっぱん なりま イニーン いる ロールン シン 「ない 前 いる からな しゅっ まま よいか スタイル ニー・ ない ・マルード・ これがな 「そ ド アーン しまが かいかん かかいがら 「から だっぱいから まれい」 「は 私 から かっ

マン、ハロ から、これ、 12 mm から 12 mm から 12 mm かっと 12

व्यक्त कर सकते मे उसने वहुत प्रमन्नता मानी थी। यह भी कहा जाता है कि वह १। सेर वकरे की जीभ प्रतिदिन खाता था। इतना हिंसा प्रेमी मुगल-शासक आचार्य भगवत श्री हीर-विजय सूरी व्यवरजी म. के सम्पर्क मे आकर किस प्रकार द्यावान वन जाता है यह उसके जीवहिंसा निप्रेव सम्बधी फरमानों से विदित हो जाता है।

एक बार सम्राट् अकवर ने गद्गद् होकर ग्राचायं महाराज से निवेदन किया कि-'मेंने प्रापको वहुत दूर देश से प्रामित कर बुलाया, आपने पधार कर मुझे कृतकृत्य किया, धर्मोपदेश के द्वारा सही मार्ग बताया परन्तु आपने मेरी कोई चीज श्रव तक अगीकार नहीं की है अत कुछ भो मांग कर आप मुफे कृताथं कीजिये।"

वादशाह के आगह को देगकर श्राचार्य महाराज ने अवमर पाकर कहा 'हमें किसी भौतिक पदार्थ की हामना नहीं हैं। हम तो यही चाहते हैं कि जगत के सब जीवों का करमाण हो। तुम्हारा भी बत्याण हो और जीवों का भी करमाण हो। दमलियं तुम्हारे पूरे राज्य में जाब-हिसा का निषेध होना ही चाहिये। बम यही हमारी एक माम है।'

फतहपुर के नानुमीम में आचार्य महाराज न बादमाह को पर्युपणा क खाठ दिन जमारि का उपदेश दिया। आनार्य महाराज की निम्पृहता और दयाठ्वा देगानर उपने तत्काल 'जाठ दिनम मापने और वार हमारा वरफ के यो चारह दिन का स्थाप्र-प्रथमित भी अन्यको समितिय नामको है है निया जिल्क जिन्न सारी कार्य भी स्थाप्रण प्रमान के भी नियम कार्य- कि मार्थ प्राप्त प्रकार के कि नियम कार्य- कि मार्थ प्रप्त प्रकार के कि मार्थ मार्थ प्रकार के कि मार्थ प्राप्त के कि मार्थ के कि मार्थ कार्य के कि मार्थ के कि मार्थ कार्य के मार्थ के कि मार्थ कार्य का मार्थ के मार्थ के मार्थ मार्थ के मार्थ मार्थ के मार्थ मार्थ के मार्थ के मार्थ मार्य मार्थ मार्थ

 हो सके, करना चाहिये। यह स्व-पर कल्याण का अमीष साधन है ग्रहिंसा भगवती की ग्राराधना इहलोक परलोक में परम मगलकारी है।

साधर्मिक वातम्हयः

श्री पर्युषण-पर्व के पात्र सत्वर्त्तव्यो मे से दूसरा सत्कत्तं व्य साधिमक वात्मल्य कहा गया है । ''समान धर्मी येपाते सार्थिमका 'अर्थात् एक ही धर्म के अनुयायी परस्वर मे साधिमक कहलाते है स्वधर्मी वन्धुओं के प्रति प्रेम, वात्मल्य, बहुमान तथा भिनत होना साधिमक वात्सल्य कहलाता है। धार्मिक और सामाजिक दृष्टिकोण से साधिक वात्सल्य का बहुत अधिक महत्व है। सघरचना और सघ की दृढना मे इस अंग की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। सप की महनीयता इस वात से स्पष्ट है कि उमे शास्त्रकारो ने भगवान्' कहा है तथा नन्दो-सूत्र के प्रारभ में विविधि शुभ उपमाओं द्वारा सघ की स्तुति का गई है। "न घर्मों धार्मिकैविना" इस उनित से भी सद्य का महत्त्व प्रतिभासित होता है। मघ के अन्तर्गत साघु-साध्या-श्रावक-श्राविका का समावेश होता है। इस चतुर्विध सघ की सेवा- शुश्रूषा करना, परस्पर में सद्भाव, स्नेह और बट्टमान रसना, भितन करना और निष्काम प्रीति न्याना पारस्परिक मीहार्द रति हुए एक दूपरे की सह यता करना सापिमा-वाह्मत्य है। इस अग की श्रारायना उरने से ट्राइय में धर्म के प्रति श्रही बडती है, दर्शन की शित होती है, हदस में प्रति श्रही जाती है, अल्ब करण में मुक्तेमल प्रतियों का विद्यालना जाती है, अल्ब करण में मुक्तेमल प्रतियों का

क्षेत्रसम्बद्धाः भरते । प्रदेशमधः १ ५५,३४४ मण्यस्य सम्बद्धाः स्थानः वे प्रदेशसम्बद्धाः भरते । प्रदेशमधः १ ५५,३४४ मण्यस्य सम्बद्धाः स्थानः

महिर्देश प्रदेश प्रदेश प्रतिकार में के प्रतिकार प्रतिकार के प्रति

報告になる 中間 なる 対域のないか 一下 今年から 計量と、数は当ている 大型をなべる 一切 にっていない であってん をはまりまではっている 大型をなべる でかってんい であってん ではまります。 あってませいでは、 かず (4) で か (4) でん ではほうしょうない (一部) でありませいました。 なん (4) でん かまってる ではなから かん (4) でん (4) でん たまってる (4) ではなから かん (4) でん (4) でん になる (4) でん (4) でん (4) でん (4) でん ではない (4) でん (4) でん (4) でん (4) でん (4) でん ではない (4) でん (4) でん (4) でん (4) でん (4) でん वात्मत्य करन से माधिमक द्वारा ग्राचरित सभी प्रवार के धर्मों के सेवन का लाभ प्राप्त किया जा मकता है। इमीनिये एक तरफ सब प्रकार के धर्माचरण हो और दूमरी तरफ केवल साधिमक वात्सल्य हो तो भी उमकी ममानता वताई गई है। कितना प्रधिक महत्त्व है साधिमक वात्सत्य का ।।

अपने कुटुम्नियों का,पुत्र-पुत्रियों का और मगे-सविधियों का घ्यान रखना कीन बड़ी वात है। यह प्रवृत्ति तो तिर्यनों में भी पाई जाती है वे भी अपनी सन्तान के प्रति ममता- शील होते हैं। उनमें भी मोह-ममता देखी जाती है। मानव की विशेषता इसी में है कि वह मोह-ममता से ऊपर उठकर, स्वार्थ के सकीएां दायरे से निकल कर, परिवार क घेरे से वाहर आकर साधिमक बन्धुओं पर निष्काम प्रममाव रहीं और तन-मन-धन से जरुरतमदों की सहायता करे। धर्म के प्रति जितना प्रेव होगा उतने ही अनुपात में मार्थिमकों के प्रति बहुमान होगा जितना बहुमान होगा उत्ती के अनुपार भित्त होगी। अपने इकलीते पुत्र पर जितनी प्रीति होता है उससे भी अधिक प्रीति साधिमक के प्रति होनी चाहिये।

भरत चक्रवर्ती का साधर्मिक वात्सल्य:

इस अवस्पिणी कात में सर्व प्रथम साधिनक वात्सत्य करने वाल भरत चकवर्ती हुए। उनका उदाहरण मननीय और आवरणीय है। विवारित प्रकृषि भाषाकार प्रान्त समेष उत्तरका अहस वह तुष्पर कार प्राप्त काईड प्रान्त स्थित तथा तथा व ला प्रान्त आग्रात तथा पृष्ण पूर्ण भाषा प्राप्ताचा प्रत्य विवास का प्राप्त का स्थापत हैत का स्थापत प्राप्ताची का स्थापत व स्थापत का स्थापत का

श्वादिमं पृथ्योनाष्ट्रः कादिन निष्मित्रस्यः शादिनं शिर्वेनावत्रः स्टालस्यानिन न्युनः ए

अके ब्याम के दें मुक्तारक र र संघर पर प्राप्त कर मान 통과적당: vs ex 건(파) + 통급통4성당전 먹이본과 또는 백건까다# 작모 囊腺性病 品的名词名 额 医毛斑囊 建液体 人名 化原物 化二烷化二烷基 超 學者 我没有好的 未可有主义者 电电影 學工 电对比 医二甲甲二二甲二甲醇类 實際 all the state of the first of the contract of the state of the 李 网络艾生 地类花虫 计一种 化二氯 化二甲酰胺 医二甲甲甲甲酚甲酚二甲甲甲甲酚 with the second of the second 对针 那一世的难以自身治疗 我们 投 化重大 人物人們能行為主 end the first winds a support with a min or fight o がらなます。 ま ままかん 能士 (PE) 17 M ³42 で ぎゅ うごな しゅ(中央 しご 经有效的 化电极 医红斑 斯斯 福斯特 农 化毛花醇 磷 指于大人 美国共产品 李宇在李 安二十年 一十八年 秋月五日 唯日 九年 五五年 成七 日十二 Retain to the sections the feature of the feet that you will have the first the when you a grand of he free has been the first the first the first that the first the

छह खडो पर भरत ने विजय प्राप्त कर ली। चिन न्त्न द्वार पर आकर एक गया। चक्रन्त्न अन्दर नहीं आ^{या।} कारण ज्ञात करने पर विदित हुआ कि भरत के छोट भा^ई वाहुविल ने अधीनता स्वोकार नहीं की है अतः विजय अपूर्ण होने से चकरत्न अन्दर नहीं प्रवेश कर रहा है। भरत ने वाहुविल को अधीनता स्वीकार करने के लिये कहा। वाहु-विलिजी मे अपरिमित शिवत थी । पूर्व भव मे उन्होने माधु-मुनिराजो की खूब वयावृत्य की थी जिसके फलस्वरूप उनमे म्रपूर्व श'क्त विद्यमान थी। वाहुबलिजी ने भरत की चुनौती स्वीकार की । दोनो का द्वन्द्व युद्ध हुआ । ९६ करोड सैनिको का अधिपति, वत्तीस मुकुट वद्व राजाओ का सिरमीर भ^{रत} बाहविल के पाव को तिलमात्र भी नही खिसका सका। इस प्रकार पाच युद्धों में भरत की हार हुई। खोझ कर भरत ने चकरत्न छोडा परन्तु उसका बाहबलिजो पर असर नही हुग्रा क्योंकि चकरत्न का अमर एक खून वाले अपने संबंधियों पर नहीं होता। इसी बीच सहमा बाहुबलिजी की विचारधारा मे नवीन मोड आ जाता है। ज्यों ही उन्होंने प्रहार के लिये मुट्ठी उठाई त्यों ही भावना परिवर्तित हो जाती है । वे सोनने लगे-भरे विताजी ने दीक्षा ले ली, मेरे ९८ भाइयों ने भी दीक्षा ले ली, मैं राज्य के लिये अपने वहें भाई का प्रतीकार कर रहा हूँ, यह उचित नहीं है। यह मोचने ही उन्होंने उस उठी हुई मुट्ठी में ही बालों का लोच कर लिया और दीकित हो गये।

इस प्रवास करण करण हैं तो मण तमें तम्बू स्वयं पूर्व एसने वस्तुनों के विद्यान में इस में आन्तुन एस प्रेरितन क्षेत्र वाप्त करते क्षेत्र विकास प्राप्त कारने बाला व्यप्तवर्धि विकास क्षात्र करते की देशित को तुन् सपने भारकों सामने व्यक्षी के वश्चार की स्वाक्त का श्वास्त्र भी एपने लावको साम्ब्र द्वार सर्वाप समा का साम है-

> त्रा नददसे महस्यारी मेशामे कुण्डंचे जिले । एम् जिलेज्य मानानी, एम मी पर्को नकी॥

मार्स हाम क्षेत्र के लाहात के मान एक महिला है प्राप्त कर में महिला के मान प्राप्त कर मान कर म

के राज्य की तिनक भी वाछा नहीं करते। वे तेरे भोग-निम-त्रण को स्वीकार नहीं करते हैं।'

यह मुनकर भरत को निराशा हुई। उमने मन में सोचा—'मेरे भाई भोग स्वीकार नहीं करते हैं परन्तु मेरे हारा दिया गया आहार तो ले ही छेगे। यह विचार कर पाव सो गाडों में विविध खाद्य सामग्रो लेकर भरत भगवान के समीप आये। भगवान् में प्रार्थना करने लगे—'प्रमो, ग्राप सब मुनिराज यह श्राहार ग्रहण कर मुझे कृतार्थ करे।'

भगवान ने कहा—'भरत, मुनियो को इस प्रकार की श्राधाकर्मी (उनके निमित्त से तैयार किया गया) और सन्मृत्र लाया हुआ आहार नहीं कल्पता है। इसलिये यह आहार हम ग्रहण नहीं कर सकते हैं। राजिपण्ड भी मुनियो के तिये अकृत्पनीय हैं।

यह मुनकर भदिक ह्दय वाले भरत विद्वल बन जाते हैं। उन्हें तीच्र म्लानि का अन्भव हाता है। मेरी कोई बम्बु इन मुनियों के उपयाग में नहीं आ गकती है तो में कितना अधन्य हूँ।

भरत के मुरा पर आतम-स्तानि की गहरी छाया देख-कर भगवान ने मान्दवना देते हुए कहा कि-'अरत ! इम प्रकार बनानि न ताओ ! मृनि कता के अनुसार तुम्हारा गाय सामग्री मृनिगण नहीं ते सकते हैं परन्तु तुम्हे उसस निराध हाने की जरूरत नहीं है ! तुम्हे अरव सात स मुनिया की गांक भशा मा कास किए मह ए है सी मानू मनाईर किसकी है इ. ते देशहर देशम मुख ए नगर सहित यह समय नेहें है सहय संभित्रों से समुद्रान में द्वारत में से मुख्यानन मना है कि दे रिमी नार काल-नार में मना मुख्य के उत्पाद के माद है । रेसी कार काल-नार में है । पर नाह नाह है । पार्टी का रेसी कार काल-नार में है । पर नाह माद है । पार्टी का

प्रकृष प्रवृक्षि १ प्रवृक्षि १ प्रवृक्षि प्रवृक्ष प्रव

The second day of the second o

को श्राराधना में उद्युक्त (उजमाल) रहना चाहिये। कहा गया है कि:-

'साहम्भी सगपण समु, अवर न सगपण कीय। भक्ति करे साहम्भी तणी, ममकित निमंत्त हीय॥'

समिकत के आठ आचारो में वात्सल्य वताया गया समिकत और घर्म श्रद्धा की दृढता के लिये सार्घीमक वात्स यया शक्ति अवश्यमेव करना चाहिये। धन-सम्मत्ति सार्थकता इसी में है। सासारिक प्रवृत्तियो मे, ज्ञाति ज कुटुम्बी, मित्र ग्राढतिया आदि की सार सम्भाल में और अ ऐश-आराम में जो धन व्यय होता है वह ग्रकारय जाता उसका फल ससार की वृद्धि करने वाला है। इसके विपरं जिनेन्द्र देव के शासन में निरूपित धर्म कियाएँ करने वाल, तपश्चर्या करके जीवन को पवित्र करने वाले, सामायिक पीपध म्रादि धर्मकियाओं में लगे रह ने वाले साधिमक भाइयो की भवित करने से धन की वास्तविक सफलता है। यह पुण्यानू-वद्यी पुष्य है। पुष्य की परम्परा को बटाने वाला है। ऐश-भ्राराम और सामारिक प्रवृत्तियो म किया गया सर्च पापानु-बबी होने से ग्रशुम फन वाला है। यह जानकर भव्य ग्रात्माओ को अपने घन का मदुपयोग मार्घामक बन्धुओं के हिनाये तर्ता चाहिये । उन्हें यह ममजना नाहिये कि मार्घनिक बधुओ की मेत्रा का लाम महान् पुण्योदय मे प्राप्त होता है।

that of meeting where a fame is until me where high thanks 47.4-44 J म्बित स्थापित विक्तित । जेन कृति हा काम निर्दे पाला, जनवारे साम हैन रहे माला, हेपणा ही श्रीकर महते प्राप्त करें है हरी the the state of of the of the state of the stat 香·花衣 经利益产品工品学 建二年 品品 数 4 至4 年15 日 64 日 1 THE E AND AND ROMAN OF EAST LOUIS THE WAY THE SHE IS THE Sign of the state of the state

mar bin bittem Antige might gie bereifitagt me the first of the think of the t the grant with a second of the contract of the second of the contract of the c 西本 海南島とよる 南京 かなお 12 日日島 5 一大大大大 15 m ある ある かっしょ 不是如此人 我 我 不 一人 我是 我你有什么好 我们 好不不完 我们 事者 化丁醇 经限额条件 野野縣 新西京 教养者 智力大学 野性大学 The first the second of the se At the state of the contract to the state of the state of the which is being referred to serve the server and the server continue to the first the state of the second अपर्याप्त रहा। श्रावक की एक सामायिक का मून्य मगध के सम्राट्क खनाने में भी कही अधिक है। ऐसो अवस्था में कीन जैन दोन-हीन हो सकता है ? प्रत्यक जैन म ऐसी खूमारी होनी चाहिय कि वह वादयाहों और बाह्बाहों से भी अपने- स्रापकों अधिक भाग्यजानी और ऐश्वयशाली माने।

धमं और अन्तम-सम्मान की खुमारी होना एक सद्गुण है। भाट बाराट को जब अकबर की सभा में जाना पड़ा था तो उसने पगड़ी हटा लो थी। उसे यह खुमारी थी कि मेरी पगड़ी कंवल प्रताप के नामने ही झुकेगो, अन्य किसी के आग नहीं। भूखा, प्यासा और निर्धन रहना स्वीकार है परन्तु प्रताप की छोड़ कर प्रन्य किमी के सामन पगड़ी झुकाना कदापि स्वीकार नहीं। ऐसी अजीव खुमारी थी भाट वारोट में।

जैन को भी ऐसी खुमारी होनी चाहिये। देव गुरु धर्म के महारत्नों को पा लेने पर दोन-होनता टिक हो नहीं सकती है। अतः कोई जैन न अपने स्रापकों और न किसी दूपरे जैन भाई को दान होन समसे।

देव, गुरु और धर्म के सम्बन्ध के कारण जैन माय में एक पारिवारिक भावना होनी चाहिये। परिवार के व्यक्तियों के प्रति जैमी आत्मीयना होती है बेगी ही आत्मीयना और प्रीति मार्धिकों के प्रति होनी चाहिय। श्रीमना जैमी की निर्धन जैन भाइयों के प्रति बर्गात और सहभाव रराना चारिये जैन भाइयों के प्रति बर्गात और सहभाव रराना चारिये

dan den stiff 李祖传是 法有法定证券 化二次多 就不 经股本 化 美海山 人名比斯尔伯特尔 不 不不 计 化 there is the first one are the foresting that they are the first most than a स्कृति है स्वति व्यक्ति के स्वति वित्ति के स्वति वित्ति है से स्वति वित्ति है से स्वति वित्ति है से स्वति वित्ति है से स्वति ह 经费许多等人的 田 如在 化四次 一次明末四 好多海 前 经股票等于 REGION TO THE PERSON OF THE PE The state of the s The may be able to the seal and the man be to the first of the first of THE STATE OF THE WOLL THE THE THE THE STATE OF THE PERSON \$ 《母子素等 一种安全中心中 经净帐 有多数原 《 光生中 我 如此 where is the second to the sec 李子子 如 明 是

李月 李月李子 李 《 李伊子野縣 成成本 如此 四年 我 好了一 歌。 班子中 其一日 中中日 子中 中日 中月 一日 大大大 李明 大田十十八

the transfer that the transfer was to the transfer of the tran AS LES LES SISTER THE SECOND S Edwidow for many from Son State may him a later of the man And I say the said the said of Friend down to a the first of the property and the tent of the tent of the reality तक आ गई कि अन्न दाँत का वैर हो गया । खानदानो व्यक्ति किसी के आगे हाथ तो पसार नहीं सकता । घघा कुछ रह नहीं गया था । वाल-वच्चो को भूखा कैसे रखा जा सकता घा । खानदानो या कुछीनता से पेट तो नहीं भरता । वडी समस्या सामने खडी हो गई । जब मनुष्य अभाव से परेशान हो जाता है तो उसकी मानसिक समाधि और वृद्धि में भी विक्षेप आ जाता है । जिनदास सेठ वहुत गम्भीर और पुण्य-पाप की विवारणा को समझने वाले थे । कमजोर स्थिति होने पर भी धर्म के प्रति उनकी रुचि वरावर कायम रही थी ।

पर्युषण के दिन आ गये घारणा-पारणा के लिये घर मे कोई व्यवस्था नहीं थी। जिनदास सेठ का मन बहुत क्षुट्य हो गया। वे अपनी पहले की स्थित को याद कर और आज की विषम स्थिति को देखकर विचलित हो उठे। कहाँ वह पूर्व की श्रीमन्ताई और कहाँ आज धारणा—पारणा का भी अभाव!

प्रसग वश यह कहना अनुचित नहीं होगा कि घारणा-पारणा का महत्त्व नहीं है, महत्त्व तो है उपवास का। परन्तु आजकल घारणा-पारणा का आडम्बर इतना बढ़ गया है कि उसमें उपवास गोण जैसा हो गया है। घारणा-पारणा में गरिष्ठ पदार्थ सेवन करने की परिपाटी चल पढ़ी है परन्तु यह न स्वास्थ्य की दृष्टि से ही ठीक है और न धार्मिक हरिज में ही। उचित तो यह है कि उपवाम के। ब्राहरूच भी के हालाई क्षेत्रण सार प्रीक्त पाक्या की भी कार्विष्ठ, वर्षा प्राप्त की की कार्विष्ठ, वर्षा प्राप्त की कार्विष्ठ, वर्षा प्राप्त कार्य कार कार्य कार कार्य कार कार्य कार कार्य कार्य

 है। उनका सारा पुरुषार्थ खाने-पीने तक ही सीमित है। पहीं कारण है कि जास्त्रकारों ने कहा है कि मोक्ष में जाने बालें जीव निगोद के जीव का अनन्तवां भाग हैं। विरले व्यक्ति ही संसार व्यवहार की प्रवृत्तियों से ऊरर उठकर धर्मागधना में निमम्न होते हैं।

सेठ जिनदास के मन में कल की चिन्ता ने उथलपुर्यले मचा रखा था। इधर सेठ शान्तिदास भी प्रतिक्रमण करने जपाश्य में आये। उन्होंने प्रतिक्रमण करने के लिये तैयारी के रूप में अपने बहुमूल्य वस्त्रामूपण उतारे और प्रतिक्रमण के योग्य वस्त्र धारण किये। धर्मिक्या करते समय आमूपणों की त्याग करना ही चाहिये। बहुमूल्य आभूपणों का और मूल्य-वान भडकीले वस्त्रों का त्याग करके सादगीपूर्ण वस्त्रों से धर्माराधन करना चाहिये। शरीर के सत्कार या सस्कार की भी त्याग किया जाना चाहिये। धोती और उत्तरासन रसक्तर ही सामायिक, चैत्य वन्दन आदि करना चाहिये सामायिक में मोह-ममता वर्धक पदार्थों का त्याग करना ही चाहिये। कहा है- 'समगों इय सावश्रों हुउजा, तम्हा मामाइयं चहुमों वृज्जा"

अर्थात्-मामायिक के समय मे श्रावक साधु तुल्य ही जाता है अतिएव पुन पुन मामायिक करना चाहिये। इसका अर्थ यह हुग्रा कि मामायिक के ममय मे श्रायक को साधु के ममान मादगी पूर्ण वेश रणना चाहिये।

बाल्तिदास सेठ ने मामायिक छिने में पूर्व अपना है। हे

श्राजकल तो एक रुमाल भी इघर उघर हो जाय तो शोरगुल मचाया जाता है, धर्मस्थान के विरुद्ध उटपटाग और अट-शट वाक्यावली बोली जाती है। शान्तिदास मेठ समझदार और विवेकवान् थे। उन्होने साचा कि-यदि मैं हीरे के हार के चोरी चले जाने की वात प्रकट करुगा तो इससे धर्मस्थान और धर्म के प्रति लोगो मे अविश्वास उत्पन्न होगा, धर्म की हीलना होगी, धर्मवन्धुओं के प्रति शका का वातावरण बनेगा। श्रतएव उन्होने इस बात को प्रकट न करना ही उचित समभा। कितनी गभीरता और महानता है यह । धर्म और धर्मस्थान की प्रतिष्ठा की रक्षा के लिये शान्तिदास सेठ ने हीरे के हार की कोई चिन्ता नहीं की। ये सहजभाव से श्रपने घर चले श्राये।

घर आने पर सेठानी ने देखा कि सेठजी के गले में हीरे का हार नही है। प्राय स्त्रियां हर बात की विशेष खबर रखने वाली होती हैं। श्रापकी अपेक्षा आपकी धर्मंपतिनयां विशेष हिमाव—िकताब रखती हैं। विचक्षण सेठानी को समझने में देर नहीं लगी कि हार चोरी चला गया है। सेठजी ने हार की हकीकत बताते हुए मेठानी को सावधान किया कि वह किसी के सामने इम बात को प्रकट न करे। सेठजी ने कहा कि—अपनी कुळीनता इनी में है कि हम धर्म-स्थान में हुई इम घटना को प्रसट न होने से। यह तो महज ममजा जा सकता है कि किसी अत्यन्त जहरतमद व्यक्ति ने ही वियदा होर ऐसा कृत्य किया है। परिस्थित इन्सान को न जाने क्या—वया करने को मजबूर करती है। साधारण व्यक्ति परि-

यह हार ग्राप गिरवी रख लोजिये। ग्राप मेरा विश्वाम करते है, यह मापका वडप्पन है। व्यवहार मे व्यावहारिक रीति से ही चलना चाहिये। शान्तिदाम सेठ ने कहा—ग्रच्छा, आपका आग्रह है तो आपके नाम को चिट्ठी लगा कर यह आपका हार रख लेता हूँ। यह कह कर उन्होंने एक हजार रुपये जिनदास सेठ को दे दिये। जिनदास सेठ ग्राने घर चले आये।

जिनदास सेठ के जाने के पश्चात् शान्तिदास सेठ की धर्मपत्नी ने सेठ सा. से कहा कि-श्रापने जिनदास सेठ को हार पर रुपये दिये यह ठीक नहीं किया। उनको यो ही रुगये दे देने चाहिये थे।

सजनो । यह कितनो वडी वात है। यदि आजकल जैसी तुनुकिमजाजी स्त्री होनी तो कहती—'शर्म नही आई, धर्मस्थान में चोरी करते हुए। इसे पुलिस के हवाले करो। हमारा ही हार चुरा कर हमारे यहा गिरवी रखने आया! धूर्त कही का!' इत्यादि शब्दो द्वारा उसके हृदय को वेब देती। परन्तु शान्तिदास सेठ की सठानो ऐसी नही थी। वह समक्तदार नारी साधिमक को प्रतिष्ठा की रक्षा करने वाली थी। धर्म और साधिमक के महत्त्व को समझने वाली थी इमिलिये मव कुछ जानते हुए भी उसने जिनदास सेठ की प्रतिष्ठा को कुछ भी घरका न लगने दिया। इसे कहने हैं स्वध्मी वात्मल्य!

जिनदाम मेठ कुलीन और स्वय ग्रमीर थे। परन्तु घृप छाह के समान मुल-दुल आने-जाने रहते हैं। सूर्य का भी

इस प्रकार गृष्टेव के समक्ष दोनो ने अन्त करण पूर्वक श्रालोचन लेकर ब्रात्म—शृद्धि की । साधिमक वात्सत्य का यह एक अत्यन्त प्रेरणाम्पद उदाहरण है । इस पर आप गहराई से विचार करें और इस मत्कर्त्तन्य को निभाने का यथाशिक प्रयत्न करे ।

साधिमक वात्सल्य के महत्त्व को कुमारपाल राजा ने समझा था जो प्रतिदिन एक हजार स्वणं मुद्राएँ खर्च कर साधिमको को भोजन कराता था। उसने माधिमको से लिया जाने वाला ७२ लाख का वािपक कर लेना वर कर दिया था। वस्तुपाल-तेजपाल, झाझणशाह, आभडशाह, विमलमत्री आदि साधिमक वात्सल्य का एतिहासिक आदर्श उपस्थित करके मावा सन्तित के लिये प्रेरणा के अम्बज स्रोत बने है। उनके अनुपम खौर अनूठे कार्यों में स्नाप सबको सम्चित शिक्षा और प्रेरणा प्राप्त करनी चाहिये।

लोकिक कहाबत है कि ''अन्न एक तो मन एक।'' इस लोकोन्ति में गहरा धाराय रहा हुआ है। जो जो व्यक्ति एक साथ बैठ कर गाना गाते हैं उनमें एक रूपता की भावना उत्पन्न होती है, उनमें परस्पर सद्मान और स्नेह बढ़ना है। आप लोग भी विज्ञानसभा के सदस्यों को, अधिकारियों को दी-पार्टी एट-होम आदि देने हैं। यिज्ञारी और नेतागण भी परस्पर में, एक दूसरे के सत्मान में भोज की व्यवस्था करते है। इनमें भी यही तस्व काम कर रहा है।

स्वार में मुक्तार कावार ही एएड्रेंग्य में कि का निर्माण के कि का निर्माण का का निर्माण के कि का नहीं के वित्र मान की का नहीं के कि का निर्माण का कि का निर्माण के कि का निर्माण के का निर्माण के कि का निर्माण के का निर्माण का न

कर अधिक्षा के में के साथ संजीवना के क्षेत्र के मान का का का स्वीतिक के में के बाद संजीवना है है है। मान स्वीतिक स्वीतिक के में के बाद संजीवना है है है। मान स्वीतिक स



पर्युषण का द्वितीय ट्याख्यान

महापर्वं का आज दितीय दिवस है। यह महापर्वं सकल लौकिक लोकोत्तर पर्वों में शिरोमणि तुल्य है। पुरुषों में नरपित, नरपित के शरीर में मस्तक, मस्तक पर मुकुट और मृकुट में मणि मुशोभित होता है उसी तरह मामान्य दिनों की अपेक्षा पर्वं की शोभा है, सामान्य पर्वों की अपेक्षा महापर्वों की महत्ता है, महापर्वों में भी लोकोत्तर महापर्व प्रधान है और उनमें भी पर्युंपण महापर्व सर्वोत्तम और परम कल्याणकारी है।

स्वान्तः सुखाय सर्वजनिष्ठतायः

प्रश्न हो सनता है कि पर्युषण पर्व की सर्वोत्तमता और प्रधानता का क्या कारण है ? इस प्रश्न का समाधान करने के लिये हमें पर्वो के प्रयोजन, उद्देश्य और उनको मनाने के ब्राकार प्रकार और रीति-नीतियो पर विचार करना होगा। होली, दीवाली, दशहरा आदि लौकिक पर्वो का प्रयोजन और उद्देश क्षणिक ब्रामीद-प्रमोद और भौतिक सूख-समृद्धि होता है। इसमे प्राप्त होने वाला हपीं लाम अनकालीन, अस्थिर और अनिश्चन होता है। इसमे प्राप्त होने वाला हपीं लाम अनकालीन, अस्थिर और अनिश्चन होता है। इसमें प्राप्त होने वाला हपीं लाम अनकालीन, अस्थिर और

ककर पत्थर हटाये जाते हैं, काटे ग्रलग किये जाते हैं, भूमि जोती जाती है, पानी द्वारा मीच कर मिट्टी को मुलायम वर्नाई जाती है। इतनी मब कियाएँ कर लेने के पश्चात् बीजारोपण किया जाता है। तभी वह फलदायक होता है। इसी प्रकार अपने अन्तः करण के खेत में सम्यवस्व आदि शुद्धभावों का बीजारोपण करने के लिये हृदय में रहे हुए कण्टको, श्रत्यों और दोपों को दूर करना आवश्यक होता है। इसी उद्देश्य से भूमिका-शृद्धि के लियं पर्यु पण पर्व के सात दिवम रखें गये है। इन दिनों में धर्माचरण द्वारा अन्तः करण को निमंत और शृद्ध बना कर सवत्मरी के दिन ग्रात्मिक भावों का बीजारोपण करना है। ऐसा करने से ही इस विराट ग्राह्मातिमक महापर्व की वास्तविक आराधना होती हैं।

पाच मत्कत्तंव्यो में से अभयदान प्रवर्तन और स्वधर्मी-वात्मत्य-इन दो अगो का निरूपण कल के व्यत्यान में किया गया था। शेप रहे हए क्षमापना अन्द्रम तप तथा चैत्य परि-पाटी का प्ररूपण आज किया जाता है।

पर्व का मर्भः क्षमापना

मर्वज्ञ-सर्वदर्शी वीतराग महाप्रमु ने क्षमापना का महत्त्व बताने हुए उत्तराध्ययन सूत्र के २९ वं अध्ययन मे फरमाया है –

' ग्मावणयाण णं भंते ! जीवे कि जगयह ? समावणयाण पण्डायणभारं जणयह ! पण्डायणभावध्रायण म् वृत्ये स्तर-ज्ञार-सूत्र-जीव-म्बेत् सिमीमावमुला-हर । विक्रीमान्स्वराण, याति नीचे नेव्यविवीदि क्रीच्य factor press

क्षा भागा हात है है

Specific of the first of the first of the specific of the spec 大大 東京 東京 でいて まく また マメ らう ライ

And the state of t (大學 安美人 歌 李俊 女 起 女 女 化 艾 女 多花 如不如 炎 、 美情知 安多 The make the way to want to want to be to the to the to the to the total the water same go a vactor of states of formally featuresty the standing of the standard o

Will the wife of the man to the man and th The second secon the way were about the way is a light of a get of more of a way * * · · · · *

五十分之 李紫紫金黄 如天城 发行之外 年代的家庭生物中 " we then to such that the suc



chandara deterbit it ja mottan a cabilit tinga medent materito my the think the contract and contribute to the terms and a minimal or the sections of you to begin in him who to " on the rock in a few on the within ··· 근거 왜 같은 화소 ··· 가 걔 팀(Y# 박리스스트)에 약 과전이 · () · · · · · · · tette en game defend frien degler de fantom K. Lam 고급 ex Chentral To link stalk sugalist 독기는 없는 는데 이 네가 됐는 분드로 때 REAL LOUGH ANGLOWER IN THE PROPERTY TO SELECT THE SELECTION SECURITY TO THE PROPERTY OF THE PR the property of the second of But the Better of the train to be and the first the sideres of 순 본 · 사는 클로마스 네 모든이상축소에 je 국 네 3년 생각 또 # 50 L 구위 다 다 다 野性黄色 医二甲基甲醛 网络斯特斯 电电子电路 医甲甲甲基甲甲 學性主義中國 计 不知 1 大 知春 野菜 十二十二年 野 監 計 " 克 丁 」 出 如此熟 小野 安美海 经有利的 華 化二甲基特斯 南大哥 化 学 "你是我我我们的什么你是我们会就你会会们一个什么就会。"她"快遍来我 e 1 4 -

महीने के काल में तो कपायों का उपज्ञमन नितान्त जरूरी है। अत. पर्यु पण पर्व की आगद्यना करने की अभिलापा वालों की कम से कम सबत्मरी के दिन तो क्षमापना पूर्वक उपशान्त वर्न ही जाना चाहिये। बैर-विरोध को दूर कर देना चाहिये।

यह स्मरण रखना चाहिये कि कै। से वैर और जहर से जहर बढता जाता है। खून का कपड़ा ख़्न से माफ नहीं हो सकता । उसे घोने के लिय तो पानी ही अपेक्षित हाता है। इसी तरह को घया वैर का प्रतिकार को घया वैर से नहीं हैं। सकता । इसके लिये क्षमा का रसायन ही फलदायक हो सकता है। वैर से वैर की परम्परा वढती जाती है । आग में ईन्धन डालने से वह शान्त नहीं होती अपितु विशेष-विशेष भडकतो है। सुभूम नामक क्षत्रिय राजा ने कोधवण ब्राह्मणो का नाश किया तो परशुराम ने २१ वार धात्रियो का विनाश किया। यह वैर की परम्परा वश-वशानुगत चलती रहती है। इतना हो नहीं भव-भवान्तर तक भी चलती है। गुणसेन तथा अग्नि-शमि तापस की वैर-परम्परा अनेक भवो तक चली, जिनमे म्रग्निशर्मा ने वंग-परम्परा बढाई, गुणसेन ने यह परम्परा बद कर दी। यह बात समरादित्य केवली वे वृतान्त मे प्रस्ट होती हे । इसीलिये शास्त्रकार भगवत फरमाते हैं कि -

"वेरानुवंधीण महत्मयागा"

यह कोच, हिमा, वेर-विरोध और कपाय महा भय-

तरह तरह के वस्त्राभूषण और विविध उपहार मदनरेला के पास भिजवाना गुरू किया।

सती मदनरेखा अनुपम सुन्दरी होने के साथ ही साथ प्रनुपम शीलवती और गुणवती भी थी। उपहारों के कारण मदनरेखा पर क्या असर होने वाला था? शेपनाग की मणि कदाचित हाथ म श्रा सकती है,पराक्रमी सिंह की दाढ का हाथ में श्राना सम्भव है परन्तु सती शिरोमणि नारी का दूसरे के हाथ में आना सम्भव नहीं है। मणिरथ अपने प्रयत्नों में सफल न हो सका। इस असफलता ने उमे अधिक विह् बल और वभान बना दिया। एक बार मर्यादा छोड़ने पर मनुष्य का कितना पतन हो मकता है, यह नहीं कहा जा सकता। इसीलियं भर्तृहरिजी ने कहा है —

''विवेक-अष्टानां भवति विनिषातः शतमुखः।''

जो व्यक्ति विवेक के सीपान में फिमल पहता है वह न जाने कितना नीचे जा गिरेगा यह नहीं कहा जा सकता है। मिणरथ विवेक भ्रष्ट हों चुका था। राजा का कर्त्तंच्य, कुत के ज्यष्ट का कर्त्तंच्य, बड़े भाई का दायित्व, जेठ की मयादा, मामान्य कुठाचार, माधारण मीतिष्यमं आदि की विकरा कर वह नराधम बन गया था। उस के ह्दय में काम-वामना का कालुध्य जम चुरा था अनाएव उसक ह्दय में सभी मनेह, बात्मत्य करणा आदि सदमाव नष्ट हो गय। भ्रयकर पूर विवारों था आधिपत्य हा गया था। उसने साथा-जब

गती मदनरेषा पर बजाति हो गया । उमके दुपकी कोई सीमा न रही। एक नारी के लिये इससे बहकर और कोई दूसरा दुप नहीं हो सकता। ऐसी विषम स्थिति में नारी का धैयं विचलित हुए बिना नहीं रहता परन्तु सती मदनरेषा विवेकवती नारी थी। उसने परिस्थिति को समझ तिया और अपने हृदय को बज्जमय बनाकर अपने कर्त्तंच्य का निर्धारण कर लिया।

ऐसे कठिन प्रमग में यदि कोई साधारण नारी होती तो अपना दुख रोने वंठ जाती [।] हाय मेरा क्या होगा ^{? मेरे} वच्चे का पया हागा। यो रोना रोकर स्वय भी व्याकुल वन जाती और मरणपारया पर पटे हुए व्यक्ति को भी आयुष्ट-व्याकृत बनाकर सकत्प-विकत्प के भवर में उात देती। म्बय श्रातंध्यान करती और श्रपने पनि को भी आतं-रौद्र ह्यान में डालकर अशुभ सकत्यों से अशुभ गीन या बद्र कर-वाता । उसका परभव श्रमगतकारी बनाती । परन्तू सत। मदनरेगा विवेकवाली थी । उसने अपना राना नहीं रोगा। जमन पहले अपने परलोक के प्रति प्रयाण करन वाले पनि की मति को मुवारन का कत्तंत्र्य पूरा किया । यह अवन । पति के इतिर को गोद स लेकर यहने लगी-'हे नाव । स्राप द्यानि धारण करे। कोध या प्रतिशोध को भाषना न भान है। यह आपका अन्तिम समय है। 'ध्यनो गतिः गा गतिः अन्त ममा में जैसी भावता होती है उसी र धनुसार सति होती है। अताप्य आप भपत भाई के प्रति कोप और संदर्भ

REFORE ENERGY OF A SERVICE WAS IN THE ASSET OF THE PARTY OF THE SERVICE WAS INTERESTED BY THE SERVICE WAS ASSET OF THE SERVICE WAS ASSET OF THE SERVICE WAS ASSET OF THE SERVICE OF THE SERVICE WAS ASSET OF THE SERVICE OF THE SERVICE WAS ASSET OF THE SERVICE OF T

मुख्यानं एकं राज्याकारः प्रतः । वर्षा क्षणेय कराते शुक्षाकारात् ॥ वर्षा क्षणे यक्ति २०२०वे कराति । स्वयं क्षण सर्व क्रिक्येन वर्षाः ।

where the contract of the cont

हैं। अपने २ णुमाणुम कर्मों के अनुसार सवको सुखदुप की प्राप्ति होनी रहती है। "मैं इनका प्रतिपालक हूँ" यह अभिमान मिथ्या है। कोई किसी का आश्रयदाता या आश्रित नहीं है। सब जीव अपने २ पुण्य-पाप के आश्रित हैं। अतएव आप चिन्ता से मर्वथा मूक्त होकर श्रिरहत देव का गरण लीजिये। नवकार मत्र का जाप कीजिये। अपनी आत्मा को ममाधि भाव मे स्थापित कीजिये।"

'मैं अनि ओर से आपको विश्वाम दिलाती हूँ कि
मैं प्राणों को न्योछावर करके भी अपने धर्म और शील की
पिरपूर्ण रक्षा करुगी। मैं आपको धरोहर की परिपालना
करुगी। मेरी ओर से आप सर्वया निश्चिन्त रहिये। परलोक
के लिये प्रस्थान करते हुए आपके लिये यही मेरी अन्तिम भंट
है। आप परभव के इस पायेय को साथ ले जाइये। नवकार
मत्र का स्मरण की जिये अरिहत—सिद्ध का शरण ली जिये
सर्वजीवों से क्षमायाचना की जिये और समाधिपूर्वक हँमने हँसते
मृत्यु का स्वागत की जिये।"

कितनी दृहता है मती मदनरेखा की । नारी मूलम अबीरता को हटा कर बज्जमय छाती बनाकर पति की मृत्यु को सुधार देना साधारण राम नहीं है। कहने की आवश्यकता नहीं कि अपनी अर्जींगिनी की ऐसी उत्कट धीरता, पबंत जैसी दृहता और शुभ निष्ठा देख कर तथा उसकी हिनकारी मगल-कारी शिक्षा पर मनन करने से गुगवाहु को शान्ति मिली। उसने कोध और प्रतिशोध को दृष गर दिया। समाजिभाव मे को वन्दन क्या है। सभाजनो को वृतान्त मुन कर वडा प्रमोद हुआ।

कहने का तात्पर्य यह है कि सती मदनरेखा को हम साक्षात् क्षमा की प्रतिमा कह सकते हैं । कितना उत्कृष्ट हैं उसका क्षमाभाव ! पित के हत्यारे के प्रति भी रोप न आना, मन में तिनक भी दुर्माव न आने देना, आतंध्यान या रीइ-ध्यान के वशवर्ती न होना सचम्च असाधारण ग्रादर्श हैं। घन्य है सती मदनरेखा और धन्य है उसका ग्रादर्श क्षमाभाव! ऐसी क्षमामूर्ति को हमारे कोटिश. वन्दन और अनन्त-अनन्त वन्दन हो !! ऐसी आदर्श नारी के जीवन वृत्त से हम क्षमा-पना के ममें को समझे तो हमारा जीवन भी धन्य-धन्य हीं सकता है।

क्षमा वीरस्य भूपणं

क्षमा श्रमृत है, कोच जहर है। क्षमा दिव्य रमायत है, कोच भयकर व्याचि है। क्षमा पुण्ठरावर्त मेच है और कोच दावानल है। जो वीर है, घीर है, गम्मीर है, जो गुणवान् है, महान् है, प्रचान है वही क्षमा कर मकता है। जो भरा-पूरा है, शौय मम्पन्न है, और गुण-गरिमा प्राप्त है वही क्षुकता है, नम्म होता है। तुच्छ, छिछना और ओछा व्यक्ति ही अकटता है। तीनिकार ने कहा है –

ब्रेंग्ने मो श्रांना श्रामली, नमे नी दाहिम दागा। ल्ला वेनारा क्या नमें, जानी श्रोशी मागा।

यह बात सही है कि क्षमा के आवरण के नीचे कायरता को आश्रय नहीं मिलना चाहिये। कायर व्यक्ति क्षमा कर ही नहीं सकता । जो मत्व सम्पन्न होगा वहीं क्षमा करेगा। क्षमा वीर का भूपण है । इस सम्बन्ध में राजा उदायन और चण्डप्रद्योतन का उदाहरण मननीय है।

राजा उदायन की क्षमापनाः

सिंघ देश का राजा उदायन था। उपकी राजधानी वीतभय पटन थी। उज्जयिनी का राजा चण्डप्रद्योतन था। चण्डप्रद्योतन ने उदयन की दासी का उपहरण कर लिया था। एव भगवान श्रीमह।वीर देव की प्रभावशाली प्रतिमाजी का अपहरण भी किया या । अन उदायन ने चण्डप्रद्योतन पर श्राक्रमण कर उसे पराजित किया। इतना हो नही उसे बन्दी वना कर उसके कपाल पर 'दासीपति' शब्द अकित करवाया। तत्पइचात् उसने अपनी मेना के साथ वीतभय पाटन की ओर प्रस्थान किया । इतने मे पर्युपण पर्व आ गया । उदायन राजा ने पर्युषण पर्व की आराधना के लिये दशरूर मे पटाय डाला । सबत्सरी के दिन उदायन राजा ने उपवास किया । अतः रसोइये ने चण्डप्रद्योतन में पूछा कि आपके तिय वया रसोई वनाई जावे । चण्डप्रद्योतन का णका हुई कि हमेशा तो नही, क्षाज क्यो कर पूछा जा रहा है। उसने रमोइये से कहा कि यह बान धाज वयो पूछो जः रही है।

रसोटये ने कहा-आज हमारे राजा को पर्युपण पर्य

J. Rengerett tils blide skin og t Utgange medlelske for til form hendigt for treaming og till til til till till til till till

राज्य राज्य प्रमाण करे हुन रहा है से प्रणाप्त प्रमाण प्रमाण है। सर्वे के राज्य कर से रहे जीव करेश राज्य होर राज्य क्षाच्या रहा है।

वर्षेत्वय ६, नव्याप्त वर्ष्य स्व एक व्याप्त व्याप्त स्व प्राप्त व्याप्त स्व स्व व्यापत स्य व्यापत स्व व्यापत स्व व्यापत स्यापत स्व व्यापत स्व व्यापत स्व व्यापत स्व व्यापत स्यापत स्व व्यापत स्व व्यापत स्

साधीत बाल एकं एक नाटा सहन है। विभी के बावद्वार के करता सकत

「大きない」では、「大きなないない」である。 ない、「ないない」である。 ない、「ないないない」である。 ない、「ないないないないないない」である。 ない、「ないないないないないないない。」である。 ない、「ないないないないないないない。」である。 ない、「ないないないないないないないない。」である。 आया । उमसे क्षमायाचना करते हुए उसे सकोच या लज्जा का अनुभव नही हुआ ।

चण्डप्रद्योतन ने कहा-जव तक आप मुझे बन्धनमुक्त नहीं कर देते तब तक में आपको क्षमा प्रदान नहीं कर सकता।

उदायन ने सोचा-सवत्सरी पर्व की वास्तविक ग्रारा-घना शत्रु के साथ क्षमायाचना करने से ही हो सकती है। अपने स्वजनो, रिश्तेदारो या स्नेहियो से क्षमायाचना करना तो केवल रूढि है। जिसके साथ वरिवरोध हुआ हो कलह-बलेश हुग्रा हो, उससे क्षमायाचना करना वास्तविक क्षमायाचना है। इसमे ही पर्व की वास्तविक आराधना है।

वह मोचकर उदायन राजा ने चण्डप्रद्योतन को वन्धन-मुक्त कर दिया। इतना हो नहीं पूर्व में उसके कपाल पर अकित करवाय गये 'दासीपित' शब्द को छिपाने हेतु उसे सम्मान पूर्वक स्वर्णपट्टक अपित किया।

इस प्रकार उदायन राजा ने वैशे के साथ क्षमापना करके वास्तिवक पर्युपणपर्व का आराधन किया। उदायन राजा शिक्तशालो था, विजेता था, तदिप उसने अपने अधोन बने हुए वन्दी राजा चण्डप्रद्योतन से क्षमा मौगी। यह उदाहरण इस बात का प्रमाण है कि क्षमा करना कायरो का नहीं श्रीनु वीरो का भूषण है।

उदायन राजा ने मरतभाज से क्षमापनापर्व की आगा-

asti hik sha kasi bal wara Kati nik shali sha batanshi shone shi k novethingan a "r. J.e.

Again side and he want of Fabrasias

The state of the s

दिया। कुम्भकार ने मोचा-महाराज का तो यह खेल हो गया और मेरी दुर्देशा हुई जा रही है। उनने फिर क्षुन्क को चेतावनी दी। क्षुल्लक ने फिर 'मिच्छमि दुक्कड' दिया।

चीथी बार फिर धुल्लक ने 'ककर मारा। अब कुम्मकार से न रहा गया! उसने कुल्लक महाराज का कान मरोड दिया और बोला 'मिन्छामि दुक्कड'। यो कई बार कान मरोडा और कई बार 'मिन्छामि दुक्कड' बोला। कुल्लक ने तंग होकर कहा—कान मरोडते जाते हो और मिन्छामि दुक्कड कहते जाते हो ? यह कैमा 'मिन्छामि दुक्कड"। कुम्मकार ने कहा—जैसा आपका मिन्छामि दुक्कड' बैमा मेरा 'मिन्छामि दुक्कड'।

कहने का तात्पर्य यह है कि जुम्मकार और क्षुत्लक जैसा "मिच्छामि दुक्तड" आत्मा को पवित्र नहीं कर सकता। अपने द्वारा की जाने वाली भूल का मच्चे हृदय से पश्चात्ताप करना और भविष्य में जम भूल को फिर से न दुहराने की सावधानी रमना वाम्नविक 'मिच्छामि दुक्तउ है। पर्व पर्य पण के इन पित्र दिनों में धार्मिक त्रियाएँ करते समय आप भी अने क वार 'मिच्छामि दुक्तउ' बोनते हैं। परन्तु यया आप इन वात की मावधानी रमते हैं कि वे भूले दुवारा आपके द्वारा न हो ? 'मिच्छामि दुक्तड' की मार्थकता दमी में हैं कि मच्चे हृदय से भूत का पश्चात्ताप हो और दुवारा भूत न करने का मकत्व हो। इन विषय में साध्यों श्री मृगावतीती का उदाहरण स्मरणीय है।

स्थाणीनी की समावना को नेवरणः

गुरू बाब कोरासचा समझे से धनवात थी कर बीच the this at this man a not been some of delay may by good till refer at 3 time, bid state, whe factor tigent this thank I and Ethinant & their of # stone hirly a # 5 沙艾科 的比较 投 并不断的 心态病症 医电子后部分 医血血症 整场层 医白色病 如果 衛衛 经收 医子 经产品品品的 化硫化二烷 化二烷 化二烷甲二烷 Banning and a middle to the first of free for a particle and the complete which the distribution has to to the state of the text of the 有多分子 不知人 不明女生 李章母 失夫 打杯 2月 经海绵 發 新新教 李 真如 The the figures that the transfer age to the transfer that 水白水香香 發 接亡我。 鱼 精神中生物,确确出罪 如 確止 我 一种并加大部 中国 かんしゅ ある から はない はなな あんしん あんかんしょ 李大文 地口東 四四 产 青年 弘宗 经营 产生 人名英格兰 人名英格兰 赋作 糖黄素

我也是我就许以去,但我们都是一种一种,并们是有一种一种的一种种理解,我就让我们就可以是一种的情况,我们就要你就要是我们是一个人,你就会一个人,是不要是

कुलीन हो, ऐसा करना तुम्हारे योग्य नहीं है" ऐसा कहते ही निद्राधीन हो गई । इसलिये साध्वीजी श्री मृग।वतीजी के "दुवारा ऐसी मूल न करुगी, क्षमा कीजिये" इस कथन का श्री चन्दनवालाजी ने कोई उत्तर नहीं दिया।

साघ्वीजी श्री मृगावतीजी पर इसका दूसरा ही प्रभाव पड़ा । वे कुलीन थी ग्रतएव उनकी विचारधारा उच्छृषलर्ता की ओर न वढ कर आत्मालोचन की ओर मुटी। उन्होंने सोचा-मेरी क्षमायाचना से मेरी प्रवातनीजी को पूरा सतीप नही हुआ। जहाँ तक प्रवर्तिनीजी अपने श्रीमुख से "ग्रपराध माफ किया" ऐसा न कहे वहाँ तक मुझे प्रवतिनीजी के चरणो मे पड़ी ही रहना चाहिये। ऐसा निर्णय करके साध्वीजी श्री मृगावतीजी अपनी गुरुणीजी के चरएों में ही क्षमा प्राप्त करने के लिये झुकती रही । इस बीच में गुरुणीजी की निद्रा भग करने का उन्होने कोई प्रयास नहीं किया । इस प्रकार आत्मालीचन एव क्षमापना की माबना में वे रमती रही। मावनाओं में अजव-. गजब की अक्ति होती है। क्षण प्रतिक्षण श्रा मृगावतीजी की भावनाएँ गुद्ध और गुद्धतर होती गई । वे क्षपक श्रेणी पर आम्ट हो गई और वही उन्हें केवल ज्ञान की प्राप्ति होगई ! क्षमापना के परम और चरम फल को उन्होने प्राप्त कर लिया।

क्षमापना के लिये हदय को निर्मल और नम्र बनाहें की आवश्यकता होती हैं। हदय में नम्रता आये बिना मन्ना समापना हा भाव पैदा नहीं हो सहता। क्षमापना आये निना क्राकेत क्राप्टांत साथ द्वांत के स्टिक्स में हुए सह अंग्रेन्डक्स नाम क्राप्ट हु एत देक्का क्राप्टांत साथ क्षेत्रक क्षेत्रक क्षेत्रक क्षेत्रक स्टब्स्ट हुए प्रदेशिक क्षेत्र क्षेत्रक क्षेत्रक क्ष्रक्षित क्षेत्रक क्षेत्रक क्षेत्रक हुन्द्रक स्टब्स्ट ब्रिक्ट हुन्द्रक क्षेत्र क्ष्रक्षेत्रक क्ष्रक क्ष्रक क्ष्रक क्ष्रक हुन्द्रक स्टब्स्ट

A to a find a moneyo ding at 1 2 to 2 mm what at 5 mm when a to a find a moneyo ding at 1 2 to 2 mm mutur at 5 mm when at 1 to a find a man at 1 to a find a

The second of th

with the state of the state of

Be with the way we have the second of the se

जन्म दिया । आश्चर्य ओर जिज्ञासा से प्रवर्तिनी श्री चन्दनवालाजी ने श्री मृगावतीजी से पूछा कि—ऐसे गाढ असकार में तुम काले सर्प को किस प्रकार देख सकी ?

साध्वीजी श्री मृगावतीजी ने कहा-"आपकी कृवा से प्राप्त ज्ञान के प्रकाश से मैं देख पाने मे समर्थ हुई।"

गुरुणी चन्दनवालाजी एक दम उठ बैठी और पूछा कि-कौनसा ज्ञान ? अतिपाति या अप्रतिपाति ज्ञान ?

केवलज्ञानी मृगावतीजी ने कहा-श्रप्रतिपाति ज्ञान ।

प्रवर्तिनो श्री चन्दनवालाजी ने जान लिया कि मेरी शिष्या साघ्वीजी श्री मृगावतीजी को केवलज्ञान उत्पन्न हो गया है। मैंने केवलज्ञानी को प्रनामोग मे आज्ञातना की। उनके हृदय मे भी परवात्ताप की भावना प्रकट हुई और उन्होंने केवलज्ञानो साघ्वी मृगावतीजी से क्षमापना चाही। क्षमापना के भाव मे वे भी इतनी ऊँवाई पर पहुँच गई कि क्षपक श्रेणी पर आरूढ होकर केवलज्ञान उपार्जन कर लिया।

इस प्रकार साध्वी मृगावतीजो और प्रवर्तिनी चन्दन-वालाजी दोनो क्षमापना के उच्च परिणामो के कारण अनुत्तर केवलज्ञान-केवलदर्णन की घारिका वन गई। यह है क्षमापना का परम और चरम परिणाम !!

चण्डरुद्राचार्य का क्षमाशील शिष्यः

म्द्राचार्यं नाम के एक अभ्चार्यं स्वमाव से अव्यन्त कोधी

यह है क्षमा का मुन्दर और मध्र परिणाम 11

कपाय विजयः

उक्त समस्त उदाहरणों के मर्म को हृदयगम करके है भद्र श्रत्माओं । कपायों पर विजय प्राप्त करने का पूरापूरा प्रयास करों । शास्त्रकार के इन वचनों को अपना मुद्रा लेख बनाओं —

उवसमेग हर्णे कोह, माण मद्वया जिणे। माय श्रज्जवभावेण लोहं मंतोसत्रो जिणे॥

"उपशम भाव से कोच को जीतो, मृदुता से अहंकार को पराजित करो, सरलता से माया का निकन्दन करो और सतोप के द्वारा लोभ को नियंत्रित करो।"

हे भव्य पुरुषो । कही ऐसा न हो कि कपाय तुम पर
हावी हो जावे और तुम्हारी सारी आराधना निष्फल हो जावे ।
यह स्मरण रखना चाहिये कि वर्षों की आराधना क्षण भर के
तीव्र कपाय के उदय से निष्फल हो जाया करती है। दमसार
मुनि को नजदीक आया हुआ वेचलज्ञान कपाय करने के कारण
दूर चला गया। ग्रतएव कपायो पर विजय प्राप्त करने का
प्रवल पुरुषार्थं करो । जब कपायो के निरूष्त तुण मिहनाद
करके महे हो जाओंगे तो निस्मदेह वेचलज्ञान-दर्गन की
माजिद्ध्यता प्राप्त कर मकोगे।

Enthology, there is so find a factor of any are so that a nor now the therefore a many to go a so the forest to be and enthology of the good of the angle of the factor of the good of the factor of t

The first that the state of the

ther autifunctions,

की आज्ञा में चलना हम सब का कर्त्तव्य हो जाता है। वे पाप-ताप के उपद्रवों से, मोह मद मत्सर ग्रांदि लुटेरों से हमारी रक्षा करते हैं अतएव शासनाधिपति भगवत जिनेश्वर महाप्रभु ने भी हम साधु-साध्वी-श्रावक श्राविका रूप आराधक प्रजा-जन पर श्रव्टम तप का ग्रनिवार्ण टेक्स लगाया है। उनके इस ग्रावश्यक फरमान का पालन करना प्रत्यक जैन का कर्त्तव्य है। जैन कुल में जन्म लेने वाले वालक—वालिका भी तप और त्याग में उल्लास पूर्वक भाग लेते हैं। इसलिये शक्ति का गोपन न करते हुए पर्युपण पर्व में एक अव्टम तप अवश्य करना चाहिये।

टेक्स भें दी गई छुट: —

जिस प्रकार राज्य-शासन टेक्स लगान के वावजूद भी विशेष परिस्थितियों में टेक्स सम्बन्धी विशेष सुविधाओं का प्रावधान करता है, वसूलों में सहूलियत देता है, छोटी २ किश्तों में भुगतान करने की छूट देता है, समय को पायदी में सुविधा कर देता हैं। इसी प्रकार जिनेश्वर भगवतों ने भी तप की आराधना में विशेष परिस्थित और पात्र की क्षमता— अक्षमता को दृष्टिगत रख करक तिषय सुविधाओं का प्रावधान भी कर दिया है। साधारणतया शक्ति हाने पर अष्टम तप करने का फरमान है परन्तु यदि एक साथ तीन उपवास करने की शक्ति न हो तो अलग—अलग तीन उपवास कर में भी तप की पूर्ति की जा मकती है। यदि अलग २ तीन उपवास भी न हो सके तो ६ आयम्बिल करना चाहिये। छह आयम्बिल भी い、真になくなる音音 あっとい、 なだく 美 も は本来されたといる まいだ いかる かになって 「 れた やらかい」なれ、 おいようでから は は かかな はんしゅ しょう れる しん で いいさん ひっからい かま さい からなからな あえい おいまがま かい い しょう れる しん で いいさん ひっからいか かま さい からなからな あえい おいまがま まいれ や しょ ではれた いいさん ひっからい か もくない だんざい かんない かんがん かいがん かいがん かいかい か もくない だんだいがん かんがん かいまん かい かんない だん

क्षा स्थान सहस्ता स्थापिक क्षण क्षात्र क्षिते व्यवस्था स्थाप क्षात्र का स्थापिक क्षात्र के स्थापिक क्षाप्त क्ष क्षाप्त के विकास क्षाप्त क्षा क्षा क्षाप्त क्षाप्त क्षा क्षा क्षाप्त क्षाप्त क्षाप्त क्षाप्त क्षाप्त क्षाप्त क्षाप्त क

काल में जितने जीव मोक्ष प्राप्त करेंगे वे सब परम प्रमु परमात्मा जिनेश्वर भगवान् की आज्ञा की आराधना से ही अपने साध्य को सिद्ध कर सके हैं और करेंगे। भगवान् की साज्ञा की आराधना ही मोक्ष की आराधना है। अतएव भगवान् की आज्ञा के आराधन हेतु जो तप अपर बताया गया है उसकी भावपूर्वक पूर्ति अवश्य ही कर लेनी चाहिये।

तप की महिमाः

जिस प्रकार जाज्वत्यमान अग्नि जीर्ण काष्ठों को जला कर भस्म कर डालती है उसी प्रकार सयम पूर्वक किया गया तप सब कर्मों को जला कर भस्म कर देता है। जिस प्रकार सोने मे मिले हुए मिट्टो आदि अन्य वैभाविक तत्त्वों को ग्रान्न और क्षारादि तत्त्व नष्ट कर देते है और स्वर्ण ग्राप्ते सहज स्वरूप में आ जाता है। इसी प्रकार तप के द्वारा आत्मा में मिले हुए कर्मपुद्गल नष्ट हो जाते हैं और फलतः ग्रात्मा अपने सहज शुद्ध निर्मल स्वरूप मे ग्रा जाता है।

शास्त्रकार भगवतो ने उत्तराध्ययन सूत्र मे फरमाया है -

"त्रेणं भंते! जीवे किं जणयह १ त्रेणं वीदाणं जणयह। वीदाणेणं भंते जीवे किं जणयह १ वीदाणेणं श्रकिरियं जणयह। श्रकिरियाए भिवत्ता तथा पच्छा सिज्भह, युज्भह, मुचड, परिनिच्यायड, सव्बद्धस्वाणमन्तं करेह।" स्वतिक है सामान्य है स्वयं के निर्माण के सामा स्वास्त्र के निर्माण प्रेस कि कि को मोनयान की सही मही है है सहिद प्रदेशण प्रेस कि को स्वयं प्रदेश हैं, विश्व की समान के निर्माण की समान करना है सहिद साम कुछी को सामान से साम है गई है।

के मिलान के सिर्मार के की मिलान के मिलान के मिलान के मिलान के से मिलान के मिलान के

रमताको भी मन्त्रीय छ।

तथा उपसगं-परीपहों का वृत्तान्त पढ कर एवं श्रवणकर रोमांच हो उठता है। उतनी कठोच तप की आराधना तथा उत्कृष्ट सहनणीलता श्रन्यत्र कही दृष्टिगोचर नहीं होती। मनुष्य ही नहीं सुर-असुर और इन्द्र भी किम्पत हो उठे। १२ वर्ष, ६ मास और १४ दिन के दीधं तपक्चरण काल में केवल ३४९ दिन ही श्राह्मार (पारणा) किया। लागातार ६ मास का १ तप, पाच मास २५ दिन का १ तप, चार मास के ९ तप, ३ मास के २ तप, २॥ मास के २ तप, २ मास के ६ तप, १। मास के २ तप, २ मास के ६ तप, अपस के २ तप, मासखमण १२, पन्द्रह दिन के ७२ तप, अप्टम तप १२, छट्ट तप २२९, भद्र तप १, महाभद्र तप १, सर्वतोभद्र तप १, इस प्रकार १२॥ वर्ष, १४ दिन के तप.-काल में केवल ११ मास १९ दिन (अर्थात् ३४९ दिन) ही आहार ग्रहण किया। शेष समय तक सर्वथा निराहार रहे।

इस प्रकार की दीघं एव कठोर तपद्दयों के कारण भगवान्
महावीर को 'श्रमण' कहा जाता है। कठोर तप-आराधना के
कारण वे 'श्रमण' (श्राम्यति—तपम्यतीति श्रमण') के प्रदास्त
शब्द द्वारा इन्द्र से प्रशमित हुए। ममार का कोई अन्य महा—
पुरुष 'महावीर' की उपाधि से विभूषित नही हुआ। अन्य
महापुरुष 'वीर' को उपाधि से मण्डित हुए जबित श्रमण भगवान्
वद्धंमान स्वामी श्रपनी कठिन तप-आराधना के कारण
'महावीर' के स्व में तोक विश्वत हुए।

ता पद की पूजा में कहा गया है -

भारत भाग गरम रिन उसन, श्रीरणी भृति सरामा हेर विश्व परे केन्द्र सदा जिल्ला, व्यक्तिया करी स्थान हेर स्वाप स्टब्स ही यंग प्रेस स्थान की त स्थार स्टब्स में देशी इच्छा परि से सीम दिन उसा ही। प्रेरण व्यक्ति काल स्टब्स की तो जा द्वार मेंद्रसा ही।

The state of protest of the state of the protest of the state of the protest of the state of the

The state of the market of the last of the state of the s

The second property of the second sec

we are the second of the secon

the second of the second of the second of the second

द्वारिका नगरी का विनाश होने वाला था। इस उपद्रव से रक्षा करने वाला आयम्बिल तप ही था। जब तक द्वारिका नगरी में श्रायविल का तप चलता रहा तब तक कुपित देव भी द्वारिका कुछ न विगाष्ट सका । १२ वर्ष तक घर-घर में श्रायविल तप चलता रहा तब तक द्वारिका का विनाश न हो सका। यह तप की महिमा समझनी चाहिये।

नंदन ऋषि ने ग्यारह लाख अस्मी हजार चार सी पिच्याणु (११,८०,४६५) मासखमण करके तप की आरायना द्वारा निर्वाण प्राप्त किया था।

श्री गीतमस्वामीजी बंले-बेले पारणा करते थे।

काकदी के धन्ना अनगार वेला—वेला पारणा करते थे। पारणा के दिन भी आपबिल करते थे। उतने कठोर तप के कारण धन्ना अनगार का शरीर श्री—होन, शुष्क और क्षीण हो गया था किन्तु उनकी आत्मा अत्यन्त उज्ज्वल हो गई थी। भस्म राशि से आच्छादित अग्नि की तरह धन्ना अनगार की श्रात्मा तप के तेज से श्रत्यन्त मुशोगित थी।

एक बार श्रमण भगवान् महाबीर स्वामी से उनके परम भनत श्रेणिक राजा ने प्रश्न किया कि "हे भगवन् ! आपके चवदह हजार साधुओं में कौन श्रनगार महादुष्कर किया करने बाला और महानिजंरा करने वाला है ?

इम प्रश्न के उत्तर में श्रमण भगवान् महावीर देव ने

का राज्य के के स्वास्त्र के हैं है है है है के अपने के अपने के स्वास्त्र के अपने के स्वास्त्र के अपने के स्वास कारण के स्वास्त्र के अपने का अपने का अपने के अपने के अपने के स्वास्त्र के अपने के स्वास्त्र के अपने के स्वास्त

महर्क हु उर केल के देखें, दुर्द ग्रह्मेंद्र साल हरेका स्थ Kitatan be a bare on to the same short and any BET WELLS IN HELLER LES IS IN IS IN I THE BAIL WATE 着一事 Add Control 保留 見合い Antilo か あ よ みんだい だらかい 不 ひかれ 斯夫美考院 1996年至 1988年1987年 新 新花龙木 蒋子子,秦下傅 十二年 著 推跨 化化电线 经人口工程 如本,是 原代 电图 " 对 我不知何明 Angle to the total of the high for a section of the state of the Brade of chandles & r & brage wo who me والمراجع عدد عموم مد يري والماء مراجع المراجع المراجع الانتجاء المراجع المراجع 野如果上八年和日本大百年五月八十十七十七十五十二十五十五十五十五十十十十 舞出 老 会 医皮肤 医原生的 医生 化二甲醇异合 指电 化 生气 医细点 "有他 医大型性大性 医多克氏病 原甘二甲二甲甲甲基二甲甲甲甲甲 For de to graph of debrinds of it a notice of division

है जिससे नारकी का शरीर लोहू-लुहान हो जाता है इस प्रकार अनन्त, असहा, तीव्र वेदना नारकी जीव भोगते रहते हैं। सी वर्ष तक ऐसी दुस्सह यातनाएँ सहन करने से जितने कर्मों की निर्जरा होती है जतने अशुभ कर्मों की सकाम निर्जरा एक नवकारसी का तप भावपूर्वक करने से होती हैं।

पोरसी का प्रत्याख्यान करने से एक हजार वर्ष पर्यन्त नारकी के ग्रसहा दुख सहन करने से जितने कर्मी की निर्जंग होती है, उतने श्रण्भ कर्म निर्जरित हो जाते हैं।

साहु पोरसी के प्रत्याख्यान से दस हजार वर्ष तक नरक में जो कर्म निर्जरा होती है उतनी सकाम निर्जरा होती है।

पृरिमञ्ज (दो पोरसी) के तप का आराधन करने से एक लाख वर्ष के नारकी योग्य पापकर्म की निर्जरा होती है।

एकादान तप करने से दस लाख वर्ष का, नीवी तप करने से एक करोड़ वर्ष का, एकल ठाणा तप करने से दस करोड़ वर्ष का, एकल दली तप से सो करोड़ वर्ष का, श्रायविल तप करने से एक हजार करोड़ वर्ष का, उपवास तप करने से दस हजार करोड़ वर्ष का, उपवास तप करने से दस हजार करोड़ वर्ष का, छट्ठ तप करने से एक लाख करोड़ वर्ष का, श्रव्टम तप करने से दम लाग करोड़ वर्ष का नाग्क- ग्राय पापकमें दूर हो जाता है। यो ज्यो ज्यो एक उपवास वटना जाता है त्यो त्यो दम दम गुगा पापकमें नग्क मे

机动物物性食品物 机树林 医骨柱 新兴美美

क्षेत्रके कि मार्टिक के कि में हैं हैं हैं हैं है कि स्वति के कि मार्टिक के मार्टिक के कि मार्टिक क

्र प्रति के स्वति क्षेत्र क्ष

जिस प्रकार खेत मे धान्य आदि के साथ साथ घास-फूस भी उग जाता है लेकिन घास-फूप के लिये खेती नहीं की जाती है। वह तो घान्य के साथ स्वयमेव उग आता है। (मनुष्य केवल धान्य खाते है, और घास पशुओ के लिए है,) इसी प्रकार तप के द्वारा पापकर्मी का क्षय हो जाने से पुष्प तो स्वयमेव हो ही जाता है और उसके फलस्वरूप सातावेदनीय के फल-सासारिक सुख भोग स्वयमेव प्राप्त हो जाते है। परन्तु सासारिक सुख भोगो की प्राप्ति के निमित्त तप करना, महिमा पूजायाप्रशसाके हेतुतप करनातपस्या के फल को हार जाना है। जंसे कोई व्यक्ति चिन्तामणि रत्न को कीडी के बदले वच देता है तो वह भ्रज्ञानी और अविवेकी माना जाता है। ठोक इसी तरह यदि कोई व्यक्ति तप करके सासारिक फल की कामना करता है ता वह तप रूपी रत्न को सामारिक मुख रूपो कौड़ी के मोल बच देता है। इसलिय तप का उद्देश्य केवल निर्जरा और मोक्ष ही होना चाहिये। सासारिक मुखोप-भोग, स्वर्ग की लालसा अथवा कीर्ति-प्रशसा को श्रभिलापा से कदापि तप नही करना चाहिये। यह तो तप का आनुपिक फल है। सासारिक कामनाओं से किया जाने वाला तप श्रात्मा की विणुद्धि करने वाला नहीं होता है। मोक्षमार्ग मे उसका . कोई महत्त्व नहीं हैं। तामली तापस ने साठ हजार वर्ष तक तप किया परन्तु वह कामनाओं से प्रेग्ति होने से मोक्षमार्ग मे उप-मोगो नहीं हुमा। वह अज्ञान तप है। निर्जरा की भावना से को गई एक नौकारमी का महत्त्व करोडो वर्षों के ब्रज्ञान तप से वही अधिक अयस्तर है। मस्यक्ति आत्रा मोक्ष के तिय

निराहार रहने वाले व्यक्ति के विपय-इन्द्रियों के विकार-दूर हो जाते हैं। जो आसिवत रह जाती है वह भी परम-आत्म तत्त्व के चिन्तन से नष्ट हो जाती है।

गीता के जनत कथन से उपवास ग्रादि तप की महिमां स्पष्ट प्रकट हो जाती हैं। इन्द्रियों के विकारों का आहार के साथ घनिष्ठ सवध् रहता है। पौष्टिक आहार से इन्द्रिया तूफानी हो जाती हैं, मन चचल होकर उन्मार्ग की ओर चला जाता है। जिस प्रकार लगाम रहित उद्दाम अश्व इघर—उत्तर दौडता हुआ ऊधम मचाता है। उसका निग्रह करने के लिये लगाम लगाना जरूरों हो जाता है। इसी प्रकार तूफानी इद्रियों और चचल मन का निग्रह करने के लिये ता की आवश्यकता है। मोह के वन्धन से मुकत होने के लिये ता की आवश्यकता है। मोह के वन्धन से मुकत होने के लिये, कमें के भार से हल्का होने के लिये, शरीर और आहार की गुलामी से छुटकारा पाने के लिये और आतम के सहज गुद्ध चिदानन्दनय स्वरूग को प्राप्त करने के लिये तप अमोव साधन है। अतएव इन पर्वदिनों में अप्टम तप की ग्राराधना अवश्य करनी चाहिये।

शल्य रहित तपः

शत्य रहित होना तप का भूषण है। जैन मिद्धात में दान्य को बहुत बड़ा पान माना गया है। प्रत्येक धार्मिक या व्यवहारिक किया दात्य रहित होकर करने का भाग्त्येक निर्देश दिया गया है। दात्य रख कर को गई किया पापानुबंधी मानी गई है। दीर्घ काल तक यह भारत्य का कार्या होती है। ANTHORNAL PARTICION OF THE POST OF THE PROPERTY OF THE PROPERT

F, ** * * * *.

The second of th

है। प्रकट शत्रु की अपेक्षा प्रप्रकट शत्रु विशय हानिकर होता है। श्रतएव उसमे वचने के लिये विशेष जागरुकता रखनी पड़ती है। इसलिये शास्त्रकारों ने माया से वचने के लिये जगह जगह पर मुमुक्षुओं को सावधान किया है। तय का आराधन भी माया शल्य से रहित होकर करना चाहिये। तप पद की पूजा में कहा गया है —

पीठ धने महापीठ मुनीश्वर, प्रव भव मिल्लिजिन नो साध्वी लच्मगा तप निव फिलियो, दंग गयो निह सननी ही शाणी तप पदने प्रजीजे ।।

पीठ और महापेठ मुनि ने सयम का पालन तो उत्कट भाव से किया परन्तु मन में माया के भाव रहो, गुरु के प्रति मन में ईपी भाव लाये और इसकी आलोचना नहीं की तो उन्होंने स्त्रीवेद का बब कर लिया। वे ब्राह्मी और मुन्दरी के हर में जन्में। श्री मित्तानाथ जिनेस्वर के जीव ने पूर्वभव में अपने सायियों से आगे वहने की भावना से कपट पूर्वक तप का आचरण किया जिसके फलस्वहा उन्हें स्त्रीवेद की प्राप्ति हुई।

माध्यी लक्ष्मणा ने हजारी वर्षी तक कठिन तप का ग्राचरण किया परन्तु प्रपने मन से चिन्तित दुष्कृत्य की कपट पूर्वक आलोचना की, सरलता से आलोचना नहीं की ग्रतएय उसका हजारी वर्षी का किया हुग्रा तप भी सफल नहीं हुग्रा। इमित्रिये तप की ग्रारायना करने हुए माया-शत्य को अन्त करण से निकाल कर सरत और निष्कारट भाग अपनाने की हरणी महित्रहित

1 1 1 2 m m; m;

्रा त्या त्या है है स्वास्त्र के स्वास्त्र

The first of which is a single of the first of the first

भोग सामग्री का भोगने वाला वन् । मृनि ने सयम की मर्यादा को लाघकर मन ही मन ऐसा निदान कर लिया।

इसी निदान के फलस्वरूप वह मृनि का जीव ब्रह्मदत्त चकवर्ती बना। निदान करने से इच्छित भोग्य वस्तु प्राप्त तो हो जाती है परन्तु वह जीव आत्मकल्याण के मार्ग मे बहुत ही अधिक पिछड जाता है। वह आत्मकल्याण के पय पर नहीं चल सकता और विषयों का कीडा वन कर दोर्घकाल तक नरकादि स्थानों में यातना का अनुभव करता है।

ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती के पूर्व के पाच भवो के भाई चित्त
मुनि अपने भाई को विपयोपभोगों में आसक्त जान कर उमे
प्रतिवोध देने के हेतु उसके पास श्राते हैं और ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती
को भोगों की श्रसारता वतलाते हैं। अपने पूर्वभवों का उरलेप
करते हुए उन्होंने कहा कि है राजन्। श्रपन दोनों पूर्व के पाच
जन्मों से भाई—भाई रहे हैं। तुम्हारे द्वारा किये गये निदान के
कारण इस भव में हम अलग अलग उत्पन्न हुए हैं। पूर्वभव के
स्नेह के कारण में तुम्हे प्रतिवोध देने आया हूँ। राजन्।
सम्झो, सब गीत विलाप तुरय है, सब नृत्य विडम्बना हं,
सब आभरण भार है सब कामभोग दु प्त देन वाले हैं। हम
दोनों ने पूर्वभव में भी साथ माथ मथम का श्राराधन कियाथा।
यह मत भूलों कि तपोधनी मुनियों को जो मूस है वह कामभोगों में आमन्त राजा-महाराजाओं को नहीं है। श्रतएव हे
राजन्। विषय भोगों को छों रो और आत्म—कत्याण के मार्ग
पर बलें। यहां समभाने के निय में श्रापके पास आया हैं।

作業としている。 まっ 本 よられた。 まっている ない できる といる はら と かっこう か はなっかい でいまなん いいからに とってい しょう だい かい しょくか か まなっかい でいまはでいるといい ショル から もいの ないっか から ない ない から から がっしょう かん まいか はいしか

अधर्म को धर्म मानना मिथ्यात्व है। इसी तग्ह सुगुरु को कुगुरु मानना, सुदेव को कुदेव मानना और धर्म को अधर्म मानना भी मिथ्यात्व है। राग और द्वेप से अतीत वीतराग भगवत ही सच्चे देव हैं, कचन—कामिनो के त्यागी साबु ही सच्चे साधु है और वीतराग सर्वज्ञ भगवती द्वारा प्रस्पित अहिसा ग्रादि ही धर्म का सच्चा स्वरूप है। इप तत्त्व पर वास्तिवक श्रद्धा करना सम्यग्दर्शन है और इमसे अन्यथा मानना मिथ्यादर्शन हैं। यह मिथ्यादर्शन शल्य के समान दुखदायी है। अत मिथ्यादर्शन शल्य से अपने आपको वचाकर गुद्ध श्रद्धामाव का आश्रय लेना चाहिये।

इस तरह तप और सयम की निर्मल ब्राराधना के लिये कार वताये हुए तीनो शल्यो से रहित होना चाहिये। इत्य युवत आत्मा चाहे हजारो वर्षो तक तप करे वह सय निष्फल होता है। इसलिये अन्त करण के सव शत्यो को निकाल कर, हृदय की भूमि को स्वच्छ बना कर तप का अनुष्ठान करना चाहिये जिससे कत्याण की परम्परा को प्राप्त कर सके।

वाहा और आभ्यन्तर तप

जैन परम्परा में तप के दो भेद कहे गये हैं—(१) बाह्य और (२) श्राभ्यन्तर । बाह्य तप मुख्यनया शरीर—मापेक्ष होता है जबिक आभ्यन्तर तप चित्त की श्रन्तरम वृत्तियो से सम्बद्ध होता है । बाह्य तब का असर शरीर पर परिलक्षित होता है और नह बाहर जन साधारण में देगा जा गाना है ।

३ वृत्ति संक्षेपः -

ऊनोदरी तप में खाद्य वस्तु का प्रमाण कम करने का कहा गया है जबिक इस तप में साद्य वस्तुओं की सहया कम करने का कहा गया है। यथाशांवत कम से कम वस्तुओं से अपना काम चला लेने की आदत डाळने से इन्द्रियों पर काबू प्राप्त होता है और श्रनेक प्रकार की झझटों से सहज मुनित मिल सकती है। जीवन में सात्विकता लाने के लिये उस तप की बहुत आवश्यकता है। जैन शामन में प्रतिदिन चवदह नियम धारण करने का विधान किया गया है उसका अभिप्राय भी वृत्ति सक्षेप तप से है।

४ रस परित्यागः-

विकार उत्पन्न करने वाले पीण्टिक एव मादक पदार्थों का परित्याग करना रस-परित्याग है। मध्, मन्दान, मद्य और मास ये चार महाविकारी पदार्थ सर्वेया त्याज्य और अभक्ष्य हैं। दूध, दही, घा, तेन, गुड-धाकर और पगवान्न ये छह विगय छोडना रस परित्याग तप कहनाना है। रमो से जिल्ला का रस बढता है। जिल्ला के रस से समार का रस बढता है। जिल्ला के समार का रस बढता है। जिल्ला के स्वां प्रमानों में प्रमानों बनता है। अतएव स्थम में उद्युवन बनने के लिये रस परित्याग तप करना ही चाहिये।

५ कायवलेशः-

द्यारीरिक मुत्त-तम्।टतः सो कम तस्ते के लिवे तस्टो

الإي فيهيد الإنفاذة المستدار يدمل بعداء الله أن المستردة الإنسان المستردة ا बेंग के के कीश्य पंत्र भाष में बाता प्रतान हैं। धान्ता प्रतान महाम नाम प्रतान the place that the security their memority is the high 생고마차 유다소 파내드는 시를도 통사는다다 수 되나? 수는 수는 다른나는 모 manders where where is also thank alless to the rest in the age and the alone that a section of a section of the and alone of the 歌人名 化 新 知此者 化 老部 美華 春日 斯勒 人名美国斯 超级 配 四人名 the set of a many granger of Fifth and the one of the second The garages with the form the man was and a server 医乳头切迹 養 我们的父亲就是一个女子的一样 好好 说 经营业报酬 were the second of the man the man the man the 李 500 中下京大学 安全年前 海南北京 新沙克 正一郎 一会二 医水杨素 医水杨素 医水水 医水水 医水水 医水水 人名克格斯 医水杨 李明 李明二年 "安村"李明十年的李明本 新州 四十十五十五 大田 化香香 養 不不有的 不不不不 不不 不 不 不 the first first and the first of the first that the 医 "这 这条个 然而是 化二烷基 化二烷 "你我也不 一步 的" "一点 新发 人名 the commence of the company of the property of E will he had the

अत उससे बचने के लिये यह तप किया जाता है। एक जगह स्थिर होकर बैठना, व्याख्यान—सामायिक आदि धर्मिकया के अवसर पर स्थिर होकर बैठना, बार बार हाथ पाव ऊँवा नीचा न करना, निरर्थक हलन—चलन न करना, यह प्रति— सलीनता तप है।

उक्त रोति से बाह्य तप के छह भेद बताये हैं। अब आभ्यन्तर तप के छह भेद बताये जाते हैं। १ प्रायश्चित, २ विनय, ३ वैयावृत्य, ४ स्वाध्याय, ५ ध्यान और ६ कायोत्तर्ग।

१ प्रायश्चितः-

अज्ञानदशा, मोहावस्था या विषयादि की वासना के कारण जो भूलें हो जाया करनो है उन के लिये परवाताप करना, गुरु ग्रावि पुज्य पुरुषों के समक्ष सग्ल भाव से किवेदन कर देना और वे जो दण्ड देवे उसे स्वीकार करना प्रायश्चित तप है। यह तर प्रात्मा के मैल को हो देने वाला, और आत्मा को शुद्ध वनाने वाला कहा गया है। प्रायश्चित की आग में तप कर आहमा रूरी मोना निर्मल हो कर निखर उठना है।

२ विनयः-

वितय, धर्म का मूल कहा गया है। विनय से नद्यता आती है। नद्यता से गुरु की प्रसन्नता प्राप्त होती है। ग्रु की प्रसन्तता से सम्बद्धान की प्राप्त होती है। सम्बद्धान से विरति और विरति से स्वर-निर्मेग होती है। स्वर-निर्मेग से मोक्ष सार हो। इ. १ - १ कामा है । जास स्वरूष साराण सामा प्रत्या है। से पूर्व है कि इस ले । काम बादाध ली हि स्वरूप के स्वरूप है। सामा इ. १ में मा है। बादाच यह दिसाई स्वरूप काम है। दिसाई है वें स्वरूप सामा मुख्य की सबसे हैं। । भाषा साम वह दे तह है। है। से इस काम मुख्य की सबसे हैं। । भाषा साम की तह साम के स्वरूप की काम है। के इस का सामा है है की है। है से इस भाष तम स्वरूप हिसाल के स

素着微型的**

यथायोग्य वैयावृत्य करने से आतमा ससार सागर से पार हो जाता है।

४ स्वाध्याय:-

श्रुत का पठन पाठन करना भी तप माना गया है। आत्मा की परिणित की श्रुद्ध करने वाले ग्रन्थों का वाचन करना, तत्व विषयक प्रश्नोत्तर करना, पढ हुए ग्रन्थ की पुनरावृत्ति करना, तत्व चिन्तन करना तथा धर्मोपदेश देना या श्रवण करना, यह सब स्वाध्याय तप ह। अपने मन को ऐसी सात्विक श्रवृत्ति में लगाये रहने से आत्मा स्वाभाविक ग्रानन्द की अनुभूति करके मोक्षमार्ग में प्रगति करता रहता है। जो श्रवज़त आत्मा ग्रवशन आदि तप करने में कर्मोदय से असमर्थ होते हैं उन्हें स्वाध्याय तप के द्वारा उसकी पूर्ति करने का निर्देश दिया गया है। आत्मा की श्रुद्धि करने के लिये स्वाध्याय तप की आराधना अवश्यमेव करनी चाहिये। यह ज्ञान-दशन और चित्र्य की दृढता और निश्चलता को बढ़ाने वाला है। मक्षप में स्वाध्याय तप मोक्षमार्ग को प्रशस्त बनाने वाला है।

५ ध्यानः-

चित्त का निरोध करना ध्यान कहलाता है। इसके चार भेद बताय गये है - १ आर्गध्यान, २ रोद्रध्यान, ३ धर्म-ध्यान, और ४ शुक्र ध्यान। दारीर धन और काममोगो को प्राप्त करने की और प्राप्त होने पर उनका वियोग न होने की चिन्ता करना श्रातंध्यान है। अप्राप्त विषयमोगो को भोगने का

land at legit want sout about \$1 aug The significant significant the state of the same is the हेंद्राके, श्रीब के क्षमान संकृतक है स्टाउन्ह, बहुत, रहीक संरक्षांह्रकर स्वार नेगान करते हो। अनेक अन्तर मेर्से एक जनकर हिन्दान के मोर्ट elforet mere paragraf entre de trois g ng an ba di aye dan endê n fanna e dag agen 트러드, (라마스 및 외국에는 성)는 성) 및 문행에서 준 및 통원되어 건강을 써 됐다. 未复 化杂子水水 经未收 化等一年 斯克斯 龍 医二二二甲二甲基甲 hand the fire of the first and the time and the tent a think the Arian Ar bon beand, show y that a a to as a fer a fer the to the train of the train of the table は to a table は to a table は 安。 其 也 弄色妆 【白 茶】 多年十十 耻 無八出行。 五 日日 知识记录表 花真春 THE BOAL A & WARRY MINDERS HAT BEET HAT BEET 我去你上午了 布布人之口 军事第二 端 人工 数十十二年的 数 本日 بالعاع يوالي المالية المالية المراجع ا Kick ne kenn f ne my dett here to be den men والمدائق محاج الخال لا فالحاجة يك لجابة جاء كالإسام إلى الأحيل المادية AMERICAN CONTRACTOR WITHOUT MET A TO A MINE AND AND THE 三、文字中中一种中华中国大学中华中国大学等人的 the property that the property of the property of the transfer and the state of t

६ कायोत्सर्गः-

चित्त की एकाग्रता के लिये की जाने वाली किया-विशेष को कायोत्समं या काउत्मम्म कहा जाता है। सामायिक प्रतिक्रमण आदि कियाओं में 'काउसम्म' किया जाता है। मन, वचन काया की प्रवृत्ति को रोक कर पूर्ण समाधि भाव में ग्रा जाना कायोत्समं है। मन की एकाग्रता से सकल आख्यों का निरोध हो जाता है और आत्मा अनन्त कमें वर्गणाओं का क्षय कर डालता है। मोक्षमामं की मजिल को पाने में इसका बहुत अधिक महत्त्व है।

संवत्सरी प्रतिक्रमण में १००८ घव।सोच्छ्वास का काउ सगा करना चाहिये। 'चदेसु निम्मलयरा' तक लोगस्स का पाठ गिनने में २५ श्वासोच्छ्वास होते हैं। चालीस लोगस्स गिनने से १००० घवासोछ्वास तथा एक नवकार गिनने से ८ श्वासोच्छ्वास यो एक हजार आठ श्वासोच्छ्वास होते हैं। लोगस्स न द्याता हो तो १६० नवकार गिनना चाहिये। लोगस्स न द्याता हो तो १६० नवकार गिनना चाहिये। चौमासी प्रतिक्रमण में २० लोगस्स, पाक्षिक प्रतिक्रमण में वारह लोगस्स का कायोत्सगं करना चाहिये। एक नवकार के काउसगा में १९६३२६७ इ पत्योपम का तथा एक लोगस्स क काउसगा से ६१३५२१२ है पत्योपम का देवायु का वध होता है।

्ड्स प्रकार बाह्य आभ्यन्तर तप के स्वस्थ्य को समझ का गोपन किये बिना श्रनुपन मंगतमय तप an b. feinliche baut aiflig ?

· 类型的形:-

प्रभाग स्वाधिक श्रेष्ट स्थान स्थान

त्र स्ट्रिक क्षेत्र क्ष त्र क्षेत्र क्षेत

4 , to hand 1.25 6

तीसरा ट्याख्यान

चैत्य-परिपाटी तथा एकाद्श् वार्षिक कर्त्त व्य

विशुद्धि का पर्व

महामहिमामय श्री पर्युपण महावर्व का ग्राज तीसरा दिन है। इन दिनो में एक अनोखा उल्जासमय वातावरण दृष्टिगोचर हो रहा है। श्रात्त्रशुद्धि के इन मगलमय दिवसो में वार्मिकता का उमडता हुआ प्रवाह आप सव मृमुक्षुओ के अन्त करण से प्रवाहित होता हुआ पिलक्षित हो रहा है। जिस प्रकार सुगध से भरा हुआ फूल अपने सौरभ से आसपास के वातावरण को सुरभित कर देना है इसी तरह मानव की मनो-भूमिका मे उत्पन्न होने वाले सद्भाव के सुमन भी आस-पास के बाताबरण को मुरमित बना देते हैं। यह एक माना हुआ सत्य है कि मानव के मन में उद्मूत प्रत्येक अच्छा या ु बुरा विचार वातावरण पर अपना प्रमाव अफित किये विना नहीं रहता। ग्रच्छी भावनाओं का अच्छा असर होता है और ब्री भावनाओं के कारण बातावरण भी दूपित हो जाता है। हमारे यहाँ पर्युपण पर्व की आराधना हो रही है, इस प्रमग पुर प्राय प्रत्येक व्यक्ति के मन में सद्भावनाओं का उद्गम

李性 假儿女子

को देस कर कई आसन्न भन्य प्राणी उनके प्रति भिवतभाव पूर्वक ग्राक्षित होते हैं और मिथ्यात्व का निकन्दन कर सम्यवत्व की प्राप्ति करते हैं। मोक्ष-प्रमाद की नीव मम्यवत्व हो है। अतः सम्यवत्व प्राप्ति का बहुत अधिक महत्त्व माना गया है। चैत्य-परिपाटी सम्यवत्व का महत्वपूर्ण अग है। यह इमलिये भी अधिक प्रभावशाली अग है कि यह स्वय की समिकत को निर्मल करने के साथ हो साथ ग्रन्य अनेको प्राणियो को सम्यवत्व प्राप्त करने में सहाय-भूत होता है। ग्रतएव पर्युपण पर्व के पवित्र दिवसो में चैत्य परिपाटी रूप सत्कर्त्तव्य की भाव पूर्वक आराबना करना स्व-पर के कल्याण का कारण माना गया है। इसके सबब में श्री वज्यस्वामोजी महाराज का बृत्तान्त मननीय है। वह इस प्रकार है:-

श्री वजधरस्वामीजी महाराज का चमत्कार

किसी समय श्री वज्यस्वामीजी महाराज पूर्व दिग्विभाग से उत्तर दिग्विभाग में पधारे, तब वहाँ भयकर दुष्काल पड़ा हुग्रा था। लोगो को पेट भरने में तकलीफ पड़ती थी। दान- बालाएँ बन्द हो गई थी। मुनिवरो को निर्दोप आहार प्राप्ति में बड़ी विठिनाई होती थी। मुनिगण जब श्रावको के घरो में आहार-प्राप्ति के लिये जाते ता स्वय श्रावक भी "आहार द्यापत है" ऐपा कह कर टाला ले लेते थे क्योंक उनके परिचार के लिये भी आहार की तगी थी।

हुटकाल के कारण ऐसी कदयेंना होती हुई देग कर

रा राज्य कार ने क्यांकारी क्षणकात को कह किया कार्याकी की कार व किरोपित की की रवाद निकासकार की रोति संकट में कार्य बार रहते विश्वा का व्यक्ति कार का कार की की वों के बाँका में उपानिक का कोंग्र के विश्व दिल्या का कार्योग करते के लेख इसे हैं।

भी सन्द की दिल्ली र का अगान के किया साम्याने क्षण्य रहे कर के देश देश है हैं है है के के कार देश हैं ए जार पर जातू है। 목도는 따려 짧다. 교교 학생 불교회 등때의 전을 느까지 있다는 네가 보고 한 환자다 医皮肤支持性 田東 经收益 恕 机铁管 驱 山森區 电子 多數 机放光 数点 斯坦德 縣 艾斯姆 養性性 电磁震管 性時 斯林斯 野虫虫科 经集工 电线 優々 definitely the tight with the to gather to the transmit 全通 医二酚吗 经免损债务 衛夫 香香油 不加口 獨自語 把 表面 数字 中 医大大性 化苯 经工工 制度 经有效的 原本 经工作 不知 医生子 新安水石品 我一个女孩 我了一 数不成務 上来,我也 多山子 生 好好 我会でしていまいないないないない おうかいない だらうべっか かいちゃ び 2 3 5 7 4 5 7 miles miles miles of the to the to the to the JAK BUR SIGH BUR AS BUR SING & July BO FORD · 我们是我们是我们的一个人的,我们就是我们的一个人的人们的 ふる ぬかとっと はっかんべく とかし ぶっしょい 最れない エル さん 銀子 不一十 第一一 公司 医 有一年之一者 代表 衛一十分神 人民 多十八十 我们 安全的 我一样要 我 不上 在 , 是 多 我 是 你 人 在 一点 人 是 ~~ राजा बौद्धान्यायी था अत उसने सत्ता के वल से आदेश दे दिया कि "जैनियो को पुष्प न वेचे जाए"। इससे सिर में गूंथने के लिये भी जैनियो को पुष्प नहीं मिलते थे। क्योंकि बौद्धों की मान्यता थी कि इस वहाने पुष्प खरीद कर जैन लोग जिन—मन्दिरों में पुष्प चढा कर सुन्दर शोभायमान पूजा कर सकेगे। राजा की आजा के कारण अधिक मूल्य देने पर भी जिनियों को पुष्पादिक नहीं मिल पाते थे। इसलिये जिन—मन्दिरों में साधारण रीति की पूजा ही की जाने लगी। मुह मागा मूल्य देने की तैयारी होने पर भी पुष्प न मिलने के कारण जैनियों के हृदय में भारी खटक थी। अपने आराध्य देव जिनेश्वर भगवतों की यथोचित पूजा न कर सकने के कारण जैनों के दिलों में भारी दुख भरा था।

इधर श्री पर्युपण पर्वं समीप आ गये। जैनियों को यह वात अधिक खटकने लगी 'क्या पर्वाधिगाज पर्युपण के दिनों में भी भगवान की सुन्दर रीति से पूजा न हो सकेगो ? यह विचार श्राते ही हृदय में गहरी वेदना हुई। श्रावक सध एकित हुआ। विचार—विमर्श क परचात् श्रावक संघ आचार भगवान् श्रीमद् वज्रास्वामीजी महाराज की सेवा में गया और उन्हें सारी वात निवेदित की। अश्रुपूर्ण नयनों से श्रावक—मंघ ने आचार्य भगवान् से विनित करते हुए कहाकि, ''श्री जिन—चंद्यों में प्रतिदिन विश्रोप प्रकार की पूजाएँ होती हुई देराकर ईपीलु वौद्धों ने राजा से कह कर हमें पुष्प न देने का आदेश निकालवा दिया है। इस राजाजा के कारण हमें पुष्प नहीं

 जिन मन्दिरों की उन पुष्पों से पूजा की। इस चमत्कार में जैन शासन की महती प्रभावना हुई और पुरी के राजा ने बीढ़ धर्म छोड़ कर जैन धर्म स्वीकार किया।

श्राचार्यं भगवान् श्रीमद् वज्यस्वामीजी महाराज दम पूर्वों के धारक ये और श्रतिशय ज्ञानी तथा श्रागम व्यवहारी थे। ऐसे महापुरुषो की बात निराली ही है परन्तु इस बृत्तान्त पर से यह मूचित होता है कि पर्वाधि गज श्री पर्युपण पव को अट्ठाई के दिनों में सुश्रावकों को जिन मन्दिरों में विशेष रूप से जिनेश्वर भगवर्तों को पूजा करनी चाहिये। अपनी शक्ति के अनुसार श्रावको को उन्छास पूर्वक उत्तम साधनो के द्वारा पूजा करनी चाहिये। इसमे भी जैन शासन की प्रभावना है। श्रावक चैत्य परिपाटी करने के तिये निकले तब पूजा की उत्तम सामग्री साथ लेकर निकले । इससे दूसरो को भी प्रेरणा मिलती है और अन्य लोगो पर भी सुन्दर छाप पडती है। श्रपने यहाँ पूजा-भिवत के जमे उत्तम साधन बताये गये हैं वैसा श्रन्यत्र नही है । अत. उससे दूमरो पर प्रभाव पडता ही है। इस प्रकार चैत्य परिपाटी शासन की प्रभावना का कारण होने के साथ ही साथ मम्यवत्य की निमेलता का निमित्त है।

चेत्यों का सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्त्व :

यद्यपि चैत्यों का मूलभूत उद्ग्य धानिक और आध्या-रिमक विकास है तदपि उनके साम्युनिक और ऐतिहासिक महत्व को भी ओजल नहीं किया जा सकता। जैन सम्युनि के

कराएक द्र, सब्दान रहीब कराज्य से किस सर्वेदारी की समूहणपूर्ण क्षेत्रक वस्तु है। अध्यक्तम प्रतिकास की श्रीमानंत प्रतिस्थि श्रीम में देशकी खुद कुई है ब्यामना अवस्था के हैं ने बहार क्षार हैते सहै जब h ky n g " Enthaus andan" gia ha" uchun finde wh might mad betreat many bearing along the maternative Bather to styling of the section of the section to the mention in the second and the second of the comment · 大意有致性情况的1935年中,他就自己下达人情况在例如如 医海绵性 最级的 医人名 真 後 成 " 自 人 一 二 是 在 医上午 在 在在地區 聖明 生工作 1年 3年 中代代本 四 声 () 新京 本下 和中華 事品等 我我我说你 如此不不明人年本 我不知 我不知 丁 不在此 小的 小海 我 門 孝世 到了我就是是一次不是我不是 中 不不 日 本 是 . 夢 4

大川 海 - 1 年

The second secon

की सम्पत्ति को चैत्य निर्माण मे लगा कर वास्तव में जैन यासन की महती सेवा बजाई है। उन्होंने अनेक भव्या-त्माओं के लिये सम्यक्त्व का द्वार खोलने का उपकार तो किया ही है साथ ही जैन सस्कृति को ऐतिहासिक अगरता भी प्रदान की है।

विषम काल में आलम्बन :

देवाधिदेव तीर्थं द्धर भगवान् के साक्षात् अभाव में विषम दुपम काल में ज्ञानी भगवतो ने तीन आलम्बन फरमायें हैं—जिन विम्ब, जिनागम और जिन चैत्य। इन तीन का आलम्बन लेकर पचम विषम काल में भव्य जीव मोक्षमार्ग को चाराधना कर सकते हैं। ज्ञानी भगवतो के इस फरमान से सहज ही समभा जा सकता है कि इन तीन आलम्बनों का कितना श्रधिक महत्त्व है। यही कारण है कि महाराजा सम्प्रति, कुमारपात आदि राजाओ ने, उदायन—सज्जन विमलशाह श्रादि मित्रयों ने तथा कई घनकुबेर शाहों ने अपनी सम्पत्ति का सदुपयोग जिन—मन्दिरों के नविनर्माण तथा जीर्णोद्धार में किया है।

सज्जन मंत्रीव्यर ने तीथंराज गिरनार पर्वंत पर भगवान् श्री नेमिना यजी के मन्दिर के जीर्णोद्धार का बहुत बहा काम अपने हाय में लिया। उसने मौराष्ट्र के सेठो को बुलवाया। उनके सामने उस महान् कार्य की रपरेसा प्रस्तुत की। ठाणा देवली के भीमा सेठ ने अपनी सम्मत्ति इस कार्य

here go he man e night a nicht bie gebiet nicht. The beautiful majores of all the majores and beautiful and a second g . fine m id it he a that the authorise and declaration Egusch na trans blat & Blatch & Blatch & Children as bet in his a serieta diginalist of mater & done it down that he stated me Live but the section of the section of which is not a so that a factor to grant don't

The second of th · 有一次 · 有一点

and the same of th

to a state of the contract of and c for the second s Legan Dan Contraction to the form with many to the same same and a ways of a

कोई एक चीज मांगने का कहा था। उक्त दम्पित ने सन्तान की मांग न रखते हुए मिन्दर के निर्माण में सहायता की इच्छा व्यक्त की। िकतनी महान् हैं इस दम्पित की प्रभू-भिनत । अपनी सम्मित को मिन्दर-निर्माण में लगा कर विमलशाह ने अक्षय पुण्य संचय करने के साथ ही ऐतिहासिक अमरता प्राप्त कर ली। न केवल जैन संसार में ही अपितु सारे विञ्व में उनकी यशोगाथा युगयुगान्त तक गाई जाती रहेगी। सन्तान के जिरये से अमर रहने की मानव की अभिलाषा वास्तव में मूर्खता पूर्ण है। अपने सत्कार्यों के द्वारा उपाजित यशो राशि ही व्यक्ति को अमरता प्रदान करती है।

इस प्रकार थापके पूर्व-पुरुपो ने भव्य चैत्यो का निर्माण करवाया है। एसा करके उन्होंने भव्य जोवो के लिये कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर दिया है। जिन चैत्य और जिन-विम्ब का ग्रालम्बन लेने से भावना की विशुद्धि होती है, प्रमोद भाव की जागृति होती है, भिवत में रग जम जावे और उल्लास आ जावे तो प्रभुदर्शन से कल्याण हो जाता है। प्रभुदर्शन से कल्याण की प्राप्ति, वन्दन से इच्छित-प्राप्ति तथा पूजन से इहलोक-परलोक की पुण्य सम्पत्ति यावत् मोक्ष की प्राप्ति होती है।

इन वातो पर ध्यान देकर पर्युपण पर्व के पवित्र दिवसो में चैत्य-परिपाटी रूप मत्कत्तंत्र्य का मलीमानि आराधन करना चाहिये।

के न के बहु कहना न्योंका सहस्य कि हम प्रकृत हैं देश हैं कर देशों के हैं नहीं हैं के उसी के की समाय की माना कर कर कर कर कर हैं हैं की हैं की की की समाय की क a martin falt of sing to an and a titulan selation कोई इतिहरूत केरे सहीत हो। यह कार्ति हैं । उदलब क्यांची सूत्र सहित्या De Septem of the September 20 S the states became at a section of the states THE REPORT OF THE PART OF THE The property of the said of the form of the first the first of the fir En bour he has a strackly no west which he had been he fallen bilan el sitte fant dere de fan en チャ・ヤップット

when her had been a been a second of the second Ent. される あといか ないみもいろれないいち かんしゃ かしょう あしゃ 李大大大学 一次中 老本 安下 多古人 大下 多 一十年 一年 十年 a little and an in the second to the second 我也不明日本人等各人不幸 在外人 我和你 在一个事人的 his to an an an an an an an and the stand of the desire direct to the table of the tent of the

इस प्रकार अमारि प्रवर्तन, म्वधर्मी वात्मल्य, क्षमापना, अप्टम तप की आराधना और चैत्य परिपाटी रूप पाच सत्कर्त्तव्यो का निरूपण किया गया है।

इन पाँच सत्कर्तव्यो की आराधना के द्वारा पर्युपण पर्व की वास्तविक सफलता होती है। स्राशा है, आप सब इनको हृदयगम करके व्यवहार मे लावगे और अपनी आत्मा को कल्याण के मार्ग पर अग्रभर करेंग।

एकादश वार्षिक कृत्य:

सघार्चादि सुकृत्यानि, प्रतिवर्षं विवेकिना । यथाविधि विधेयानि, एकादशमितानि वै ॥

मानव-जीवन की सफलता ऐश-आराम या भोगोपभोग
से नहीं अपितु धर्मावरण और सत्कृत्यों से होती है। मानवशरीर अलकारों या सुन्दर वेशभूपा से सुशोभित नहीं होता
अपितु परोपकार, दान, तप, सयम आदि सद्गुणों से अलकृत
होता है। कान की शोमा कुण्डल से नहीं, शास्त्र श्रवण से
होती है, हाथ की शोभा ककण से नहीं दान से होतो है;
चरणों की शोभा नूपुरों या सुन्दर उपानहों से नहीं बत्कि
तीर्थगमन से होती है। चिन्तामणि रत्न क समान सुदुर्गम
मानव-शरीर को भोगोपभोग में लगाय रत्ना सोन क पात्र
मंं कूडाकचरा भरने के समान है। श्रतए विवेक सम्बन्न मानव
का कत्तंव्य है कि वह अपने जीवन की धर्मावरण के द्वारा

पहेरामणी स्रादि बहुमान पूर्वक प्रदान करना सब-पूजा के अन्तर्गत जाता है। सघ पूजा तीन प्रकार की वही गई है-१ उत्कृष्ट, २ मध्यम और ३ जवन्य । सकल सघ की बहुमान पूर्वक भिवत करना, समस्त श्रावक श्राविका सघ को अदि पूर्वक भोजन कराकर पहेरामणी करना उत्कृप्ट सघ पूजा है। वस्तुपाल महामत्री प्रतिवर्ण सघ को ग्रपने घर अमित्रित करते थे और विपुल द्रव्य खर्च करके वहुमान पूर्वक सघ की भिवत करते थे। इतना आयिक सामर्थ्य न होने पर कम से कम साधु साध्वियो को मुहपत्ति तथा श्रावक श्राविकाओ को एक एक सुपारी बादाम इलायवो देकर भी जघन्य सप पूजा के मत्कृत्य की आराधना करनी चाहिये। उत्कृष्ट और जघन्य के बीच मे अपनी शक्ति के ग्रनुमार यथाशक्ति सघ की पूजा भक्ति करना मध्यम पूजा है। यहाँ यह ध्यान देने योग्य वात है कि सघ पूजा मे भाव-भवित का जितना ग्रधिक महत्त्व है उतना साधन सामग्री का नहीं। प्रत. यह कोई जरुरी बात नहीं है कि सम्पन्न घनवान् व्यक्ति ही सघ पूजा कर सक्ते है, निर्धन व्यक्ति सद्य पूजा क्या करे ? सघ पूजा की भावना हो तो निर्धन भी सम्यक् प्रकार से सघ पूजा कर मकता है और उसके द्वारा की जाने वाली सघ पूजा का विशेष महत्त्व होता है। क्योकि कहा गया है कि-सम्पत्ति होने पर नियम (परिग्रह-परिमाण), श्वित होने पर सहनशीलता, युवावस्था मे स्रह्मचर्य और दरिद्र श्रवस्था में किया गया थोडा भी दान; ये चार वस्तुएँ महा लाम प्रदान करने वाली होती है। इस विषय मे श्रायक रत पुणिया श्रावक का उदाहरण मननीय है।

हा ना साम की भेग पूजा :

लित नहीं हुए ! मगध का सम्राट् श्रेणिक उनकी एक सामायिक के बदले अपना समस्त वैभव और साम्राज्य देने को तत्वर
है परन्तु पुणिया श्रावक को उसकी रच मात्र भी इच्छा नहीं
है। वह ग्रवने आत्मिक वैभव और मतोप के महासागर में
निमम्न है, वाह्य धन दोलत उसकी शान्ति को भग करने में
समर्थ नहीं है। यही कारण है कि देवाधिदेव तीर्थं द्भार श्रवण
भगवान् महावीर देव के मुखार्यवन्द से उसकी प्रशमा के शब्द
निकले। पुणिया श्रावक की यह सघ पूजा, धनकुवरों द्वारा की
जाने वाली पूजा से कही अधिक श्रेटठ है।

पुणिया श्रावक के इस उदाहरण से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि उदारता ग्रात्मा का गुण है। धनवान ही उदारता वता सकते हैं, धनवान ही धर्म के साधनों को बना सकते हैं, ऐसी कोई बात नहीं है। धर्म की भावना वाले माधारण व्यक्ति भी लाभ ले लेते हैं और धनवान् कोरे ही रह जाते हैं। धर्म के लिये पौट्गलिक पदार्थों का भोग देने की वृत्ति जब आती है तभी धार्मिक अनुष्ठान आनन्द पूर्वक सम्पन्न किये जा सकते हैं। ऐसे ही व्यक्ति धर्म को दीपा सकते हैं।

वर्तमान में अधिकांश व्यक्तियों को धर्म की अपेक्षा सौमारिक पौद्गलिक पदार्थों के प्रति विशेष आकर्षण है इमिल्ये वे धार्मिक अनुष्ठानों की अवहेलना कर देते हैं। धर्म को अपेक्षा धन को महत्व देने वाले व्यक्ति कदापि धर्मानुष्ठान नहीं कर सकते और न सुख-धान्ति का आनन्द ही ले सकते हैं। जीवन में सतोपपृत्ति और सान्विकता आधे विना सच्चे सुल की अनुमति

THE CONTROL OF THE PROPERTY OF THE CONTROL OF THE C

the state of the s

The part of the property of th

श्रावको को तग्ह श्राविकाओं का भी वात्मत्य यथा-योग्य बहुमान पूर्वक करना चाहिय। मधवा हो या विववा, कुमान्कि हो या युवती और बृद्धा हो, श्रीमत हो या गरीब हो जो कोई भी जिनेश्वर देव की श्राज्ञा में चलने वाली हो उसका भिवतभाव पूर्वक वात्सत्य करना चाहिये।

कोई यह शका कर मकता है कि स्त्रियों की जगह २ निन्दा की गई है, उन्हें नरक का द्वार कहा गया है, मोह का मन्दिर बताया गया है, उनमें झूठ, अविवेक, करट, मूर्णता, श्रानुरता, अतिलोभ, अपवित्रता और निर्दयता ये आठ दोग स्वभावत बताये गये हैं। सूर्यकान्ता, चूलणो, किपला, नागश्रो आदि स्त्रियों ने श्रपने दुष्कमों से इमे साबित कर दिया है तो स्त्रियों का बहुमान क्यों करना चाहिये?

डनका समाधान करते हुए शास्त्रकारों ने कहा है कि पापाचरण और धर्माचरण का सबध पुरुपत्व या स्त्रीत्व के साथ अविनाभूत नहीं हं। यह नहीं कहा जा सकता कि स्त्रियों में ही दुःटता आदि दुगुणं भरे होते हैं और पुरुप मात्र सदाचारी और गुणवान होते हैं। पुरुपों में अनेक महाकूर, नास्तिक देव—गुरु के निन्दक और विश्वासघाती देग्ने जाते हैं। खून, हत्या ठगाई आदि भयकर पापकमं करने वाले पुरुपों की सट्या कम नहीं है। अत्र एवं स्त्रियों को होन दृष्टि से देखना अविवेक पूर्ण है। स्वाध्याय रत्नावली में कहा गया है—

"सती स्त्रियों निर्मेल और पवित्र हैं। मोह का मन्दिर होते हुए भी वे मोह का नाश करती है। ये मच्नी गृहिणी 本語、より、知ら、古人 身 で、 の、 あんしんないたいが、 teat いいまる ちょりま んとう しゅっぷ んないん よっちゃんり こん はで しした れた ちゃんかく あまみる ら むしなん しょ しょ しゅ かま 気 では かい ない れる おものれ らな あるのまら ないしなん でいるよれがないから でっぱかる から しゃ ないれがない な かいかががいるかん は、ようでは、ようで、 まみなら からし 、 とないれたがな かまがま あるけまら は、まっぱっぱらょべかな から しいいっぱ ちょ まれる れんなる まばし かいがっ

THE TOTAL TREATER

ある 2 mg 1 mg - 1 m - 1 m - 1 m - 1 m - 1 m - 2 mg - 1 m -

The second of the state of the second of the

जनसमुदाय के 'जय जय' के तुमुल घोप के साथ श्री जिनेस्वर देव का स्वर्ण का रथ तैयार किया। वह स्वर्णरथ मेरु पर्वत के समान सुष्टोभित लगता था। **उस रथ पर वि**गाल द^{0ड} वाली ध्वजा थी । उस पर छन लगे हुए त्रे । दोनो तरफ ब्वेत शुभ्र और मनोहर चवर ढोरे जा रहे थे। इस रथ मे प्रक्षालन, विलेपन और पुष्पो से अग रचना की हुई श्री पार्श्वनाय प्रम् की मूर्ति स्थापन की हुई थी। सकल सघ ने उत्साह पूर्वक ऋद्धि सहित उस रथ का कुमारपाल राजा के राजद्वार पर लाकर स्यापित किया । उस समय वाद्यो और वादित्रो का नाद दसो दिशाओं को गुजायमान कर रहा था। मुन्दर तरुण स्त्रियो का समूह रथ के आगे गृत्य कर रहा था। उस रथ को सामन्त तथा प्रधान राजमहल में ले गये । तत्रश्चात् कुमारपाल राजा ने रथ मे रही हुई प्रभुजी की प्रतिमा का पट्ट बस्त्र तथा स्वर्ण के अलकारो से पूजन किया। विविध नृत्य गान करवाये । धार्मिक श्रानन्द पूर्वक रात्रि व्यतीत कर राजा रथ सहित नगर के वाहर आये। वहा बनाये गये भव्य मण्टा मे रथ को स्थापित किया। राजा ने रथ मे रही हुई प्रतिमा का पूजन किया और चतुर्विद्य सघ के समक्ष स्वय ने आरती उतारो । तत्रश्चात् रथ में हाथी जीत कर उसे नगर में चल समारोह पूर्वक धूमधाम से घुमाया। स्थान स्थान पर बाधे गये मटपो में विस्तार वाली रचना द्वारा उत्पव को दीपाया । कुमार-पाल महाराजा द्वारा की गई रथ यात्रा वे अनुसार श्रायको को रथयात्रा का आयोजन अवस्थमे । करना चाहिसे ।

स्क्रांत्रके क्षित्रस्यात व्यक्तिः अवस्यः भारती र प्रकारणकार्योः भारता स्थान दर्भ स्वाप्तस्यात्रीः भारता स्थान दर्भ स्वाप्तस्य स्थानको विस्थानि

The state of the s

जिन महान् आत्माओ ने जिन जिन स्थानो पर रह कर आत्मा का कल्याण किया है उन का निमित्त लेकर अपनी ग्रात्मा का कल्याण करने के श्माशय से तीर्थयात्राएँ की जाती है। मीज-शीक के खातिर किये जाने वाले प्रवासी की तीर्थयात्रा की नाम नही दिया जा सकता। जिम यात्रा का घ्येय आध्यात्मिक न होकर सांसारिक और पौद्गलिक ममता को वढाने का होता है वह प्रवास मात्र है तीर्थयात्रा नहीं । महा खारम्म और महा परिग्रह के कारण मृत कल कारखानो को देखने जाना, वाँबो को देखना और विविध नगरो के वाह्य दृष्टि से गिने जाने वाले दर्शनोय स्थानो को देखने की उत्कठा रखना तीर्थयात्रा के समय अनुचित है। मीज जीक क लिये तीर्थ स्थानो म जाना कमाने की जगह जाकर खो कर थाना है। तीर्थयात्रा के दौरान पौद्गलिक सुखशीलता का त्याग करना श्रावण्यक है। इस सुखशीलता और अनुकुलता की उच्छा से आत्मा श्रनन्तकाल से ससार में भ्रमण कर रहा है। प्रतएव तीर्थस्थानो मे सहनशीलता का प्रभ्याम करना और देह की ममता तथा पीद्गलिक राग को अत्व करने का यथाशक्य प्रयत्न करना चाहिये । तीर्थयात्रा के समय प्रात्मा नवीन उपलटिय को प्राप्त करे, इस यात की तरफ लक्ष्य देना जरूरी है। इसी दृष्टि से तीर्थयात्री के जिये छह 'रो' के नियम बताय गये हैं।

रसनेन्द्रिय की लम्बदना का कम बरने के जिये तथा भोजन की सदपट में अधिक समय न निकल जास उस हिस्ट ्रा में देश रामान समाम स्ट्रिंग है पुत्र मास्याप्त स्ट्रिंग स्ट्रिंग रें द्वार देश हैं दे विश्व स्ट्रिंग स्ट्र

The second of th

The second of th

प्रतिक्रमण, गुरु नदन, योग हो तो व्याख्यान श्रवण, नवकार मत्र का स्मरण, गुरु भवित, साविषक भवित, आदि को करते रहना सम्यवत्ववारी रूप चतुर्थ 'री' है।

तीर्ययात्रा के दौरान सिचत पदार्थों का त्याग करना चाहिये। इसमें करुणा का विस्तार होता है। इन्द्रियों पर अकुश रहता है और जीवन सर्यामत बनता है। यह सिचतहारी रूप पचम 'री' है।

तीर्थयात्रा के काल में ब्रह्मचारी रहना आवश्यक है। जीवन को सयमित, मर्यादित और विशुद्ध बनाने के लिये ब्रह्मचर्य का पालन करना अत्यत जरूरी है। भोगोपभोगों का स्याग आत्मिक अभ्युदय के लिये आवश्यक है। यह ब्रह्मचारी रूप छठी 'रो' है।

उक्त छह 'री' का यथावत् पालन करते हुए तीर्थयात्रा करनी चाहिये । पूर्वकाल में ग्रनेक राजाओ, मित्रयो और सेठ साहुकारो ने ऐमी तीर्थयाताएँ की है ।

प्रखर ताकिक, महाकिव, कत्याण मन्दिर स्तीय के रचिवता पूज्य आचार श्री मिद्रमेन दिवाकर सूरीश्वरजा म० के महुादेश से प्रतिबृह महाराजा विकमादित्य ने श्री शतु ।य गिरिराज का मथ निकाला था जिसमें १६९ स्वर्ण के, ५०० हाथी दात तथा चन्दन ने जिनालय थे। श्री मित्रमेन दिवाकर श्रादि पाप हता अवार्ष महाराज थ । चादह मुगुट- बद्ध राजा, मित्तर लाग थावको के पुरुष्य एक करोड दम

त्र त्र त्र क्षत्र कर्मा व्यक्त स्ट्रा १६ म्हरू १५ म्हरूर् क्षा हिल्ला है। इस स्ट्रा क्षत्र क्षत्र क्षत्र क्षत् इस क्षत्र क्

Big in was with a to the first of the first By MAN I CARE THE LITTLE TO MAN F I SEE MAN IN A MY the way of the property from the ment of عدره و موج و و المسمر دي الم عدد و مد عود \$P 11 开始的 如 如 如 如 如 如 如 之 之人 - 唯 一 如 人 是 以 不 如 。 The same of the high of the first a war we have at a las es a sur a sur sur sur en su my my a tap as a duy! so to the state of the second to the second the second THE PROPERTY OF A STANDARD OF THE PROPERTY OF A TO MAKE BOOK HOLD HAND BOOK BOOK BOOK BOOK y me a to grantalize 4- 4- 61- - 2 1 الله الله المواجد 4 1714 3 2 4 45 5 4 4

3 300 20 5 7

व्यक्ति सब पर्वों में एमा कर सक्ते में समर्थ नहीं है उसे वर्ष में एक वार तो स्नाब-महोत्सव करना ही चाहिय। ग्रन्थों में कहा गया है कि श्री पेथडशाह मबीरवर ने श्री रैवतागिरिजी (गिरनारजो) पर स्नाब-महोत्सव में छप्पन घडी प्रमाण स्वणं का व्यय कर इन्द्रमाला पहनी थी। तथा शबुजय से गिरनार तक का एक स्वर्ण-ध्यज चढाया था। उनके पुत्र झाझण न उतना ही वडा रेशामी वस्त्र का ध्वज चटाया था। जिनेश्वर देव के प्रति की गई भिन्ति मुक्ति की निस्सरणी है। जैसे जमें भिन्त में झाह्जाद बढता जाता है वैसे वैसे अनेक जावों को भिन्त में सम्मिलित होने का मन होता है। श्रतएव स्नाब-महोत्मव द्वारा प्रभुजों की भिन्त का आनन्द लेना चतुर्थ वार्षिक कर्तंब्य बताया गया है।

(+) देवद्रव्य की वृद्धि :

विवेक सम्बन्न श्रावक को अपने द्रव्य का सबुपयोग देवद्रव्य की वृद्धि के लिये करना चाहिये। मीनशौक या ऐश श्राराम में सम्पत्ति को खर्च करना सम्पत्ति का दुरुवयोग है तथा पापानुबंध का कारण होता है। अतएब पुण्य से मिली हुई लक्ष्मी का उपयोग पुण्यानुबंधी गुम कार्यों में ही करना चाहिये। देवद्रव्य की प्रतिवर्ष वृद्धि करने के लिये उपधान की माला, सद्य में तीर्थमाला, इन्द्रमाला प्रादि की बोली वोलकर धारण करनी चाहिये। एक बार श्री गिरनारजी तीर्थ पर श्रीताम्बर और दिगम्बर नव एक माथ यात्रा करने के तिये अधि थे। उस समय तीर्थं के स्वामित्न के विषय में लोनों में

स्वार कार्याक का कार्याक के स्वार कार्याक कार

(६) बड़ी प्रजाः—

प्रतिवर्षे श्रावक-श्राविकाओं को एक वडी पूजा पढानी ही चाहिये। जिन मदिरो मे महोत्मव पूर्वक पूजा कराना म्रद्राई महोत्सव आदि उत्सव म्रायोजित कर विशिष्ट प्रभु-भिक्त करना चाहिये। यह मुद्रालेख मदा याद रखना चाहियें कि ''जिनवर पूजा रे ते निज पूजना रें"। अर्थात् जिनेश्वर देव की पूजा करना अपनी आत्मा की पूजा करना है । आत्मा की पुजा करना अर्थात् आत्मकल्याण के द्वार को खोलना है। आर्द्रक्मार ने जिन-प्रतिमा के दर्जन से आत्म कल्याण का मगलमय द्वार खोल लिया था। ग्रतएव उल्लास पूर्वक वडी पूजा का आयोजन करना चाहिये। पूजा की विधि और पूजा ू की सामग्री सब विशुद्ध और उत्तम श्रेणी की होनी चाहिये। पूजा पढ़ाते समय यह ध्यान में रखने की बात है कि लोकिक दिष्टि का उत्तना महत्व नहीं है जितना जिनेस्चर देव के प्रति रे प्रीति और भगित का है। इसको ही प्रधानता देकर उत्तम पूजा की सामग्री से उल्लास पूर्वक वही पूजा पढ़ानी चाहिये। यह छठा वापिक कृत्य है ।

(७) रात्रि-जागरण

श्रपने हृदय में रही हुई प्रमु-मिंग की व्यान करने के लिये तथा वातावरण में भिंकत के प्रवाह को प्रवाहित करने के उद्देश्य से रात्रि—जागरणी का आयोजन होता है। सामारिक कार्यों से निमृत्ति लेकर उन निवृत्ति के श्राणों को प्रस्त की क्षाण and a series when the series and an east and the series are series as the series as th

in the same of the same of

किया मिल कर मोक्ष के कारण होते हैं। एकान्त किया अथवा एकान्त ज्ञान मोक्ष के निमित्त नहीं होते। ज्ञान और किया का समन्वय होना जरूरी है। किया की सफलता ज्ञान से है और ज्ञान की सार्थकता किया से है। अतएव मोक्षमार्ग की म्राराधना के लिये ज्ञान और किया का सामञ्जस्य आवश्यक है।

किसी भी मजिल पर पहुँचने के लिये रास्ता बताने वाले नेत्रों की आवश्यकता होते हैं ताकि सही रास्ते पर कण्डकों और गडहों से बचते हुए प्रगति की जा सके । साथ ही पैरों में चलने की शक्ति भी चाहिये ताकि निद्य्टि मार्म पर चलते चलते मजिल हासिल करली जाय।

इसी तरह मोक्ष की मिजल को प्राप्त करने के लिय ज्ञान, नेत्र की तरह मार्ग वताने वाला है और किया, पांव की तरह मिजल की तरफ प्रयाण कराने वाली है। ज्ञान के विना किया अन्धी है और किया के विना ज्ञान पगु है। यदि ये दोनों श्रलग अलग रहते हैं तो दोनों ही मिजल पर पहुँचने में असमर्थं होते हैं। यदि ये दोनों मिल जाते हैं तो दोनों हो मिजल पर पहुँच सकते हैं। लगडा व्यक्ति अधे के कधे पर बैठकर—अधे की सहायता से पार हो जाता है और अन्धा व्यक्ति लगडे के द्वारा मार्ग बताये जाने से मिजल पा लेता है। इस अध पगु न्याय के ममान ज्ञान और किया पिल कर मोक्ष की मिजल तक पहुँचा देते हैं। इसलिये विवेकवान श्रायकों की धार्मिक अनुष्ठान हप कियाओं के साथ श्रुतज्ञान की भिन्त और आरा-धना ग्रवश्यमेव करनी चाहिय। * , *46.6.8 } Annual the gard that the the the the the 大大大大学 化水 电子 医红红色属于皮肤性皮肤 故意之如故是是此 如此 a not their major that the the site of the 医水子 电压 在前子,她们不是人对自己的 经企业的证据 第一个证明 数 医乳状腺素素 医皮肤 医水红素 医水红红 克 相等 And Both to the But have been been been to the both to the both to the 五次大学 李 江南 医动物 医 即代美国 教育 你是是明明 经净货 好吃

क ब्रुवर्ग जी कमती कारत प्रदेश को बाह्य के लिए हैं है

Market was a series of a walk of fine or with the 会でもした インサガチュン は「マンかんな はる」ならい m ----- よう 者、 有主 から 大 変な 生す ないななれず かって ま る かまれ れて、お a the second sec 我也不知是不在我一条人之人,会不是人之不然 人口我们 gen y gend a se agent to be good to be

Entitle to the second of the s a control of the second of the The second of th मय गुफा में अनन्तकाल तक इधर—उधर रखड़ने के सिवाय और कोई चारा नहीं हैं। ज्ञान का प्रकाश ही मसार—कन्दरा मे पार पहुँचाने वाला हैं। ज्ञान के ग्रमाव में श्रेयस् और ग्रश्रेयस्, धर्म और ग्रयमं, पुण्य और पाप, कर्त्तव्य और श्रकर्त्तव्य जीव और अजीव, तत्त्व और अतत्त्व का विवेक ही समव नहीं हैं तो वेचारा अज्ञानी जीव क्या साधना कर सकेगा? साधना के लिये ज्ञान का होना जरूरी है। इमलिये कहा गया है—

पढमं नाणं तश्रो दया एवं चिद्वई सव्व संजए। श्रनाणी किं काही किं वा गाहीउ सेय पावगं।।

—दशवेकालिक सूत्र

अर्थात्-मुमुक्षु को पहले तत्त्व-अतत्त्व का जान करना चाहिये। इसके वाद ही सयम का आचरण हो सकता है। सयमी जावन का मूल ग्राधार ज्ञान है। अज्ञानी आत्मा श्रेय और अश्रेय को कैमे पहिचानेगा? ग्रतिएव ज्ञान को मोक्ष का प्रथम मोपान कहा जा सकता है। लोक में रत्न, दापक, चन्द्रमा और सूर्य प्रकाशमान तत्त्व माने जाते हैं परन्त, ज्ञान सबसे अधिक उत्कृष्ट प्रकाशमान तत्त्व माने जाते हैं परन्त, का प्रकाश तो मीमित क्षेत्र में और मीमिन मात्रा मे होता है परन्तु ज्ञान का प्रकाश लोकालोक व्यापी और अनन्त होता है। मम्यम् ज्ञान वहाँ है, जो मोक्ष की माधना मे उपयुक्त है जा ममार माधक हो वह मिन्याज्ञान एव ग्रान है।

A THE STREET OF THE STREET WAS A TOTAL WAS AND THE STREET OF THE STREET

पचमी तप, बीम स्थानक तप, रोहिणी तप आदि ज्ञान-दर्शन चारित्र के आराधन भूत विविध तप की समाप्ति के उपलक्ष मे उद्यापन करना चाहियं। यह नीवा वापिक कर्त्तव्य है। कम से कम वर्ष मे एक उद्यापन तो अवस्य करना ही चाहिये।

उद्यापन करने से तप के फल में वृद्धि होती है। कहा गया है कि-

'तप-फल वाबे रे उजमणा थकी, जिम जल पक्रजनाल'' जैसे पानी से कमल-नारा की वृद्धि होती है वैसे हो उजमणा से तप के फल की वृद्धि होती है।

तप का उद्यापन करना मानो तप रूप मन्दिर पर कलश चढ़ाना है, अक्षत पात्र पर फल रखना है और भोजन कराने के पश्चात् ताम्बूल अपंण करने के समान है। तप के उद्यापन से तपस्वियों का बहुमान होता है तथा सब में तप के प्रति सद्भाव प्रकट होता है। मत्री श्री पेयटकुमार ने नवकार मत्र के तप का उद्यापन किया था। उसमें सोना, मिण, मोती, रुपये, पकवान, फल, रेशमी ध्वजाएँ आदि प्रत्येक वस्तु ६८-६८ रख कर चमत्कारिक उद्यापन किया था। इस प्रकार यथाशनित तप का उद्यापन करना नौवा वापिक कर्त्तं व्य कहा गया है।

(१०) शासन प्रभावना :

जैन-शासन की महिमा को बढाने वाले कार्यों को करना शासन-प्रभावना है। श्री गुरु महाराज के प्रवेश-महोत्सव

 का रवागत-समारोह ठाठ-बाठ से आयोजित करे। पूज्य, पूजां की इच्छा नहीं करता और पूजक पूज्य की पूजा किय विना नहीं रहता, यह श्रेष्ठ मर्यादा है। उम मर्यादा का पालन करना चाहिये। व्यवहार भाषा में साधु-प्रतिमा बहन कर ले तब यकायक कहा गया है कि "साधु मम्पूर्ण प्रतिमा बहन करले तब यकायक नगर में प्रवेश न करे परन्तु समीप में आकर किसी साधु या श्रावक को अपना दर्शन दे या मदेशा पहुँचावे जिसमें नगर का राजा या मत्री अयवा ग्राम का ग्राधिकारी महोत्मव पूर्वक प्रवेश करावे। उसके अभाव में श्रावक वर्ग और मध प्रवेशोतमव करावे।

शामन की प्रमावना के निमित्त वरघोडा, प्रवेश महोत्सव, कत्याण महोत्सव, उद्यापन, प्रतिष्ठा महोत्सव, साधिमक वात्सत्य उपधान तप, पद यात्रिक सब ग्रादि की आयोजना करते रहना चाहिये। ये नव कार्य अनेक जीधो को धर्ममार्ग के प्रति आकिपत करने वाले और बोधि-बोज की प्राप्ति के कारण होते हैं। श्रतएव विविध प्रकार के आयोजनो द्वारा जैन शामन की प्रमावना करना चाहिये। यह दमगा वार्षिक कृत्य है।

(११) आलोचना-विशोधि :

आतमा के कत्याण के लिये आलोचना का बहुन अधिक महत्त्व होता है। जिस प्रकार मेता कपडा सावृत और पानी से मृद्ध होता है उसी प्रकार किये गये पानों की णृद्धि आली- de geleigt gan gin ille mallenist in mitte mit auf auf

大一學人民不好事 新 (安安新女 子 好後 女有女孩 * ** * مر عدد بديد لويد د د د د د بريد يو يك مرفع جدد عربي مكرومة ووويد 人名西日光學 婚 就不是你 经支持事故 多达维多 內土 養殖 Soul I to suit I to see to by the To I'm we have for the of the of the of 如本本有并不 在文章 m 天文 教育企业 Sale 青古鄉 教者 如 是 196 张星 ユーニ かくいいれいか れいみこ 如本ア 木 おりかれ かな かみん はます The way is a second of the sec The thirty to the state of the same of the Rod (A) The contract of the second of the s · Fahren was a said of the sai The second of the second of the second of the second of

the state of the s The second secon The second of th at the specific way is

रीति से किया गया है उसे उसी रूप में सही सही गरु महाराज के समक्ष प्रकट कर देना और वे उसकी शुद्धि के लिये जी प्रायश्चित्त दें उसे अगीकार करना, यह बात हृदय की सरलता होने पर ही हो सकती है। सामान्य तौर पर तो लोग अपने अपराध को स्वीकार ही नहीं करते हैं। अपराध को छिपाने का प्रयत्न करते हैं। प्रकट हो जाने पर भी "मैंने नहीं किया" कहने की धृष्टता करते हैं। ऐसे व्यक्ति ग्रपनी शृद्धि नहीं कर सकते। जिस प्रकार शरीर के किसी भाग मे काटा लग जाने पर जब तक काटा अन्दर बना रहता है तब तक चैन नहीं पडती। काटा निकल जाने पर ही शान्ति मालूम होती है। उसी तरह पापकर्म का शत्य जव तक अन्दर वना रहता है तब तक विशुद्धि नहीं हो सकती। पाप कमं के शल्य की आलोचना के द्वारा निकाल फेंकने पर हो आत्मा की विशृद्धि हो सकती है और शान्ति की वास्तविक अनुमूति भी तभी हो सकती है। इसीलिये सच्ची गान्ति और आत्म-गुद्धि के लिये पापकर्म की आलोचना शुद्ध और सरलभाव मे अवस्य ही कर लेना चाहिये।

आलोचना या पश्चात्ताय ऐसा अमृत का अरना है जिसमे श्रवगाहन करने से भयकर पाप का ताप झान्त हो जाता है, मन की मिलनता और मैंग धुल जाना है, हृदय स्वच्छ बन जाता है और आत्मा परम झान्ति का अनुमय करने तम जाता है। इस विषय पर निम्न उदाहरण मननीय है-

झाझरिया मुनिवर बाजार में से निकत रहे हैं। राजा-

रण सर्वेश्व कार्यो है। कार्या सुनिवदा की पूर्व उपजन्म की में इन्हें के काक्षा की बुध बाल की रायण मही है हे सीर्ट मा में मुक्ति व बेनाई के, की रहारा के काइना की होते. भी आसी र र तुंच्या तत्र ३ सह वित्त क्षत्र भाषा के सत्य की हरा गाँ प्रतिकार हैं, र र्वेक्ष्मर केर कीर काली अवेश र आका आदित साधान क रिन्द्र रिक्टम× मत्त्र सूर्वे तत्त्व क्षत्ति चक्षत्त क्षणानुस्तर के कृतिमक स्वयंती Septimized the first section which was a few the section ع الله (المعد في المؤاملة المنظمة المناسلة المنا and a find and thereing to I find I make any color me built 机水管 医避净 工作 翻翻 确定在品版 船,都就是盖 医破结 经保险 严 \$P\$ 48 点 有多色 集 5 號 里 野类性 問 \$P\$ 乾 春曜 斯門 敬奉罪 · 在在内域中人物生物 到100 的情形生活 第一十四 的世史地 好好 伊克 1) Estable there is suppleating the se to the sail said 医性食物性 養 医乳蛋素 化黄色 我 李 西山湖岸 化五角红色 野 化对方 別 and the first of t 化对点 矿油花块 五年 一 写片 护克 对音音 的 係 电放 费

 का पार नहीं रहा। बिना विचारे, मुनि हत्या का घोर पाप कर डालने के कारण अन्त. करण में तीव वेचैनी है, आँ को में आँमू लाकर मुनिराज के मृत देह से क्षमायाचना करता है। पण्चात्ताप की अग्नि में घोर पाप को भस्म कर डालता है। पण्चात्ताप के करने में पाप मैल को घो डालता है और राजा भी केवल ज्ञानी वन जाता है। यह है महिमा परचात्तार और आलोचना की। अनेक महापापी भी आलोचना के प्रताप से तिर गये हैं। इमलिये आवक का यह कर्तव्य है कि वह वर्ष में एक वार अपने पापों की आलोचना पू गुरु महाराज के समक्ष अवश्यमेव करके आत्मा को शुद्ध करले। यह ग्यारहवा वार्षिक सत्कृत्य है।

इस प्रकार जिनेच्यर देव के मार्ग क रिसक जीव पाच सहक्तंच्य और एकादय वाणिक कृत्यों के आराधन द्वारा अपने जीवन को धन्य वनाते हैं। आत्म-परिणित को निर्मल बनाये विना जीवन की सफनता नहीं हो। सकती। प्रमाद के वण में पड़ा हुआ प्राणी पाप में पड़ता है और मुख के लिये पाप करता है। परन्तु यह उनकी भ्रमणा मात्र है। पापक में में दुख की परम्मग ही बहती है। सामारिक मुख की अभिनापा आत्मा को गतत मार्ग पर ते जातो है। सासारिक मुखों को अभिनापा से धामिक अपुट्टान करना मानो अमृत सरावर के जिनारे आकर वृत्यत रह जाता है या कोचड़ को चूयना मात्र है। धामिक अन्ता का आगधन मोक्ष म्लों फन के तिये होना चाहिये।

大大大大大大大大大大大大大大大大大大大大大大大大大大大大大 we are a first in the section to feet are wife in security. 不是不不是歌曲 医香香香香 医耳下 東 医皮黄素 獨有 被力 海洋 医红斑点 * .





